जातकचंद्रिका ।

भाषाटीकासहिता ।

[illegible]

श्रीः ।

श्रीयुतजयदेवकविप्रणीता

जातकचन्द्रिका ।

तिमलीग्रामनिवासिना पंडित-केशवानन्दशर्मणा
कृतया सुबोधिनीभाषाटीकया समलंकृता.

जिसको
गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
अध्यक्ष "लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" छापेखानेमें
मैनेजर पं. शिवदुलारे वाजपेयीने मालिकके लिये
छापकर प्रसिद्ध किया ।

संवत् १९८१, शके १८४६.

कल्याण-मुंबई.

भूमिका.

यह जातकचन्द्रिका ग्रन्थ श्रीनगरनिवासी श्रीयुत ज्योतिर्विज्जयदेव बहुगुणाजीने मय यवनादि पूर्वाचार्योंके विरचित शास्त्रोंकी उपच्छाया लेकर नवीन कवितासे प्रकाश किया इसमें तबसे लेकर अबतक हमारे जिल्ला गढवाल व कूर्माचलमें बालकोंका अभ्यास चला आता है यद्यपि इसमें पदार्थ सरल हैं तथापि विना गुरुके अल्पसत्त्ववाले विद्यार्थी परिव्यक्त करके सब श्लोकोंका भाव नहीं समझ सकते अतएव बालोंके सुखबोधके लिये व विद्वज्जनोंके प्रमोदके वास्ते मुझ केशवानन्दने भाषानुबद्ध किया । प्रार्थना है महाशय ! मत्सरताको छोडकर मुझसे मनुष्यधर्मानुसार जो भूल हुई हो उसको क्षमा कर शुद्ध करें ।

वाग्देवतां नमस्कृत्य मणिद्वीपनिवासिनीम् ॥
व्याख्यायते नरगिरा मया जातकचन्द्रिका ॥ १ ॥

भाषाकार मैं मङ्गलपूर्वक ग्रन्थसमाप्त्यर्थ सरस्वतीको प्रणाम करके स्वकृतिको प्रकाश करता हूं । मणिद्वीपमें रहनेवाली सरस्वतीको नमस्कार कर मैं केशवानन्द करके जातकचन्द्रिकाकी लौकिकभाषासे व्याख्या की जाती है ॥ १ ॥



पुस्तक मिलनेका ठिकाना-गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
" लक्ष्मीवेंकटेश्वर " छापाखाना, कल्याण.

श्रीः ।

अथ जातकचन्द्रिकास्थविषयानुक्रमणिका.

इति जातकचन्द्रिकानुक्रमणिका समाप्ता ।

॥ लक्ष्मीवेंकटेश्वराय नमः ॥

अथ

भाषाटीकासहिता

जातकचन्द्रिका ।

जगत्सर्गमध्यावसानात्मका यं स्वयंभूस्वभूभूतपाश्चानमन्ति ॥
क्रियासाक्षिणं स्वीयवाचां प्रसिद्धयै चिरं नौमितं चित्रभं चित्रभानुम् ॥ १ ॥

आचार्य प्रथम मंगलाचरण भुजङ्गप्रयातछंदसे करते हैं । संसारकी रचना, पालना और नाश करनेके स्वभाववाले ब्रह्मा विष्णु महेश जिसको प्रणाम करते हैं । मैं जयदेव अपनी वाणियोंकी सिद्धिके वास्ते सदसत्क्रियाओंके साक्षी विचित्र किरणोंवाले उस सूर्यको नमस्कार करता हूं ॥ १ ॥

यतः समस्ते जनिरूपतंत्रे बाहुल्यतो बालमतिः प्रयाति ॥
जाडचं ततोऽहं सुखबोधवृत्तैर्वक्ष्ये शुभां जातकचन्द्रिकां हि ॥ २ ॥

उपजातिवृत्तसे स्वप्रयोजन कहते हैं । जिससे लघुबुद्धि सम्पूर्ण जन्म-रूप तंत्रमें प्रायः मूर्खत्वको पहुँचती है तिससे मैं सुखसे है ज्ञान जिन्होंसे ऐसे वृत्तोंकरके मंगलदायक जातकचन्द्रिकाको निश्चय करके कहता हूं ॥ २ ॥

मेषः क्रियोऽजो वृषभश्च तावुरिर्नृयुग्मराशिर्जितुमाह्वयः स्मृतः ॥
कर्कस्तु कीटो हरिलेयसंज्ञको पाथोनकन्ये गदिते मुनीश्वरैः ॥ ३ ॥

उपजाति० ॥ मेषादि राशिनाम । मेष, क्रिय, अज तीन नाम मेषके । वृषभ, तावुरि दो नाम वृषके । नृयुग्म, जितु दो नाम मिथुनके । कर्क, कीट दो नाम कर्कके । हरि, लेय दो नाम सिंहके । पाथोन, कन्या दो नाम कन्याके मुनीश्वरोंने कहे हैं ॥ ३ ॥

तुला धटो जूकसमाभिकश्च सरीसृपो वृश्चिककौर्पिसंज्ञो ॥
हयो धनुस्तौक्षिकनामधेयो धन्वीति संज्ञा गदिता ग्रहज्ञैः ॥ ४ ॥

उपजाति० ॥ तुला धट जूक तीन नाम तुलाके । सरीसृप वृश्चिक कौर्पि तीन नाम वृश्चिकके । हय धनु तौक्षिक धन्वी चार नाम धनुके गणकोंने कहे हैं ४ ॥

आको केरो नक्रसंज्ञो मृगश्च हृद्रोगः स्यात्कुम्भराशेश्च संज्ञा ॥
अन्त्या संज्ञा मीनराशेर्वदंति सर्वत्रैवं राशिभेदप्रवृत्तिः ॥ ५ ॥

शालिनीवृ० ॥ आकु केर नक्र मृग चार नाम मकरके । हृद्रोग कुम्भ राशिकी संज्ञा है । अन्त्य मीन राशिकी संज्ञा है । इस तरह सर्वत्र राशिभेदकी प्रवृत्ति है ॥ ५ ॥

शिरो मुखं बाहुयुगं च वक्षः क्रोडः कटिर्बस्ति तथैव गुह्यम् ॥
ऊरू तथा जानुयुगं च जंघे पादाविति स्युः क्रियतः क्रमेण ॥ ६ ॥

उपजातिवृ० ॥ इस तरह मेषादि राशियोंके क्रमसे कालपुरुषके अंग हैं । मेष शिर, वृष मुख, मिथुन वक्षस्थल, कर्क हृदय, सिंह उदर, कन्या कटि, तुला नाभीके नीचे, वृश्चिक लिंग, धनु ऊरू, मकर दोनों जाँघें, कुम्भ घुटना, मीन चरण । प्रयोजन यह है कि जिस अंगमें पापग्रह, शत्रुगृहका, नीच राशिका ग्रह हो उस अंगमें व्याधि विस्फोट विश्वा प्रभृति चिह्न होवें, जिस अंगमें शुभ ग्रह उच्चस्वगृह, मित्रक्षेत्री हो पुरुषके उस अंगमें तिल लाखणलक्ष्यादि गर्भहीसे होवें । तथाच खोटा ग्रह जिस अंगमें हो वह अपनी दशान्तर्दशामें उस अंगपर अपनी पित्तादि धातुसे दुःख करता है ॥ ६ ॥

रक्तः श्वेतो हारितो पाटलश्च पाण्डुश्चित्रः श्यामलाभः पिशंगः ॥
पीताभः स्यात्कर्बुरो बभ्रुकश्च कृष्णश्चेति द्वादशर्क्षाणि मेषात् ॥ ७ ॥

शालिनीवृ० ॥ मेष रक्त, वृष शुभ्र, मिथुन हरित, कर्क श्वेतरक्त मिश्रित, सिंह ईषत् श्वेत, कन्या नानावर्ण, तुला श्याम, वृश्चिक पीत, धनु कपिल, मकर कर्बुर, कुम्भ कपिल, मीन श्याम इस तरह मेषसे द्वादश राशियोंके वर्ण हैं । तात्काललग्न बलिष्ठ हो तो उसका, नहीं तो नवांशक राशिका जो वर्ण हो वह मुष्टिकी वा खोई गई वस्तुका और चोर प्रभृतिका अंग स्वरूप कहना ॥ ७ ॥

" ह्रस्वं गोजघटा मिथुनधनुःकर्कीमृगमुखाश्च समाः ॥
वृश्चिककन्यामृगपतिवणिजा दीर्घाः समाख्याताः ॥ १ ॥

उपगीतिवृ० ॥ ग्रन्थान्तरसे राशिमान कहते हैं वृष, मेष, कुम्भ यह राशि

वामन हैं अर्थात् छोटे शरीरके हैं। मिथुन, धनु, कर्क, मकर यह न बहुत छोटे न बहुत दीर्घ अर्थात् मध्यम शरीरके हैं। वृश्चिक, कन्या, सिंह, तुला, मीनभी ये राशि दीर्घ शरीरके हैं, तत्काल लग्नाद्यनुमानसे चोरादि मान जानना ॥ १ ॥

मेषकर्किंतुलानक्रा धातुराशय ईरिताः ॥
कुंभसिंहालिवृषभा ब्रुवते मूलराशयः ॥
धनुर्मीननृयुक्कन्या राशयो जीवसंज्ञकाः ॥ २ ॥

अनुष्टुप्०॥ अथ मेषादि राशियोंके धात्वादि वर्णन। मेष, कर्क, तुला, मकर ये राशि धातुसंज्ञक हैं। कुम्भ, सिंह, वृश्चिक, वृष मूल हैं। धनु, मीन, मिथुन, कन्या जीव हैं। पृच्छककी चिन्ता चोरादिहरण द्रव्य धातु मूल जीव विचारके कहना ॥ २ ॥

अजगोयुगसिंहतुलाधनुषां ध्वनिरर्द्धरवामृगकन्यघटाः ॥
अलिकर्कटकानिमिषा विरवा बहुसंगबहुप्रसवाः स्युरिमे ॥ ३ ॥

तोटकवृ०॥ राशियोंका शब्दवर्णन। मेष, वृष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु ये लग्न दीर्घ शब्द करते हैं। मृग, कन्या, कुंभ ये लग्न आधा शब्द करते हैं। वृश्चिक, कर्क, मीन ये अवाच्य हैं। जिस लग्नमें बालक होवे वह लग्न शीघ्र शब्द करनेवाला हो तो बालक जन्मक्षणमें रोदन करता है, वह लग्न अर्ध शब्द करनेवाला हो तो जन्मसमयसे कुछ देरमें रोदन करता है। वह लग्न अवाच्य होवे तो बहुत देरीमें बालक रोदन करता है इस तरह चोरकी वाणीका विचार करना, बहुत बोलनेवाला वा सूक्ष्म बोलनेवाला है। शीघ्र शब्दवाले लग्नोंमें बालक हो तो मातृभाषाको थोडे दिनोंमें बोलने लगता है, अवाच्य लग्नोंमें हो तो बहु दिनोंसे जबान पकडे ॥ ३ ॥

कौर्पिकुलीरघटमीनमृगाः प्रजाढ्या मेषो धटोऽपि वृ-
षभोऽल्पप्रसूतयोऽमी ॥ कन्या हरिर्मिथुनचापधरो च
वंध्या पूर्वापरार्द्धमलितौलिगतं च दग्धम् ॥ ४ ॥

वसंततिलका० ॥ राशियोंका परिवारवर्णन । वृश्चिक, कर्क, कुम्भ, मीन, मकर परिवारवाले हैं, मेष, तुला, वृष थोडे परिवारवाले हैं, कन्या, सिंह, मिथुन, धनु ये वन्ध्या हैं अर्थात् इनका परिवार नहीं है। वृश्चिकका पूर्वार्ध १५ अंश तुलाका उत्तरार्ध १५ से ३० पर्यन्त दग्ध संज्ञा है अर्थात् बीजहीन है, संज्ञान-के वास्ते और उपसूतिकाका परिवार तिसी तरह सूतिकागृहमें स्त्रियोंका समुदाय विचारना ॥ ४ ॥"

क्रूरः शुभः पुंवनिताचरस्थिरद्विदेहसंज्ञाः क्रमशः क्रियादितः ॥
प्राच्यादिनाथाः क्रियतः क्रमेण तु भवंति ते त्रिः परिवर्तनेन वै॥८॥

उपजातिवृ०॥ राशिसंज्ञान्तर । मेषादिक्रमसे १ । ३ । ५ । ७ । ९ । ११ ये राशि क्रूर हैं याने उग्र स्वभावके हैं, इन्होंको विषम, ओज, अयुजिभी कहते हैं, पुरुषराशिभी येही हैं २ । ४ । ६ । ८ । १० । १२ ये राशि शुभ अर्थात् सौम्य स्वभावके हैं इन्होंको सम, युजि, मध्यभी कहते हैं और यह स्त्रीसंज्ञाके हैं । प्रसूति विषम लग्नमें हो तो विकटभूमि, सम लग्नोंसे दुरस्तभूमि होवे, तिसी तरह गर्भ प्रश्नलग्न पुरुषसंज्ञक हो तो पुमान्, स्त्रीसंज्ञक हो तो स्त्री गर्भमें होवे । चोरीकी वस्तु पुरुष वा वनिताके पास है करके कहना ।१।४।७। १० ये राशि चर हैं, चल और चलनभी इनको कहते हैं। २ । ५ । ८।११ स्थिर अग अगच्छ संज्ञा है। ३ । ६ । ९ । १२ ये राशि द्विदेह द्व्यङ्ग द्विस्व-भाव हैं जन्मका वा प्रश्नका लग्न चर हो तो सूतिका शीघ्र प्रसव देती है चोर वा प्रवासी चलता होवे, स्थिर लग्नसे सूतिकागृहान्तर्गत देरसे उपस्थित होके प्रसव होवे, चोर वा प्रवासी निश्चल होवे, द्विस्वभावसे प्रसूति देहलीके समीप होवे, चोर प्रवासी आधे रास्ते होवे । मेषादि प्राच्यादिनाथ त्रिरावर्तिसे होते हैं १ । ५ । ९ ये राशि पूर्वके, २ । ६ । १० राशि दक्षिणके, ३ । ७ । ११ पश्चिमके, ४ । ८ । १२ उत्तरके स्वामी हैं। जन्मलग्न प्रश्नलग्नकी जो दिशा हो उस दिशामें शिर द्वार गृह चोरगमन ग्रामादि समझना ॥ ८ ॥

"चत्वारः सह पंचमैः सनवमैर्मेषादयोग्निक्षितिर्वायुर्वारि च नृस्त्रियो दिननिशे मित्रद्विषोश्च क्रमात् ॥ स्युस्त्रैराशिकसंज्ञया-द्रिकुवनापश्चेन्द्रदिक्तो दिशो रूक्षणोष्णौ हिमरूक्षकोष्णसुरुचो स्निग्धा दृकाणाश्च ते ॥ ९ ॥

शार्दूलविक्री० ॥ मेष, सिंह, धनुका वास अग्निमें; वृष, कन्या, मकरका वास भूमिमें; मिथुन, तुला, कुंभका वास वायुमें; कर्क, वृश्चिक, मीनका वास जलमें है। इनके येही तत्त्व हैं इनसे चोर वस्तु प्रभृतिका विचार और दशान्तर्दशामें ग्रह जिस राशिका हो उसके तत्त्वसे सुख वा दुःख कहना। मेषादि पुंवनिता पूर्वोक्त है और द्विपदराशि दिनमें, चतुष्पदराशि रात्रिमें, कीटराशि सन्ध्यासमय बली होते हैं, इनकी संज्ञा आगे लिखी हैं। मेष, सिंह, धनु, मिथुन, तुला, कुम्भ ये लग्न मित्रपक्षके हैं; वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर, मीन ये शत्रुपक्षके हैं; जन्मप्रश्नादि लग्नसे प्रसूतिका मित्र मातुलपक्ष गृह वा शत्रुपक्ष गृह होवे, चोरीकी वस्तु मित्रपक्ष वा शत्रुपक्ष गई हो वा मित्र शत्रुपक्षी चोरका विचार करना। मेष, सिंह धनुराशि पर्वतचारी हैं; वृष, कन्या, मकर भूमिचारी हैं; मिथुन, तुला, कुंभ वनचर हैं; कर्क, वृश्चिक, मीन जलचर हैं, नष्टचोरादि वस्तुका सूतिकाका स्थान बताना, नैर्याणमें मृत्युकारक ग्रह जिस राशिमें हो वह वनवासी हो तो वनमें, पर्वतचारी हो तो पर्वतमें, भूमिचारी हो तो स्थलमें मृत्यु करता है, राशिका पित्तादि जो तत्त्व हो उससे रोग उत्पन्न होके मृत्यु होता है, मेष, सिंह, धनु, मिथुन, तुला, कुंभ ये राशि रूक्ष और पित्तरोगी हैं, वृष, कन्या, मकर, कर्क, वृश्चिक, मन ये रूक्ष नहीं, शीतरोगी हैं; मेष, सिंह, धनु, मिथुन, तुला, कुंभ ये लग्न तेज प्रकृतिके गरमवस्तु प्रियवाले हैं; वृष, कन्या, मकर, कर्क, वृश्चिक, मीन ये शीतवस्तु प्रिय हैं, प्रश्नजन्मादि लग्नसे मनुष्यकी रुचि बताना, शुभ दशान्तर्दशामें ग्रह जिस राशिमें हो उसकी रुचि प्रिय मानता है, अशुभदशामें उस रुचिसे दुःख पैदा होता है। शिर मुख बाहु इत्यादि जो चिह्न कहे हैं वे विशेष द्रेष्काण कुण्डलीसे सत्य होते हैं ॥ ९॥"

मेषादीशा भौमशुक्रज्ञचन्द्राः सूर्यः सौम्यः शुक्रभौमौ गुरुश्च ॥
पंगुः सौरिर्देवपूज्यः क्रमात्स्युर्यत्क्षेत्रं स्यात्तस्य वर्गः स एव ॥ ९ ॥

शालिनीवृ० ॥ मेषादि राशियोंके स्वामी चक्रमें लिखते हैं इनकी राशियोंके स्ववर्गके होते हैं इनमें ग्रह २ चरण ३० बल पाते हैं ॥ ९ ॥

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	राशि हैं.
मं.	शु.	बु.	चं.	सू.	बु.	शु.	मं.	बृ.	श.	श.	बृ.	ग्रह हैं

मेषे रविर्वृषे चन्द्रो मृगे भौमः स्त्रियां बुधः ॥
कर्के गुरुर्झषे शुक्रो घटे सौरिः स्वतुंगगः ॥ १० ॥
दिग्भिर्गुणैर्नागयमैः शराब्जैः प्राणैश्च ताराप्रमितैर्नखांशैः ॥
परोच्चगाः सूर्यमुखाः क्रमेण नीचाः स्वतुंगात्स्वभसंस्थिताश्चेत् ११ ॥

अनुष्टुप् उपजातिछन्दसे राशि उच्च कहते हैं ॥ इन राशियोंके इतने अंशको तात्काल स्पष्टमें पाकरके ग्रह परमोच ४ चरण ६० बल पाते हैं अपने उच्च राशिसे सप्तमराशिमें ग्रह परम नीच होते हैं नीचके ग्रह बलहीन होते हैं ॥ १० ॥ ११ ॥

र.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्रहः
०	१	९	५	३	११	६	राशि उच्च हैं.
१०	३	२८	१५	५	२७	२०	अंश
मे.	वृ.	मि.	कुं.	क.	मी	तु	

र.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श	ग्रहाः
६	७	३	११	९	५	०	राशिनीच हैं.
१०	३०	१८	१५	५	२७	२०	अंश
तु.	वृ.	क.	म.	म	क.	मे.	

सूर्यस्य सिंहो वृषभो विधोश्च क्रियः कुजस्य प्रमदा बुधस्य ॥
धनुर्गुरोः स्याद्घटभृद्भृगोश्च कुंभः शनेः स्याद्भवनं त्रिकोणम् ॥ १२

उपजाति० ॥ इन राशियोंके ये ग्रह मूल त्रिकोणके होते हैं यह ३ चरण ४५ बल पाते हैं ॥ १२ ॥

र.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्रहाः
५	२	१	६	९	७	१०	राशित्रिकोण हैं.

विषमेऽर्कविधोर्होरे समें विधुविभावसोः ॥
स्वसप्तसुतधर्मेशा द्रेष्काणास्ते प्रकीर्तिताः ॥ १३ ॥

अनुष्टुप्० ॥ विषमराशि १ । ३ । ५ । ७ । ९ । ११ पंदरह अंश भीतर हो तो सूर्यकी अर्थात् सिंहराशिकी होरा होती है । सोलह अंशसे तीस-तक चन्द्रमाकी अर्थात् कर्ककी होरा होती है । समराशि २ । ४ । ६ । ८ । १० । १२ पंदरह अंश भीतर हो तो चन्द्रमाकी अर्थात् कर्ककी होरा होती है । सोलह अंश उपरान्त ३० अंशतक हो तो सूर्यकी अर्थात् सिंहकी होरा होती है आगे चक्रमेंभी स्पष्ट लिखते हैं ॥

होराचक्रम् ।

० मे.	१ वृ.	२ मि.	३ क.	४ सिं	५ क.	६ तु.	७ वृ.	८ ध.	९ म.	१० कु.	११ मी.	स्पष्टराशि.	
५	४	५	४	५	४	५	४	५	४	५	४	१५ ० ०	अंशभीतर.
४	५	४	५	४	५	४	५	४	५	४	५	३० ० ०	अंशभीतर.

द्रेष्काण कहते हैं । राशिके १० अंशतक स्पष्ट हो तो उसीका द्रेष्काण होता है ११ अंशसे बीस अंशतक स्पष्ट हो तो उस राशिसे पंचमराशिका द्रेष्काण होता है २१ अंशसे ३० अंशतक स्पष्ट हो तो उस राशिसे नवम राशिका द्रेष्काण होता है चक्रमें स्पष्टतर लिखा है ॥ १२ ॥

द्रेष्काणचक्रम् ।

० मे.	१ वृ.	२ मि.	३ क.	४ सिं.	५ क.	६ तु.	७ वृ.	८ ध.	९ म.	१० कुं.	११ मी.	स्पष्टराशि.	
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१० ० ०	अंशभीतर.
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	२० ० ०	अंशभीतर.
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	३० ० ०	अंशभीतर.

स्वगृहसप्तभागेभ्यः सप्तांशेशा बुधैः स्मृताः ॥
ओजे स्वगेहतो गण्याः समे सप्तमराशितः ॥ १४ ॥

अनुष्टुप्० ॥ सप्तांशको राशिके ७ भाग करके ७ कोष्ठकका चक्र बनाना। विषमराशि हो तो उसी राशिके सप्तभाग चक्रमें स्पष्टके अंशतक गिने. जो राशि आवे वही सप्तांश होता है सम राशिका करना हो तो उस राशिके सप्तम राशिसे चक्रमें स्पष्टके अंशकी कोठीतक गिने। जैसा मेषराशि १० अंश २० कला स्पष्ट हो तो चक्रमें तीसरी कोठी सप्तांश मिला मेषसे गिनके मिथुन सप्तांश हुआ और समराशि जैसा वृषराशि १० अंश २० कला स्पष्ट हो तो वृषसे सप्तमराशि वृश्चिक हुआ वृश्चिकसे तीन कोष्ठतक गिना तो मकरका सप्तांश होता है एवं सब राशियोंका समझना ॥ १४ ॥

सप्तांशचक्रम् ।

० मे.	१ वृ.	२ मि.	३ क.	४ सिं.	५ क.	६ तु.	७ वृ.	८ ध.	९ म.	१० कुं.	११ मी.	राशिस्पष्ट.	
१	८	३	१०	५	१२	७	२	९	४	११	६	४ १७	अंशभीतर.
२	९	४	११	६	१	८	३	१०	५	१२	७	८ ३४	अंशभीतर.
३	१०	५	१२	७	२	९	४	११	६	१	८	१२ ५१	अंशभीतर.
४	११	६	१	८	३	१०	५	१२	७	२	९	१७ ८	अंशभीतर.
५	१२	७	२	९	४	११	६	१	८	३	१०	२१ २५	अंशभीतर.
६	१	८	३	१०	५	१२	७	२	९	४	११	२५ ४३	अंशभीतर.
७	२	९	४	११	६	१	८	३	१०	५	१२	३० ०	अंशभीतर.

मेषादीनां चतुर्णां तु सकोणानां नवांशपाः ॥
मेषाद्यो मृगाद्याश्च तुलाद्याः कर्कटाद्यः ॥ १५ ॥

अनुष्टुप्० ॥ नवमांशको राशिका नव भाग करके नव कोष्ठ चक्र बनाना

मेषादि चरराशि अर्थात् १ । ५ । ९ राशिके नवांशको चक्रमें मेषसे गणना, २ । ६ । १० नवांश मकरसे गणना, मिथुन तुला कुंभका नवांश तुलासे गणना, कर्क वृश्चिक मीनका नवांश कर्कसे गणना ॥ १५ ॥

नवांशचक्रम् ।

० मे.	१ वृ.	२ मि.	३ क.	४ सिं	५ क.	६ तु	७ वृ.	८ ध.	९ म.	१० कुं.	११ मी.	स्पष्टराशि.	
१ वर्गोत्तम.	१० .	७	४ व.	१	१०	७ व	४	१	१० व.	७	४	३ २०	अंशभीतर.
२	११	८	५	२	११	८	५	२	११	८	५	६ ४०	अंशभीतर.
३	१२	९	६	३	१२	९	६	३	१२	९	६	१० ०	अंशभीतर
४	१	१०	७	४	१	१०	७	४	१	१०	७	१३ २०	अंशभीतर.
५	२ व.	११	८	५	२	११	८ व	५	२	११	८	१६ ४०	अंशभीतर.
६	३	१२	९	६	३	१२	९	६	३	१२	९	२० ०	अंशभीतर.
७	४	१	१०	७	४	१	१०	७	४	१	१०	२३ २०	अंशभीतर.
८	५	२	११	८	५	२	११	८	५	२	११	२६ ४०	अंशभीतर.
९	६	३ व.	१२	९	६ व.	३	१०	२ व.	६	३	१२	३० ०	अंशभीतर.

चरादिष्वादिमध्यान्त्या वर्गोत्तमनवांशकाः ॥
स्वगेहद्वादशैभगैः क्रमशो द्वादशांशपाः ॥ १६ ॥

अनुष्टुप्० ॥ वर्गोत्तमका विचार कहते हैं । चरराशियोंके आदिमें, स्थिर राशियोंके मध्यमें, द्विस्वभावराशियोंके अन्तमें वर्गोत्तम होता है अर्थात् १ । ४ । ७ । १० इन राशियोंका ३ अंश २० कला भीतर स्पष्ट हो तो वर्गोत्तम होता है । २ । ५ । ८ । ११ इन स्थिर राशियोंका स्पष्ट १६ अंश ४० कला हो तो वर्गोत्तम होता है । ३।६।९।१२ इन द्विस्वभाव राशियोंका

स्पष्ट ३० अंश० कला भीतर हो तो वर्गोत्तम होता है । द्वादशांशको राशिके बारह भाग करके बारह कोष्ठकका चक्र बनाना जिस राशिअंशका द्वादशाश करना हो उसी राशिसे चक्रमें स्पष्ट अंशतक गिने जिस कोष्ठकमें स्पष्टकी राशि अंश मिले उसी राशिका द्वादशांश होता है ॥ १६ ॥

द्वादशांशचक्रम् ।

० मे.	१ वृ.	२ मि.	३ क.	४ सिं.	५ क.	६ तु	७ वृ.	८ ध	९ म.	१० कु.	११ मी.	स्पष्टराशयः.	
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	२ ३०	अंश
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	५ ०	अंश
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	७ ३०	अंश
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	१० ०	अंश
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	१२ ३०	अंश
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	१५ ०	अंश
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	१७ ३०	अंश
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	२० ०	अंश
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	२२ ३०	अंश
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	२५ ०	अंश
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	९	९	१०	२७ ३०	अंश
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	३० ०	अंश

आरार्किजीवबुधदैत्यपुरोधसश्च पञ्चेन्द्रियाष्टनगमारुतभागकानाम् ॥
ओजेषुराशिषुभवंतियथाक्रमेणत्रिंशांशपाः समगृहेषुविलोमतःस्युः १७॥

वसंततिलका० ॥ त्रिंशांशके वास्ते एक राशिके पांच भाग हैं एक चक्र विषमराशिका, दूसरा समराशिका है, विषमराशिका स्पष्ट विषम चक्रसे समराशिका समचक्रमें यथाक्रम विचारना ॥ १७ ॥

विषमराशित्रिंशांशचक्रम् ।

मे.	मि.	सिं.	तु.	ध.	कुं.	स्पष्टराशयः	
१	१	१	१	१	१	५ ०	अंश
११	११	११	११	११	११	१० ०	अंश.
९	९	९	९	९	९	१८ ०	अंश.
३	३	३	३	३	३	२५ ०	अंश.
७	७	७	७	७	७	३० ०	अंश.

समराशित्रिंशांशचक्रम् ।

वृ.	क.	क.	वृ.	म.	मी.	स्पष्टराशयः	
२	२	२	२	२	२	५ ०	अंश.
६	६	६	६	६	६	१२ ०	अंश.
१२	१२	१२	१२	१२	१२	२० ०	अंश.
१०	१०	१०	१०	१०	१०	२५ ०	अंश.
८	८	८	८	८	८	३० ०	अंश.

" लग्नं देहो वर्गषट्कांगकानि प्राणश्चन्द्रो धावतः खेचरेन्द्राः ॥
प्राणे नष्टे धातवो देहनाशं तस्माज्ज्ञेयं चन्द्रवीर्यः प्रधानम् ॥ ६ ॥

शालिनी० ॥ लग्न शरीर है, होरादि षट्कुण्डली पृथक् २ षट् अंग हैं चन्द्रमा प्राण है, जब प्राण नष्ट होता है तो शरीर धातु अंग सब प्राणके साथ मर जाते हैं, सर्व शरीरका राजा प्राण है इस कारण चन्द्रमाकी जो राशि है वह राशि मनुष्यकी होती है ॥ ६ ॥

सौख्यं शीलं पदं द्रव्यं वर्णबुद्धिगुणात्मजान् ॥
वपुःस्त्रीफलमित्याहुः षड्वर्गे क्रमशो ग्रहात् ॥ ७ ॥

अन्यच्च ॥ गेहात्सौख्यमुदाहरंति मुनयो होराबलाच्छीलतां ।
द्रेष्काणे पदवीं धनस्य निचयं सप्तांशके चिन्तयेत् ॥
वर्णं रूपगुणान्सुधीसुतनयान्प्रायो नवांशेऽखिलं ।
लिंगे द्वादशगे वपुर्वयमिदं त्रिंशांशके स्त्रफिलम् ॥ ८ ॥

अनुष्टुप्० शार्दूलविक्री० ॥ दोनों श्लोकोंका एकही अर्थ कहते हैं । ग्रह-

कुण्डलीमें सौख्य विचारना; होरामें शीलता, द्रेष्काणमें पदवी अर्थात् ऐश्वर्य, सप्तांशमें द्रव्यादि संचय, नवांशमें स्वरूप बुद्धिगुणसन्तति विचारना, द्वादशांश कुण्डलीमें लिंगादिस्वरूप अतिबली यद्वा बल क्षीण लघुदीर्घादि देखना, त्रिंशांश कुण्डलीमें स्त्रीका विचार अर्थात् स्त्रीकी दिशा स्वरूप सुख दुःख स्वभावादि विचारना ॥ ७ ॥ ८ ॥ ”

चत्वारः क्रियतः सधन्विमकरा रात्रौ बलिष्ठाः स्मृताः ।
एते चैव नृयुग्मखेचरमृते पृष्ठोदयाः कीर्तिताः ॥
अन्ये येऽखिलराशयो दिनबलाः शीर्षोदयास्ते बुधै- ।
र्मीनश्चोभयतः समेति दिवसे रात्रौ बलिष्ठः स्मृतः ॥ १८ ॥

शार्दूलविक्रीडित० ॥ राशियोंकी संज्ञान्तर । मेष, वृष, मिथुन, कर्क, धनु, मकर रात्रिमें बली होते हैं और येही राशि मिथुनके विना पृष्ठोदय होते हैं और जो राशि सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, कुंभ हैं वे दिनमें बली होते हैं ये राशि मिथुनसहित शीर्षोदय होती हैं, मीन दिनमें तथा रात्रिमें बलिष्ठ होता है और पृष्ठोदय तथा शीर्षोदयभी है, पृष्ठोदय पृष्ठसे उदय होते हैं, शीर्षोदय शिरसे उदय होते हैं, प्रयोजन यह है कि प्रश्नसे वा जन्मलग्नसे रात्रिदिनका जन्म चोरी गई वस्तुका समय नैर्याणमें ग्रह जिस राशिका हो उस राशिसे मरनेका समय विचारना, जन्मलग्न और जन्मलग्नका नवांश पृष्ठोदय होवे तो बालक गर्भसे उलटा पैदा होता है अर्थात् पहिले चरण बाहर निकलते हैं, मीनलग्न होवे और नवांशकभी मीनका होवे तो बालक शिर चरण दोनोंसे पैदा होता है, शीर्षोदय राशिका ग्रह दशान्तर्दशामें भला वा बुरा फलकोशुरू दशामें देगा, पृष्ठोदयराशिका ग्रह भला वा बुरा फल दशाके अन्त होनेपर देगा ॥ १८ ॥

मेषगोश्विमृगपाश्चतुष्पदा नक्रपूर्वदलसंयुताश्च ते ॥
कर्कटर्क्षमिह कीटयोनिजो वृश्चिकः खलु सरीसृपाभिधः ॥ १९ ॥

रथोद्धतावृ० ॥ मेष, वृष, धनु, सिंह और मकरका पूर्वदल अर्थात् १५

अंश यह राशि चतुष्पद हैं, कर्क कीट है, वृश्चिक सरीसृप है अर्थात् विच्छू है और यह दोनों बहुत चरणोंवाले हैं ॥ १९ ॥

नक्रपश्चिमदलं घटाह्वयो मीनराशिसहितो जलेचराः ॥
स्त्रीनृयुग्मघटकुम्भराशयो मानवाः समुदिता विचक्षणैः॥ २० ॥

रथोद्धतावृ० ॥ मकरका पश्चिम दल अर्थात् सोलह अंशसे ३० अंशपर्यन्त और कुम्भ, मीन ये राशि जलचर हैं; कन्या, मिथुन, तुला, कुम्भ ये राशि मनुष्य हैं इस तरह पण्डितोंने कहे हैं, प्रयोजन यह है कि बालक चतुष्पद कीटलग्नोंमें पैदा हो तो थोडे दिनोंमें चलने फिरने लगता है, विपदलग्नों और मनुष्यलग्नोंमें हो तो बहुत दिनोंमें चलने फिरने लगता है तैसाही चोरी प्रश्नलग्न चतुष्पद राशिका हो तो चोरकी वस्तु नष्ट वस्तु गोशालामें वा गोबरमें, कीटलग्न हो तो आखुविवरमें वा खड्डेमें वा अंधेरे स्थानमें होवे द्विपदलग्न हो तो मनुष्यपक्षके पास होवे, जलचरलग्न हो तो जलके समीप वा जलमें होवे. प्रसूति भूमिप्रभृतिका विचारभी एवं करना ॥ २० ॥

"मत्स्यौ घटी नृमिथुनं सगदं सवीणं चापी नरोऽश्वजघनो मकरो मृगास्यः ॥ तौली ससस्यदहना प्लवगा च कन्या शेषाः स्वनामसदृशाः खचराश्च सर्वे ॥ ९ ॥

वसन्ततिलकावृ० ॥ राशिस्वरूप कहते हैं । एकका मुख दूसरेके पुच्छमें दूसरेका पुच्छ एकके मुखमें इस तरह दो मत्स्योंका स्वरूप मीन है, जलवर्जित कुंभ स्कन्धमें धारनेवाला पुरुष ऐसा कुम्भस्वरूप है, पुरुषके हाथमें गदा स्त्रीके हाथमें वीणा (सितार) एवं द्वंद्वस्वरूप मिथुनका है, घोडेकी जंघा धनुर्धारी नर एवं स्वरूप धनुका है, हरिणमुख मकरस्वरूप है, पलडेको धारनेवाला पुरुष एवं तुलाका स्वरूप है, नौकामें बैठी हुई एक हाथमें अग्नि दूसरे हाथमें धानोंको लेके चलती है, एवं कन्यास्वरूप है, और राशितुल्यरूप जैसे वृष बैल, कर्क केकडा, सिंह सेर, वृश्चिक (विच्छू) है ॥ ९ ॥"

नराश्चतुष्पदाः कीटा जलजा ये च राशयः ॥
प्राच्यामवाच्यां प्रतीच्यामुदीच्यां बलिनः क्रमात् ॥ २१ ॥

अनुष्टुप्० ॥ नरराशि पूर्वमें तथा लग्नको पाके बलिष्ठ होते हैं, चतुष्पद-राशि दक्षिणमें तथा दशमस्थानको पाके बली होते हैं, कीटराशि पश्चिममें तथा सप्तममें बली होते हैं, जलचरराशि उत्तरमें तथा चतुर्थस्थानमें बली होते हैं, चोरादि आगमन दिशा विचारनी ॥ २१ ॥

" स्वाम्याशाख्यं प्लवत्वं हि कथितं पूर्वसूरिभिः ॥
पूर्वार्द्धे विपपादेन कृतघ्ना दिनमेव च ॥ १० ॥

अनुष्टुप्० ॥ जिस राशिके स्वामीकी जो दिशा है वह उस राशिकी प्लव-संज्ञा दिशा होती है, मेष वृश्चिक दक्षिणमें, वृष तुला आग्नेयीमें, मिथुन कन्या उत्तरमें, कर्कट वायव्यमें, सिंह पूर्वमें, धनु मीन ईशानमें, मकर कुम्भ पश्चिममें प्लव होते हैं हृतनष्टादिमें चोरादिका गमन राशिकी दिशामें समझना मेष मीनके २० दिन, वृष, कुंभके २४ दिन, मिथुन मकरके २८ दिन, कर्क धनुके ३२ दिन, सिंह वृश्चिकके ३६ दिन, कन्या तुलाके ४० दिन शुभ प्रश्नसे हृतनष्टादि वस्तु राशि उक्त दिनमें मिलेगी, कोई कहते हैं नष्ट चिन्तादिमें चौररूपनरादिके शरीरका ज्ञान करना छोटा है वा बडा है यह विचार करना ॥ १० ॥ "

स्वाधीशयुक्तो बुधजीवशुक्रैर्निरीक्षितो वा यदि यश्च राशिः ॥
बुधैर्निरुक्तो बलवान्सराशिरशेषखेटैरथ वीक्षितश्च ॥ २२ ॥

उपजातिवृ०॥ जो राशि अपने स्वामीसे वा बुध बृहस्पति शुक्रसे युक्त हो वा दृष्ट हो वह राशि पण्डितोंने बलवान् बतलाया है, रवि चन्द्रमा मंगल शनिसे युक्त वा दृष्ट हो तो निर्बली, पापशुभोंके देखनेसे मध्यबली होताहै २२

झषः कर्कटो वृश्चिको भूमिदेवा धनुर्मेषसिंहास्तथा क्षत्रियाश्च ॥
वृषः कन्यका नक्रराशिर्विशश्च नृयुग्मं तुला कुंभराशिश्च शूद्राः २३

भुजङ्गप्रयातवृ० ॥ मीन कर्क वृश्चिक ये राशि ब्राह्मण हैं, धनु मेष

सिंह ये राशि क्षत्रिय हैं, वृष कन्या मकर ये राशि वैश्य हैं, मिथुन तुला कुंभ ये राशि शूद्र हैं ॥ २३ ॥

तनुधनसहजाख्या मित्रपुत्रारिजायानिधनसुकृतकर्मायव्यया-श्चेति भावाः ॥ उदयभमथ होरामूर्तिकल्पास्तु लग्ने द्रविण-मथ कुटुम्बर्क्षं द्वितीयस्य संज्ञा ॥ २४ ॥

मालिनीवृ० ॥ बारह भावोंके नाम तनु १ धन २ सहज ३ मित्र ४ पुत्र ५ अरि ६ जाया ७ निधन ८ सुकृत ९ कर्म १० आय ११ व्यय १२, लग्नादि भावोंके नामान्तर लिखते हैं उदय होरा मूर्ति कल्प ४ नाम लग्नभावके हैं, द्रविण कुटुम्ब २ नाम दूसरे भावके हैं ॥ २४ ॥

दुश्चिक्यविक्रमगृहं सहजाख्यभावे पातालबंधुसुखभं हिबुकां-बुतुर्यं ॥ धीः पञ्चमे क्षतिरथो खलु षष्ठभावे जामित्रमस्तभवनं द्युनकामसंज्ञे ॥ २५ ॥

वसंततिलका० ॥ दुश्चिक्य विक्रम सहज ३ नाम तीसरे भावके हैं, पाताल बंधु सुख हिबुक अंबु तुर्य ६ नाम चौथे भावके हैं, धी एक नाम पञ्चमभावका है, क्षति १ नाम षष्ठ भावका है, जामित्र अस्त द्युन काम ॥ २५ ॥

द्यूनं च सप्तमगृहे त्वथ रन्ध्रछिद्रं स्यादष्टमेऽथ नवमे गुरुदेवसंज्ञा ॥ मेषूरणां गगनमध्यसुमानमाज्ञा संज्ञाभवे दशमसद्मनि तत्रजानाम् २६॥

वसन्ततिलका० ॥ द्यून ५ नाम सप्तम भावके हैं, रन्ध्र छिद्र २ नाम अष्टम भावके हैं, गुरु देव २ नाम नवम भावके हैं, मेषूरण गगन मध्य मान आज्ञा ५ नाम दशम भावके हैं ॥ २६ ॥

एकादशे तु भवसद्मचलाभभावो रिःफं तथान्त्यभवनस्य भ-वेद्धि संज्ञा ॥ इत्येवमत्र तनुतोऽखिलभावसंज्ञा ज्ञेयार्भकैरथ चतुष्टयकादिसंज्ञा ॥ २७ ॥

वसन्ततिकला० ॥ भव लाभ २ नाम एकादश भावके हैं, रिःफ अन्त्य २ नाम बारहवें भावके पण्डित कहते हैं, इस तरह इस शास्त्रमें लग्नसे भावसंज्ञा

बालकोंको समझना चाहिये इसके उपरान्त चतुष्टयप्रभृति संज्ञा जानना ॥ २७॥

केन्द्रं च कंटकगृहं च चतुष्टयं च लग्नास्ततुर्यदशमस्य च नामधेयम् ॥ तस्मात्परं पणफरं खलु तत्परः स्यादापोक्लिमं मृतिमुखे चतुरस्रसंज्ञे ॥ २८ ॥

वसन्ततिलका०॥ १।४।७।१० इन स्थानोंकी संज्ञा केन्द्र, कण्टक और चतुष्टयभी है, इनसे परे २।५।८ इन स्थानोंकी संज्ञा पणफर है, इनसे परे ३।६।९।१२ इन स्थानोंकी संज्ञा आपोक्लिम है, ८।४ स्थानकी चतुरस्र संज्ञा है ॥ २८ ॥

धीधर्मर्क्षं त्रिकोणं भवति नवमभं त्रित्रिकोणाह्वयं च लाभारिभ्रातृमध्यान्युपचयभवनान्याहुरित्येवमार्याः ॥ यो भावः स्वामिसौम्यैर्भवति युतिगतो वीजितो वापि यत्र तद्भावस्य प्रवृद्धिर्भवति च सुतरां पापखेटैस्तु हानिः ॥ २९ ॥

इति श्रीजयदेवकृतायां जातकचन्द्रिकायां राशिभेदाध्यायः प्रथमः ॥ १ ॥

स्रग्धराछं० ॥ ५।९ स्थानकी संज्ञा त्रिकोण है, नवम स्थानका त्रित्रिकोण नाम है, ११।६।३।१० इन स्थानकी संज्ञा उपचय है इस प्रकार श्रेष्ठजन कहते हैं, जो भाव स्वामीसे वा सौम्य ग्रहोंसे युक्त हो वा दृष्ट हो तो उस भावकी वृद्धि होती है, पापग्रहोंसे युक्त हो वा दृष्ट हो तो उस भावकी अत्यंत हानि होती है ॥ २९ ॥

इति श्रीकेशवानन्दविरचितायां जातकचन्द्रिकाभाषायां राशिभेदाध्यायः प्रथमः॥१॥

प्राच्यादीशाः सूर्यशुक्राररराहुच्छायापुत्राः सोमसौम्यामरेज्याः ॥ कायो हृत्सत्त्वं च गीर्ज्ञानसौख्यं कन्दर्पो दुःखं क्रमादर्यमाद्याः॥ १॥

शालिनी०॥ पूर्वादि दिशोंके स्वामी कहते हैं । पूर्वका स्वामी सूर्य, आग्नेयका शुक्र, दक्षिणका मंगल, नैर्ऋत्यका राहु, पश्चिमका शनि, वायव्यका चन्द्रमा, उत्तरका बुध, ईशानका स्वामी बृहस्पति, कालपुरुषका आत्मा सूर्य, चन्द्रमा मन, कुज शौर्य, बुध वाक्, बृहस्पति ज्ञान और सुख, शुक्र काम, शनि

दुःख है, केवल मेषादि राशि कालपुरुषके अंग नहीं हैं परंच ग्रहभी कालपुरुषके अंग हैं इसका प्रयोजन यह है कि पीडितग्रह पुरुषके जिस अंगपर हो उस अंगको पीडित करता है, पुष्टग्रह पुष्टि करता है, परन्तु शनिका विपरीत फल समझना ॥ १ ॥

रविभौमगुरुग्रहा नराः शशिशुक्रौ खचरौ तु योषितौ ॥
शनिचन्द्रसुतौ नपुंसकाविति संकेत इहास्ति धीमताम् ॥ २ ॥

वियोगिनीवृ०॥ ग्रहोंका संज्ञातर कहते हैं। रवि मंगल बृहस्पति पुरुष हैं, चन्द्रमा शुक्र स्त्री हैं, शनि बुध क्लीब हैं, इस तरह संकेत पूर्वाचार्योंका है॥ २॥

"भार्गवेन्दू जलचरौ ज्ञजीवौ ग्रामचारिणौ ॥
राहुक्षितिजमन्दार्का भुवतेऽरण्यचारिणः ॥ १ ॥

अनुष्टुप्०॥ शास्त्रान्तरसे ग्रहोंका संचारस्थल कहते हैं। शुक्र चन्द्रमा जलचर हैं, बुध बृहस्पति ग्रामचारी हैं, राहु मंगल शनि सूर्य वनचर हैं॥१॥

प्रभातमिन्दुजगुरू मध्याह्ने रविभूमिजौ ॥
अपराह्णे भार्गवेन्दू संध्या मन्दभुजङ्गमौ ॥ २ ॥

अनुष्टुप्०॥ ग्रहोंका प्रभातादि समयज्ञान कहते हैं। बुध बृहस्पतिका प्रभातसमय है, सूर्य मंगलका मध्याह्न, शुक्र चन्द्रमाका तृतीय पहर, शनि राहुका सन्ध्या समय, वस्तुका हृतनष्टादि समय समझना ॥ २ ॥

तिर्यग्दृशौ बुधसितौ भौमार्कौ व्योमदर्शिनौ ॥
जीवेन्दू समदृष्टी च शनिराहू त्वधोदृशौ ॥ ३ ॥

अनुष्टुप्०॥ नष्टादिवस्तु तिर्यगादिसूचक ग्रहस्वरूप कहते हैं। बुध शुक्र तिरछी दृष्टि हैं, मंगल सूर्य आकाशदृष्टि हैं, बृहस्पति चन्द्रमा समदृष्टि हैं, शनि राहु अधोदृष्टि अर्थात नीची दृष्टि हैं, नष्टादिप्रश्नमें जो ग्रह बलिष्ठलग्नमें हो वा वस्तुको देखे तो दृष्ट्यनुसार गतवस्तुस्थान कहना ॥ ३ ॥

मन्देन्दूरगभौमाः स्युर्धातुः सवितृभार्गवौ ॥
मूलं जीवश्च सौम्यश्च जीवं प्राहुर्महाधिपाः ॥ ४ ॥

अनुष्टुप्०॥ धात्वादिज्ञान कहते हैं। शनि चन्द्रमा राहु मंगल प्रश्नदिनमें इन चारोंके मध्ये एकभी लग्नमें हो वा देखे तो पृच्छककी धातुचिन्ता होवे, एवं सूर्य शुक्रसे मूल, बृहस्पति बुधसे जीवचिन्ता पूर्वाचार्य कहते हैं ॥ ४ ॥

द्विपदौ भार्गवगुरू भौमार्कौ च चतुष्पदौ ॥
पक्षिणौ बुधसौरी च चन्द्रराहू सरीसृपौ ॥ ५ ॥

अनुष्टुप्०॥ ग्रहोंकी पदसंज्ञा कहते हैं। भार्गव बृहस्पतिके दो चरण हैं, मंगल सूर्य चतुष्पद हैं, बुध शनि पक्षी हैं, सर्पादि (अपद) हैं, प्रश्नमें द्विपदादि चिन्ता वा चोरादि ज्ञात करना ॥ ५ ॥

शुक्रार्कौ पूर्ववक्त्रौ च गुरुसौम्यौ उदङ्मुखौ ॥
शनिसोमौ प्रतीच्यौ च शेषा दक्षिणतोमुखाः ॥ ६ ॥

अनुष्टुप्०॥ चोरादिज्ञानके वास्ते ग्रहोंकी मुखादिशा कहते हैं। शुक्र सूर्य पूर्वमुख हैं, बृहस्पति बुध उत्तरमुख हैं, शनि चन्द्रमा पश्चिममुख हैं, राहु मंगल दक्षिणमुख हैं ॥ ६ ॥"

नेता भौमः सूर्यचन्द्रौ क्षितीशौ मंत्री मंत्री दैत्यमंत्री च मंत्री ॥
भृत्यः सौरी सोमपुत्रः कुमारो ज्ञेयान्यार्यैः खेचराणां पदानि ॥ ३ ॥

शालिनी० ॥ ग्रहोंके अधिकार कहते हैं। मंगल स्वामी है, सूर्य चन्द्रमा पृथ्वीपति हैं, मन्त्री मन्त्री अर्थात् देवमन्त्री (बृहस्पति) और दैत्यमन्त्री (शुक्र) ये दोनों मन्त्री अर्थात् अमात्य हैं, शनि दास है, बुध युवराज है इस तरह श्रेष्ठ जनोंने ग्रहोंके आधिकार कहे हैं ॥ ३ ॥

"अवनीशो दिनमणिस्तपस्वी रोहिणीप्रियः ॥
स्वर्णकारः क्षितेः पुत्रो ब्राह्मणो रोहिणीभवः ॥ ७ ॥

अनुष्टुप्०॥ ग्रहोंकी वृत्ति कहते हैं। सूर्य राजा है, बुध तपस्वी है मंगल स्वर्णकार है, बुध ब्राह्मण है ॥ ७ ॥

वणिग्गुरुः कविर्वैश्यो वृषलः सूर्यनंदनः ॥
सैंहिकेयो निषादश्च सर्वकार्येषु संमतः ॥ ८ ॥

अनुष्टुप्०॥ बृहस्पति वणिग्वृत्ति है, शुक्र वैश्य है अर्थात् धनी है, शनि दास है, राहु चण्डाल है, चोरादिप्रश्नमें वृत्तिका विचार करना ॥ ८ ॥

युवा कुजः शिशुः सौम्यः शशिशुक्रौ च मध्यमौ ॥
मन्दमार्तण्डदेवेज्यफणिनः स्थविरा ग्रहाः ॥ ९ ॥

अनुष्टुप्०॥ ग्रहोंका वयोनुमान कहते हैं । मंगल जवान है, बुध बालक है, चन्द्रमा शुक्र न बहुत दीर्घ न बहुत छोटे हैं, शनि सूर्य बृहस्पति राहु वृद्ध हैं, प्रश्नलग्नमें चतुर्थस्थानको विचारकर चौरकी उमर कहनी, चतुर्थका स्वामी चतुर्थको देखे वा युक्त हो तो उस ग्रहके अवस्थाके तुल्य चौरादिककी अवस्था कहनी ॥ ९ ॥

भौममंदार्कभोगीन्द्राः प्रकृत्या दुःखदा नृणाम् ॥
ज्ञगुरुश्वेतकिरणशुक्राः सुखकराः सदा ॥ १० ॥

अनुष्टुप्०॥ ग्रहोंकी प्रकृति कहते हैं । मंगल शनि सूर्य राहु स्वभावसे लोकोंको दुःखदायक होते हैं, बुध बृहस्पति चन्द्रमा शुक्र सुख करनेवाले होते हैं ॥ १० ॥ ”

विप्राधीशौ शुक्रजीवाविनारौ क्षत्राणां स्याद्वैश्यजातेस्तु चन्द्रः ॥
शूद्राधीशश्चन्द्रपुत्रो निरुक्तः पूर्वाचार्यैः सूर्यजः संकराणाम् ॥ ४ ॥

शालिनीवृ०॥ वर्णाधिपति कहते हैं । शुक्र गुरु ब्राह्मणोंके अधीश, सूर्य मंगल क्षत्रियोंके अधीश हैं, चन्द्रमा वैश्योंका अधिपति, बुध शूद्रोंका अधीश है, शनि चाण्डालोंका अधिपति पूर्वाचार्योंने कहा है ॥ ४ ॥

स्वतुंगमित्रस्वगृहांशकेषु यः सौम्यदृष्टो बलवान्सखेटः ॥
क्षीणेन्दुसूर्यक्षितिजार्कपुत्राः पापा बुधस्तैः सह पाप एव ॥ ५ ॥

उपजाति०॥ स्थानबल कहते हैं । अपने तुंगमें मित्रक्षेत्रमें स्वगृहमें स्वनवांशमें शुभग्रहदृष्टियुक्त जो ग्रह हो वह बलवान् होता है, क्षीणचन्द्रमा सूर्य मंगल शनि ये पापग्रह हैं इनके साथ होनेसे बुधभी पापही होता है । कृष्णाष्ट-

मीके आधेसे अर्थात् दूसरे दलसे शुक्लाष्टमीके आधे अर्थात् पूर्वदलपर्यन्त क्षीण चन्द्रमा होता है ॥ ५ ॥

दिने शुक्रार्केज्या द्युनिशि शशिजश्चैव बलवांस्तथा नक्ते काले
शनिविधुकुजाश्चापि बलिनः ॥ दिने स्वे स्वे सर्वे बहुलसितपक्षे
शुभशुभास्तथा सौरारज्ञेज्यसितशशिसूर्याः परपराः ॥ ६ ॥

शिखरिणी० ॥ कालबल कहते हैं । शुक्र सूर्य गुरु दिनमें बली होते हैं बुध दिनमें रात्रिमेंभी बली होता है, शनि चन्द्रमा मंगल रात्रिसमय बली होते हैं, अपने अपने दिनमें और वर्षमें और होरामें मासमें सबही ग्रह बली होते हैं, कृष्णपक्षमें अशुभग्रह शुक्लपक्षमें शुभग्रह बलिष्ठ होते हैं, आगे नैसर्गिक बल कहते हैं । शनिसे मंगल बली, मंगलसे बुध बली, बुधसे बृहस्पति बली, बृहस्पतिसे शुक्र बली, शुक्रसे चन्द्रमा बली, चन्द्रमासे सूर्य बली होता है ॥ ६ ॥

दुश्चिक्यमेषूरणभं त्रिकोणं तुर्याष्टमं सप्तममंत्रिवुद्ध्या ॥
पश्यन्ति सौरीज्य इलासुतश्च परे क्रमात् पूर्णदृशो ग्रहेन्द्राः ॥ ७ ॥

उपजाति० ॥ ग्रहदृष्टि कहते हैं । जिस स्थानमें ग्रह होवे उस स्थानसे तृतीय दशम स्थानमें पाददृष्टिसे देखते हैं, शनि तो पूर्ण देखता है । नवम पंचम स्थानमें अर्द्धदृष्टिसे देखते हैं, गुरु तो पूर्ण देखता है । अष्टम चतुर्थस्थानमें पादोनदृष्टिसे अर्थात् तृतीय दृष्टिसे देखते हैं, मंगल तो पूर्ण देखता है । सूर्य चन्द्रमा बुध शुक्र सप्तमस्थानमें पूर्ण दृष्टिसे देखते हैं ॥ ७ ॥

मित्राणि सूर्याद्गुरुचन्द्रभौमाः सूर्येन्दुपुत्रौ विधुवाक्पतीनाः ॥
आदित्यशुक्रौ कुजचन्द्रसूर्या बुधार्कजौ शुक्रबुधौ क्रमात्स्युः ॥८॥

उपजाति० ॥ ग्रहोंके मित्र कहते हैं । सूर्यके बृहस्पति चन्द्रमा मंगल मित्र हैं, चन्द्रमाके सूर्य बुध मित्र हैं, मंगलके चन्द्रमा बृहस्पति सूर्य मित्र हैं, बुधके सूर्य शुक्र मित्र हैं, बृहस्पतिके मंगल चन्द्रमा सूर्य मित्र हैं, शुक्रके बुध शनि मित्र हैं, शनिके शुक्र बुध मित्र हैं ॥ ८ ॥

समाश्च सूर्याच्छशिजो यमारसुरासुरेज्या भृगुजार्कजौ च ॥
भौमार्किजीवाश्च शनैश्चरश्च जीवाचलजौ च बृहस्पतिश्च ॥ ९ ॥

उपजाति० ॥ ग्रहोंके सम कहते हैं । सूर्यका बुध सम है, चन्द्रमाके शनि मंगल बृहस्पति शुक्र सम हैं, मंगलके शुक्र शनि सम हैं, बुधके मंगल शनि बृहस्पति सम हैं, बृहस्पतिका शनि सम है, शुक्रके गुरु मंगल सम हैं, शनिका गुरु सम है ॥ ९ ॥

द्वेष्याः सूर्याच्छुक्रशौरी न कोऽपि सौम्यश्चंद्रः शुक्रचन्द्रात्मजौ च॥
आदित्येन्दू सूर्यभौमौषधीशा नैसर्गोऽयं खेचराणां विचारः ॥ १० ॥

शालिनीवृ० ॥ ग्रहोंके शत्रु कहते हैं । सूर्यके शुक्र शनि शत्रु हैं, चन्द्रमाका कोई शत्रु नहीं, मंगलका बुध शत्रु है, बुधका चन्द्रमा शत्रु है, बृहस्पतिके शुक्र बुध शत्रु हैं, शुक्रके सूर्य चन्द्रमा शत्रु हैं, शनिके सूर्य मंगल चन्द्रमा शत्रु हैं ॥ १० ॥

अथेष्टकाले सहजायकर्मतुर्यस्वरिःफेषु परस्परं यत् ॥
मित्रं समः शत्रुरिहाधिमित्रं मित्रं समः स्यात्क्रमशोऽन्यथाऽन्यत् ११

उपजातिवृ० ॥ ग्रहोंके तात्कालिक मित्रामित्री कहते हैं । जिस जन्मादि समयमें एक ग्रहसे दूसरा ग्रह ३ । ११ । १० । ४ । २ । १२ जगह होवे और नैसर्गिक मित्रामित्रीमें शत्रु होवे तो सम लेखना, सम होवे तो मित्र लेखना, मित्र होवे तो अतिमित्र लेखना और परस्पर एकसे दूसरा ग्रह १।५।६।७।८।९ जगह होय तो और निसर्गकी मित्रामित्रीमें मित्र होवे तो सम लेखना, सम होवे तो शत्रु लेखना, शत्रु होवे तो अति शत्रु लेखना ॥ ११ ॥

"उच्चं नृयुग्मं घटभं त्रिकोणं कन्यागृहं सौरिसितामरेज्याः ॥
मित्राणि सूर्येन्द्वयनीतनूजा द्वेष्याश्च राहोः खयमाः परांशाः॥ ११ ॥

उपजाति० ॥ राहुके मित्रादि कहते हैं । राहुका उच्च मिथुन है, मिथुनके २० अंश पाके परमोच होता है, तुला मूल त्रिकोण होता है, कन्या गृह

होता है, राहुके शनि शुक्र बृहस्पति मित्र हैं, सूर्य चन्द्रमा भौम शत्रु हैं, बुध केतु सम हैं ॥ ११ ॥

सिंहस्त्रिकोणं धनुरुच्चसंज्ञं मीनो गृहं शुक्रशनी विपक्षौ ॥
कुजार्कचन्द्राः सुहृदः समाख्यौ जीवेन्दुजौ षट्शिखिनः परांशाः १२

उपजातिवृ०॥ केतुके मित्रादि कहते हैं। केतुका सिंह त्रिकोण है, धन उच्च है, मीन स्वगृह है, शुक्र शनि केतुके शत्रु हैं, मंगल सूर्य चंद्रमा मित्र हैं, बृहस्पति बुध सम हैं, केतु धनु राशिका ६ अंश पाके परमोच होता है॥ १२॥

नैसर्गिकमित्रसमशत्रुचक्रम् ।

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.	ग्रहाः
बृ. चं. मं.	सू. बु.	चं. बृ. सू.	सू.शु.	मं.चं. सू.	बु. श.	शु. बु.	बृ.शु. श.	श.शु. बृ.	मित्र
बु.	श. मं. बृ. शु.	शु. श.	मं. श. बृ.	श.	बृ. मं.	बृ.	बु.के.	बु.रा.	सम
शु. श.	कोई नहीं	बु.	चं.	शु. बु.	र. चं.	चं.सू. मं.	र. चं. मं.	र. चं. मं.	शत्रु

प्रयोजन—उदये राज्यदा ज्ञेया वक्रे देशाटनप्रदाः ॥ मार्गे चारोग्यकर्तारो ह्रस्ते मानार्थनाशकाः ॥ १ ॥ मित्रातिमित्रे धनपुत्रलाभः स्वोच्चे शुभे राज्यपदादिलाभः ॥ त्रिकोणगा वा सुवरांगनाप्तिर्वधः स्यात्त्वितशत्रुपाके ॥ २ ॥ मित्रस्वक्षेत्रगो स्वोच्च अभिमित्रे समेऽपि वा ॥ सर्वे शुभफला ज्ञेयाः शत्रुनीचमनिष्टदाः ॥ ३ ॥ नीचारिभांशोपगतैर्दशायां बंधुक्षयं स्यात्सुतपत्निनाशः ॥ भूपालभंगो विभवस्य हानिः क्लेशभ्रमो बंधनपीडनं स्यात् ॥ ४ ॥ स्वोच्चस्वक्षेत्रगो यश्च मित्रसद्मनि यो ग्रहः॥ स्वदशां प्राप्य कुर्वंति सुतार्थस्त्रीमनोरथान्॥ ५॥ रिपुव्ययगते चाथ अथवा धनमृत्युगे ॥ द्यूने वा पापमध्यस्थे स्वपाके दुःखदो ग्रहः ॥ ६ ॥"

सूर्यः सपित्तस्तनुकायकेशः सश्यामशोणश्चतुरस्रदेहः ॥
शूरोऽस्थिसारो मधुपिंगलाक्षः पृथुः सुवर्णो दृढकायवांश्च ॥ १२ ॥

उपजातिवृ० ॥ सूर्यका रूप कहते हैं। पित्तप्रकृति, अल्पकेश, पाटल-

वर्ण, चतुरस्र शरीर, प्रतापी, मजबूत हड्डी, सहतवर्ण नेत्र, बलपुष्ट, शोभनीय, मजबूत शरीर, एवं सूर्यरूप है ॥ १२ ॥

निशापतिर्वृत्ततनुः सुनेत्रः कफानिलात्मा किल गौरवर्णः ॥
प्राज्ञोऽतिलोलोमृदुवाग्घृणी च प्रियप्रियोसौ खलु शोणितौजाः १३॥

उपजाति०॥ चन्द्ररूप कहते हैं । वर्तुलशरीर, सुन्दरनेत्र, कफवात प्रकृति, गौरस्वरूप, बुद्धिमान्, अतिचञ्चल, कोमलवाणी, विवेकी, दर्शनीय, रुधिरमें बलवाला एवं चन्द्ररूप है ॥ १३ ॥

आरोऽप्युदारोऽपि च पीतनेत्रः क्रूरेक्षणोऽसौ तरुणात्मवांश्च ॥
सुरक्तगौरश्चपलोऽतिहिंस्रः पित्तोष्मवान्मज्जिकया सुसारः ॥ १४ ॥

उपजाति०॥ मंगलरूप कहते हैं । उदारचेता, पिंगलनेत्र, उग्रदृष्टि, युवा, पाटलवर्ण, चपल, आलस्यवर्जित, हिंसाशील, पित्तप्रकृति, मज्जा (चर्बी) से बली एवं मंगलरूप है ॥ १४ ॥

बुधस्त्रिदोषः शुभवाक् च हृष्टस्त्वक्सारनाड्यां ततमध्यरूपः ॥
दूर्वेव वर्णो निपुणः सहासः स्थूलोर्ध्वजः स्थूलनखोष्ठदंतः ॥ १५ ॥

उपजाति०॥ बुधरूप कहते हैं । पित्त कफ वात प्रकृति स्फुटवाक् आनन्दशील त्वचासे बली अधिकनाडी मध्यस्वरूप दूबके समान वर्ण पाण्डित हास्यशील मोटे केश मोटे नख ओंठ दन्तवाला एवं बुधरूप है ॥ १५ ॥

गुरुर्गुणाढ्यः कफवांश्च गौरः पीतोर्ध्वजो मांसलदीर्घदेहः ॥
तथापि पिंगेक्षणवान्सुधीश्च लोकेषु मान्योऽपि च मेदसारः ॥१६॥

उपजाति०॥ बृहस्पतिरूप कहते हैं । गुणवान् (धर्ममति) कफप्रकृति गौरवर्ण पीले केश पुष्ट लम्बाशरीर पीले नेत्रवाला पण्डित सब लोकोंमें मान्य मेदा (चर्बी) से बली एवं बृहस्पति स्वरूप है ॥ १६ ॥

शुक्रः सुखी कांततनुः सुनेत्रः श्लेष्मानिलात्मा मधुरो गिरा च ॥
विकृष्टपूर्वासितवक्रकेशो रेतः सतेजाः किल कृष्णदेहः ॥ १७ ॥

उपजाति०॥ शुक्ररूप कहते हैं । सुखी सुन्दराङ्ग सुन्दरनेत्र कफवात

प्रकृति मीठी वाणी दृढग्रन्थि हैं जिनमें ऐसे श्याम कुञ्चित केश वीर्यसे तेजस्वी और श्यामशरीर एवं शुक्रस्वरूप है ॥ १७ ॥

शनिः कृशः श्यामलदीर्घदेहोऽलसोनिलात्मा कपिलेक्षणश्च ॥
पृथुद्विजः स्थूलनखोष्ठकेशः शठः शिरौजाः पिशुनः स्वभावात् १८

उपेन्द्रव० ॥ शनिरूप कहते हैं । दुर्बल, कृष्ण, लंबादेह, आलस्ययुक्त, वातप्रकृति, पीले नेत्र, दीर्घदन्त, दीर्घ नख ओंठ केश, अन्तःकरण, नाडियोंमें तेजवाला, दुर्जन अर्थात् परस्पर भेदनशील एवं शनिस्वरूप है ॥ १८ ॥

सूर्यात्सुराम्ब्वग्निविहारकोशशय्योत्करा भूम्यधिपाः क्रमेण ॥
स्थूलं नवं वह्निहतं जलार्द्रं मध्यं दृढं जीर्णकमंचलानि ॥ १९ ॥

इन्द्रवज्रावृ० ॥ सूर्यादिकोंके स्थान कहते हैं । देवस्थान सूर्यका, जलस्थान चन्द्रमाका, अग्निस्थान मंगलका, क्रीडास्थान बुधका, भाण्डागार बृहस्पतिका, शयनस्थान शुक्रका, धान्यादिराशिस्थान शनिका, प्रयोजन यह है कि बलवान् ग्रहसे गृहस्थान सूतिकास्थान हरी गई नष्टादि वस्तुका चौर्यस्थान जानना । स्थूलवस्त्र सूर्यका, नूतनवस्त्र चन्द्रमाका, अग्निदग्धवस्त्र मंगलका, जलक्लिन्नवस्त्र बुधका, नातिजीर्णवस्त्र गुरुका, दृढवस्त्र शुक्रका, जीर्णवस्त्र शनिका, बलवान् ग्रहसे सूतिका चोरादिका वस्त्र जानना ॥ १९ ॥

माणिक्यं स्यान्मौक्तिकं विद्रुमं च गारुत्मार्कातपुष्पकं वज्रनीले ॥
ताम्रं माणिक्यं सुवर्णश्च युक्ती रूप्यं मुक्ता लोहमर्कात्क्रमेण ॥२०॥

इति श्रीजयदेवकृतायां जातकचन्द्रिकायां ग्रहभेदाध्यायो द्वितीयः ॥ २ ॥

शालिनीछन्द० ॥ ग्रहोंका मणि धातुज्ञान कहते हैं । माणि सूर्यका, मोती चन्द्रमाका, मूंगा मंगलका, गारुत्मतमणि बुधका, पुष्पकमणि बृहस्पतिका, वज्रमणि शुक्रका, नलिमणि शनिका । ताम्र सूर्यका, मणि चन्द्रमाका, सुवर्ण मंगलका, कांस्यादि अर्थात् त्रिकूट बुधका, रजत बृहस्पतिका, मुक्ता शुक्रका, लोह शनिका, सूतिका गृहमें बलवान् ग्रहका द्रव्यका हृतनष्टादि वस्तुका ज्ञान करना ॥ २० ॥

इति श्रीकेशवानन्दविरचितायां जातकचन्द्रिकाभाषायां ग्रहभेदाध्यायो द्वितीयः ॥ २ ॥

" तिथिवासरनक्षत्रे गर्भिण्या वर्णसंयुते ॥
सप्तभाजितशेषांकः सूर्यादिवार उच्यते ॥ १ ॥
रवौ भौमे गुरौ पुत्रः शुक्रे चन्द्रे बुधे सुता ॥
शनौ क्षीणप्रजा ज्ञेया लक्ष्मीदत्तेन भाषितम् ॥ २ ॥

अनुष्टुप्० ॥ तिथि वार नक्षत्र और गर्भिणीके नामाक्षर जोडके सातसे भाग लेके १ । ३ । ५ शेषसे पुत्र २ । ४ । ६ से पुत्री ७ से अल्पायु गर्भ जानना इस प्रकार लक्ष्मीदत्त कविने कहा है ॥ १ ॥ २ ॥ "

आधानकाले तु यथाऽस्तराशिस्तच्छीलवन्मैथुनकः प्रयोगः ॥
खलग्रहैरीक्षितसंयुतेऽस्ते सायासमिष्टैश्च विदग्धितश्च ॥ १ ॥

उपजातिवृ० ॥ स्त्रीनरसंयोग ज्ञान कहते हैं । आधानलग्नसे वा जन्मलग्नसे वा प्रश्नलग्नसे जैसा सप्तम राशि हो उस संज्ञाका प्राणी जिस प्रकार मैथुन करता है तैसाही पुरुषस्त्रीका संयोग कहना उसी सप्तमस्थानमें पापग्रह हो वा पापग्रहकी दृष्टि हो तो कलहसहित पुरुष स्त्रीका संयोग होता है, शुभग्रहयुक्त वा दृष्ट हो तो विलासहाससहित पुरुषस्त्रीसंयोग होता है, शुभग्रह वा पापग्रहयुक्त वा दृष्ट न हो तो संयोग सविलासहाससहितभी नहीं और कलहसहितभी नहीं होता है ॥ १ ॥

सौरांशके चन्द्रनवांशके वा तुर्यस्थिते वार्कियुतेऽपि चन्द्रे ॥
आधानकालेऽप्यथ जन्मकाले जगुर्बुधास्तत्र तु शांतदीपम् ॥ २ ॥

उपजातिवृ० ॥ दीपज्ञान कहते हैं । आधान वा जन्मसमयमें सूर्यके नवांशमें वा चन्द्रमाके नवांशमें शनिसे युक्त चतुर्थ चन्द्रमा हो तो दीपक शांत होवे अर्थात् प्रज्वलित नहीं रहता इस तरह पण्डितजन कहते हैं ॥ २ ॥

सूर्याब्जयोः सप्तमगौ कुजार्कौ रोगप्रदौ तौ पतियोषितोश्च ॥
स्वांत्यस्थितौ मृत्युकरौ युतौ वा तदैकदृष्ट्या निधनप्रदौ च ॥३॥

उपजातिवृ० ॥ आधानकालवशात् प्रसववृद्धिमें स्त्रीपुरुषको शुभाशुभ कहते हैं । सूर्यसे सप्तम मंगल शनि हों तो कललघनादि मासेश्वर आगे कहे

जायगे अपने उन मासोंमें पुरुषको रोग करते हैं। चन्द्रमासे सप्तम मंगल शनि हो तो स्त्रीको रोग करते हैं। सूर्यसे कुज शनि दूसरे बारहवें स्थानमें हों तो उनमें जो बली हो वह अपने मासमें पुरुषको मृत्यु देता है। चन्द्रमासे द्वितिय द्वादश कुज शनि हों तो जो उनमें बलिष्ठ हो वह ग्रह अपने मासमें स्त्रीको मृत्यु देता है। तिसी तरह कुजशनिमेंसे एक ग्रह सूर्ययुक्त होवे और दूसरा इस सूर्य युक्त ग्रहको देखे तोभी उस ग्रहके मासमें पुरुषको मृत्यु होता है तथा मंगल शनिमें एक तो चन्द्रसंयुक्त हो दूसरा उस चंद्रसंयुक्त ग्रहको देखे तो उस ग्रहके मासमें स्त्रीको मृत्यु होता है ॥ ३ ॥

त्रिकोणकेन्द्रेषु यदा शुभाः स्युस्त्रिषष्ठलाभेषु खलग्रहश्चेत् ॥
ओजांशकेऽब्जे तनुपे बलाढ्ये यदा तदा स्त्रीः खलु गर्भमेति ॥४॥

उपजाति० ॥ स्त्रीगर्भधारणयोग कहते हैं। लग्नसे वा चन्द्रमासे ९। ५। १। ४। ७। १० स्थानमें जो शुभ ग्रह होवें ३। ६। ११ स्थानमें पाप ग्रह होवें अथवा विषम नवांशकमें चन्द्रमा होवे; लग्नका स्वामी बलयुक्त होवे तो स्त्री गर्भ धारण करती है ॥ ४ ॥

कललपिंडांकुरास्थित्वगंगेरुहस्मृतिर्भृगूद्वेगजन्मादिमासा-
त्क्रमात् ॥ भृगुकुजेज्यार्कचन्द्रार्किचन्द्रात्मजोदयशीतां-
शुचंडांशवोऽधीश्वराः ॥ ५ ॥

दण्डक० ॥ गर्भमासेश कहते हैं। प्रथम मासमें कलल अर्थात् शुक्रशोणितमिश्रित शुक्रस्वामी है; द्वितीयमासमें कठोर कुजस्वामी है, तृतीयमासमें हस्तादि अंगोंकी उत्पत्ति बृहस्पतिस्वामी है, चतुर्थमासमें हड्डियोंकी उत्पत्ति रविस्वामी है, पंचममासमें चर्मोत्पत्ति चन्द्रमा स्वामी है, षष्ठमासमें रोमोंकी उत्पत्ति शनिस्वामी है, सप्तममासमें चैतन्य बुधस्वामी है, अष्टममासमें मातृभक्षित वस्तुका नालद्वारा करके भोजन गर्भाधान लग्नेश स्वामी है, नवममासमें उद्भ्रम अर्थात् उद्वेजन चन्द्रमा स्वामी है, दशममासमें प्रसव सूर्य स्वामी है ॥ ५ ॥

आद्यादिमासदशके मासाधीशाः प्रकीर्तिताः ॥
शुभाशुभं च मासेषु मासेशसदृशं वदेत् ॥ ६ ॥

अनुष्टुप्० ॥ आदिसे लेके दश मासोंमें यह अधीश कहे हैं। आधानलग्नका विचार करके मासेशके समान गर्भमें शुभाशुभ कहना अर्थात् स्राव वा पुष्ट कहना ॥ ६ ॥

खलखेटद्वयमध्यगौ यदा तनुचन्द्रौ शुभदृष्टिदूरितौ ॥
युगपद्वा पृथगेव वा वधूः सह गर्भेण विपद्यते तदा ॥ ७ ॥

त्रिष्टुप्० ॥ गर्भिणीमृत्युयोग कहते हैं। शुभग्रहोंकी दृष्टिवर्जित पापग्रहोंके बीचमें लग्न चन्द्रमा होवे अथवा चन्द्रमा लग्न पृथक् पृथक् पापग्रहोंके बीचमें होवे शुभग्रहकी दृष्टि नहीं हो तो बली ग्रहके मासमें गर्भिणी मरती है ॥ ७ ॥

खलखेटे शशिनः सुखालये तनुतो वाष्टमगे धरात्मजे ॥
व्ययतुर्यस्थितयोः कुजार्कयोर्विबलेऽब्जे निधनं वदेत्तदा ॥ ८ ॥

त्रिष्टुप्० ॥ पुनः गर्भिणीमृत्युयोगत्रय कहते हैं। लग्नसे वा चन्द्रमासे चतुर्थस्थानमें पापग्रह होवे मंगल अष्टममें होवे १, अथवा चतुर्थ भौम द्वादश सूर्य क्षीणचन्द्रमा होवे २, अथवा द्वादश भौम चतुर्थ सूर्य क्षीणचन्द्र होवे ३, आधान लग्नमें इनमेंसे कोई योगभी होवे तो गर्भिणी मरती है ॥ ८ ॥

उदयास्तगयोर्भौमसूर्ययोः शस्त्रकृन्मृतिः ॥
मासाधीशे च विबले तत्कालं स्खलितं वदेत् ॥ ९ ॥

अनुष्टुप्० ॥ शस्त्रसे मृति और गर्भस्राव योगभी कहते हैं। लग्नमें मंगल सप्तममें सूर्य होय तो गर्भिणीको शस्त्रसे मृत्यु कहना अथवा कललादि मासाधीश दूसरे ग्रहकरके जीता होवे अर्थात् केतु उल्कासे अभिहत होवे तो तिसके मासमें गर्भस्राव कहना ॥ ९ ॥

सौम्यर्क्षांशकगौ कुजार्कजौ यदि दन्तैः सह जातको भवेत् ॥
स्वर्क्षेंऽब्जे तनुगे च कुब्जको यदि सौरारसमीक्षिते तदा ॥ १० ॥

विषमवृ० ॥ सदन्त, कुब्जयोग कहते हैं। जो शनि मंगल कन्य मिथुनके

हों अथवा कन्या मिथुन नवांशकमें हों तो गर्भहीसे जमे दन्तोंसहित पैदा होवे। कर्कराशिका लग्नमें चंद्रमा हो और शनि मंगल देखें तो कुब्ज पैदा होवे ॥ १० ॥

पृथुरोमकराशिगे यदा तनुगे सौरिकुजेन्दुमीक्षिते ॥
पंगुः स्यादिह निश्चितं तदा जगदुर्गर्गवराहकादयः ॥ ११ ॥

वियोगिनीवृ० ॥ पादहीनयोग कहते हैं। जो मीनलग्न होवे शनि कुज चन्द्रमा देखे तो निःसंदेह पादहीन पैदा होता है इस प्रकार गर्गवराहमिहिरादि आचार्य कहते हैं ॥ ११ ॥

तनुचन्द्रोपगतैः शुभग्रहैः स्मरखांबुद्रविणत्रिकोणगैः ॥
खलखेटैः सहजायगैर्यदा खलु गर्भोऽस्ति सुखी रवीक्षितः ॥ १२ ॥

त्रिष्टुप्० ॥ गर्भपुष्टियोग कहते हैं। लग्नमें शुभग्रह हों अथवा चन्द्रमाके साथ शुभ ग्रह हों वा दोनोंके साथ शुभग्रह हों लग्नसे अथवा चन्द्रमासे शुभग्रह ७।१०।४।२।९।५ स्थानमें हों तृतीय एकादशमें लग्नसे अथवा चन्द्रमासे पापग्रह हों और जो लग्नचन्द्रमा सूर्यदृष्टियुक्त होवे तो गर्भ सुखी कहना ॥ १२ ॥

बलयुक्तौ स्वगृहांशके स्थितौ रविशुक्रौ चयवेश्मगौ यदा ॥
मनुजानां स्थितिरस्ति गर्भके वनितानां विधुभूमिजौ तथा ॥ १३ ॥

त्रिष्टुप्० ॥ निषेक वा जन्म वा प्रश्नलग्नसे पुरुष स्त्रीका ज्ञान कहते हैं। जो बलयुक्त रवि शुक्र स्वराशिके वा स्वनवांशकके ११ । ६ । ३ । १० स्थानमें हों तो गर्भमें पुरुषकी स्थिति कहना तिस प्रकार चन्द्रमा मंगल हों तो स्त्रीकी स्थिति कहना ॥ १३ ॥

विषमर्क्षांशकसंस्थिता यदा तनुजीवद्विजराजभास्कराः ॥
नरजन्मप्रकराः समांशके समराशौ वनिताजनिप्रदाः ॥ १४ ॥

त्रिष्टुप्० ॥ निषेकादि लग्नसे पुरुष स्त्री जाननेका योग कहते हैं । लग्न बृहस्पति चन्द्रमा सूर्य विषमराशियोंमें और विषमराशिके नवांशमें हों तो पुरुषजन्म कहना, और यह लग्न बृहस्पति चन्द्रमा सूर्य राशियोंमें समराशि नवांशोंमें हों तो स्त्रीजन्म देते हैं ॥ १४ ॥

विषमे गुरुभास्करौ नरं समभे भौमसितेन्दवः स्त्रियम् ॥
मिथुनास्वगजीवभास्करौ बुधदृष्टौ कुरुते हि पूरुषान् ॥ १५ ॥

वियोगिनीवृ० ॥ निषेकादि लग्नसे पुरुषस्त्रीज्ञान कहते हैं । गुरु, सूर्य विषम राशियोंमें हो तो पुरुषजन्म कहना, मंगल, शुक्र, चन्द्रमा, समराशियोंमें हों तो स्त्रीजन्म कहना, मिथुन धनुके नवांशमें बृहस्पति सूर्य हों बुध देखे तो पुरुषोंकी उत्पत्ति करते हैं ॥ १५ ॥

कन्याझषोपगतचन्द्रकुजाङ्गिरस्सु स्यातां स्त्रियौ तु यमलौ बुधवीक्षितेषु ॥ चेदुत्क्रमत्र युगमत्र च मिश्रितः स्यादेकाबलैकपुरुषः शशिपुत्रदृष्ट्या ॥ १६ ॥

वसन्ततिलका० ॥ निषेकादिलग्नसे पुरुषस्त्रीज्ञान कहते हैं । कन्या मीनमें चन्द्रमा, मंगल, बृहस्पति हों बुध देखे तो दो स्त्री होवें, दोनों योग मिश्रित अर्थात् रलमिल हों बुध देखे तो एक स्त्री एक पुरुष जन्म होवे ॥ १६ ॥

ओजानोजगतौ दिनेशशशिनौ वा सौम्यसौरौ तथा ।
भौमार्कौ यदि पश्यतो निजभतोऽन्योन्यं हि षण्ढोद्भवः ॥
ओजे लग्नविधू समासमगतौ चेच्चन्द्रसौम्यौ कुजः ।
पश्येद्वा विषमांशके शशिसितौ लग्नं च षण्ढास्त्रयः ॥ १७ ॥

शार्दूलविक्रीडित० ॥ क्लीबयोग कहते हैं । विषमराशिमें सूर्य समराशिमें चन्द्रमा हो और परस्पर एक दूसरेको देखे अर्थात् समराशिका चन्द्रमा विषम राशिके सूर्यको देखे विषमराशिका सूर्य समराशिके चन्द्रमाको देखे १, अथवा विषमराशिमें बुध समराशिमें शनि हो परस्पर एक दूसरेको देखे २, वा विषमराशिमें मंगल, समराशिमें सूर्य हो परस्पर एक दूसरेको देखे तो निश्चय क्लीबोत्पत्ति होती है ३, लग्न चन्द्रमा विषमराशिमें हों समराशिका मंगल देखे ४, वा समराशिमें चन्द्रमा विषमराशिमें बुध हो मंगल देखे ५, वा चन्द्रमा शुक्र लग्न विषमराशियोंके नवांशकमें हो ६ तो यह तीन योगभी क्लीब होते हैं ॥ १७ ॥

जीवार्कौ विषमर्क्षके नरं समभे भौमसितेन्दवः स्त्रियम् ॥
द्व्यङ्गस्था बुधदृष्टियोगतो नियमात्ते यमलं प्रकुर्वते ॥ १८ ॥

वैतालीय० ॥ पुंस्त्रीज्ञान कहते हैं । विषमराशिमें बृहस्पति सूर्य हों तो पुरुष पैदा होता है, समराशिमें मंगल शुक्र चन्द्रमा हों तो स्त्री पैदा होती है यहां नवांशमें कोई प्रयोजन नहीं यह ग्रह द्विस्वभाव राशिमें हों, बुध देखे तो अपने पक्षमें यमल पैदा करते हैं अर्थात् मिथुन धनु नर हैं कन्या मीन स्त्री हैं मिथुन धनुके नवांशमें बृहस्पति सूर्य हों बुध देखे तो दो पुरुषोंका जन्म होता है कन्या मीन नवांशकमें भौम शुक्र चंद्रमा हों बुध देखे तो दो स्त्री पैदा होती हैं, दोनोंके मिश्रित होनेमें कन्या और पुरुष पैदा होता है ॥ १८ ॥

उदयस्थे सबले च वाक्पतौ सुतधर्मालयसंस्थितेऽपि वा ॥
विषमर्क्षे तनुतस्तनुं विना रविजे वा सुतजन्म चादिशेत् ॥ १९ ॥

त्रिष्टुप्० ॥ पुंजन्मज्ञान कहते हैं । बलवान् बृहस्पति आधानलग्नमें वा पृच्छालग्नमें हो वा पंचम नवम स्थानमें हो अथवा आधानलग्नको पृच्छा-लग्नको छोडकरके शनि लग्नसे विषम राशिमें होवे तो पुरुषजन्म कहना ॥ १९ ॥

अवलोक्य ग्रहजं बलं ततः पुरुषं वा वनितां वदेद्बुधः ॥
इति योगा विफला विबीजिनां विदृशामिन्दुमरीचयो यथा ॥ २० ॥

इति श्रीजयदेवकृतायां जातकचन्द्रिकायां निषेकाध्यायस्तृतीयः ॥ ३ ॥

त्रिष्टुप्० ॥ पण्डित ग्रहोंके बलको देखकरके तिसके उपरान्त पुरुषजन्म वा स्त्री जन्म कहे, क्लीबोंको यह योग निष्फल होते हैं; अन्धे मनुष्योंको चन्द्र-माके किरण जैसे ॥ २० ॥

इति श्रीकेशवानन्दविरचितायां जातकचन्द्रिकाभाषायां निषेकाध्यायस्तृतीयः ॥ ३ ॥

विलग्नभं नो शशिनेक्षमाणे पितुः परोक्षस्य च जातकः स्यात् ॥
मध्ये ज्ञभृग्वोरथवा शशांके तनौ शनौ वास्तगृहे महीजे ॥ १ ॥

उपजाति० ॥ अथ सूतिकाध्याय पितृपरोक्ष योग कहते हैं । चन्द्रमा लग्नको न देखे १, अथवा बुध शुक्रके बीचमें चंद्रमा हो २, वा लग्नमें शनि

हो ३ वा सप्तम मंगल हो ४ तो पिताके परोक्ष जातक पैदा होता है ॥ १ ॥

क्रिये हरौ वृषोदये स्थिते कुजेऽथवा शनौ ॥
यदा तदा च जातको भवेद्धि नालवेष्टितः ॥ २ ॥

नगस्वरूपिणी० ॥ नालवेष्टितज्ञान कहते हैं । जो लग्नमें मेष सिंह वृषका मंगल हो वा शनि हो तो बालक नालवेष्टित होता है । परन्तु लग्नका नवांशराशि 'शिरोमुखं बाहु' इत्यादि कालपुरुषके जिस अंगमें हो उस अंगमें नालवेष्टित होवे ॥ २ ॥

चतुष्पदर्क्षे च रवौ सवीर्यैः शेषैर्द्विदेहोपगतैर्ग्रहेन्द्रैः ॥
ध्रुवं भवेतां यमलौ च जातौ कोशेन युक्ताविति केचिदाहुः ॥ ३ ॥

उपजातिवृ० ॥ नालवेष्टितज्ञान कहते हैं । चतुष्पद राशिमें अर्थात् मेष वृष सिंह धनु मकरके पूर्वदलमें सूर्य हो बलिष्ठ होके शेषग्रह द्विस्वभाव राशिमें हों तो निश्चय हैं एक नालसे वेष्टित दो बालक पैदा होते हैं इस तरह कोई आचार्य कहते हैं ॥ ३ ॥

लग्नाच्च केन्द्रगतखेटदिशं दिशंति द्वारं जनुर्भवनजं तदभावके वा ॥ लग्नर्क्षादिग्भवति वा सकलग्रहेन्द्रा सा या भवेदिति वदेत्सकलं विचार्य ॥ ४ ॥

वसन्ततिलका० ॥ सूतिकागृहद्वारज्ञान कहते हैं । लग्नसे केन्द्रमें जो ग्रह हो उसकी दिशामें सूतिकागृहद्वार कहना 'प्राच्यादीशाः सूर्यशुक्रारराहु' इत्यादि पूर्वोक्त हैं । जब बहुत ग्रह केन्द्रमें हों तो उनमेंसे जो बलवान् हो उसकी दिशामें जन्मगृहद्वार कहना, जब बहुत ग्रह केन्द्रमें कोई ग्रह न हो लग्नकी दिशामें जन्मगृहद्वार कहना 'प्राच्यादिनाथाः क्रियतः क्रमेण' इत्यादि पूर्वोक्त है वा सब ग्रहोंमें जो बलिष्ठ हो उसकी दिशामें जनुगृहद्वार होवे एवं सब विचारके कहना ॥ ४ ॥

सूर्ये बलेन सहितेऽदृढमिन्धनाढ्यं नाव्यं विधौ खलु हुताशहतं महीजे ॥ ज्ञे चित्रितं सुरगुरौ दृढमासुरेज्ये रम्यं नवं त्वथ शनौ भवनं पुराणम् ॥ ५ ॥

वसन्ततिलका० ॥ सूतिकागृहस्वरूपज्ञान कहते हैं । बलवान् सूर्यसे अदृढ अर्थात् मजबूत नहीं और लकडियोंसे युक्त गृह, बलिष्ठ चन्द्रमासे नूतन लिपा हुआ गृह, बलिष्ठ मंगलसे अग्निदग्धगृह, बलिष्ठ बुधसे चित्रगृह, बलिष्ठ बृहस्पतिसे मजबूत गृह, बलिष्ठ शुक्रसे रमणीय नूतनगृह, बलिष्ठ शनिसे जीर्ण-गृह कहना ॥ ५ ॥

मेषालिकर्कघटकुम्भभ ऐन्द्रभागे जीवज्ञवेश्मनि तथोत्तरभागके च ॥ नक्रे हरौ यमदिशासु वृषे प्रतीच्यां तद्वास्तुनीति वसतिं प्रवदेत्प्रसूत्याः ॥ ६ ॥

वसन्ततिलका० ॥ वास्तुसे सूतिकागृहज्ञान कहते हैं । मेष वृश्चिक कर्कट तुला कुम्भ राशि लग्नमें हों वा इनका नवांश हो तो वास्तुसे पूर्वभागमें, धनु मीन मिथुन कन्या लग्नमें हो वा इनका नवांश हो तो वास्तुसे उत्तर भागमें, मकर सिंह लग्नमें हो वा इनका नवांश हो तो वास्तुसे दक्षिण दिशामें, वृषलग्न हो वा वृष नवांश हो तो वास्तुसे पश्चिम दिशामें सूतिकागृह कहना ॥ ६ ॥

द्वौ द्वौ क्रियादिन्द्रमुखादिदिक्षु द्विमूर्त्तयः कोणगता भवन्ति ॥
यो जन्मकाले सति लग्नवर्ती तद्दिग्गतं स्याच्छयनं प्रसूत्याः ॥ ७ ॥

उपजाति० ॥ सूतिकाशयनज्ञान कहते हैं । मेषसे दो दो राशि जन्मलग्नमें हों तो यथाक्रम पूर्वादि चतुर्दिशाओंमें, द्विस्वभाव राशि लग्नमें हो तो यथाक्रम आग्नेय्यादि चतुःकोणोंमें सूतिकाशयन कहना अर्थात् मेष वृष लग्नसे गृहके पूर्वमें, मिथुन लग्नसे आग्नेयमें, कर्क सिंह लग्नसे दक्षिणमें, कन्या लग्नसे नैर्ऋत्यमें तुला वृश्चिक लग्नसे पश्चिममें, धनुर्लग्नसे वायव्यमें, मकर कुंभ लग्नसे उत्तरमें, मीन लग्नसे ईशानमें सूतिकाशयन कहना ॥ ७ ॥

लग्नचन्द्रान्तर्गतस्थैर्ग्रहैस्तत्रोपसूतिकाः ॥
चक्रोत्तरार्द्धेऽभ्यन्तःस्था दक्षिणार्धे तु बाह्यगाः ॥ ८ ॥

अनुष्टुप्० ॥ उपसूतिकाज्ञान कहते हैं । लग्नसे और चन्द्मापर्यन्त जितने ग्रह हों उतनेही उपसूतिका अर्थात् समीपवर्ती स्त्री बतलानी चाहिये ।

जितने ग्रह चक्रोत्तरार्द्धमें हों उतनी स्त्री भीतर और जितने ग्रह दक्षिणार्द्धमें हों उतनी स्त्री बाहर बतलानी चाहिये । जन्मलग्नके जितने अंश उदय हों उन अंशकोंको छोडकरके बाकी अंश लेके और द्वितीय तृतीय चतुर्थ पंचम षष्ठ और सप्तम राशिके उतने अंश लेने चाहिये जितने लग्नके उदय अंश छोडदिये गये यह चक्रोत्तरार्द्ध हुआ, शेष अंश सप्तमके और अष्टम नवम दशम एकादश द्वादश और जन्मलग्नके जितने अंश उदय हों उन सहित दक्षिणार्द्ध हुआ। विशेषविचार आगे श्लोकसे कहते हैं ॥ ८ ॥

स्वोच्चवक्रोपगैस्त्रिघ्नाः स्वस्थैर्द्विघ्नास्तदंशगैः ॥
तथैव ग्रहतुल्यं स्याद्वयोजातिस्वरूपकैः ॥ ९ ॥

अनुष्टुप्० ॥ उपसूतिकाज्ञान कहते हैं । अपने उच्चमें वक्रगतिसे जितने ग्रह हों उनको तिगुणा करके वर्गोत्तममें स्वनवांशमें स्वराशिके स्वद्रेष्काणमें जितने ग्रह हों उनको द्विगुणा करके जो संख्या हो वह संख्या उपसूतिका अर्थात् समीपवर्ती स्त्रियोंकी कहनी चाहिये तैसाही ग्रहोंके तुल्य अवस्था जाति स्वरूपभी उपसूतियोंका कहना ॥ ९ ॥

बालां पूर्णः शीतगुः सोमजोऽपि वृद्धां सौरिः कर्कशां भूमिपुत्रः ॥
आदित्येज्यौ सुप्रसूतां भृगुश्च कुर्वाते स्त्रीं कर्कशां चापि वृद्धाम् १०॥

शालिनी० ॥ उपसूतिकास्वरूपज्ञान कहते हैं । 'लग्नाच्चन्द्रान्तर्गतस्थैः' पूर्वोक्त । पूर्णचन्द्रमा और बुध हो तो बाला स्त्री, शनि हो तो वृद्धा, मंगल हो तो कलहशीला, सूर्य वा बृहस्पति हो तो सुन्दर सन्ततिवती, शुक्र हो तो कलहप्रिया और वृद्धाभी स्त्री कहना 'आषोडशाद्भवेद्बाला तरुणी त्रिंशका मता। पंचपंचाशका प्रौढा नारी वृद्धा ततः परम् ॥ ' ॥ १० ॥

यस्मिन् राशौ भास्करस्तद्दिशि स्याद्दीपस्थानं सूतिकावेश्मनीह ॥
लग्नारंभे वर्तिका पूर्णदेहा मध्ये त्वर्द्धा स्वल्पशेषाऽवसाने ॥ ११ ॥

शालिनी० ॥ दीपदिशावर्तीस्वरूपज्ञान कहते हैं । जिस राशिमें सूर्य हो उस राशिकी दिशामें 'प्राच्यादिनाथः क्रियतः क्रमेण' पूर्वोक्त है । सूतिका-

गृहमें दीपकस्थान कहना । कोई कहते हैं सूर्य आठ प्रहरोंमें पूर्वादि आठ दिशाओंमें घूमता है संचारवशसे जिस दिशामें उस समय सूर्य हो सूतिकागृहमध्ये उस दिशामें दीपक कहना, लग्नके आरम्भमें अर्थात् लग्न दश अंश भीतर हो तो वर्ती पूर्णदेहा अर्थात् तत्क्षणमें प्रज्वलित की गई कहना, लग्नके मध्यमें अर्थात् ग्यारह अंशसे और बीस अंश भीतर लग्न हो तो अर्द्धदग्धवर्ती, लग्नके अन्तमें अर्थात् इक्कीस अंशसे तीस अंशपर्यन्त लग्न हो तो अल्पशेषवर्ती कहना ॥ ११ ॥

चरर्क्षगे रवौ तदा चरं प्रदीपकं वदेत् ॥
स्थिरर्क्षभे स्थितं वदेद्विदेहभे द्विधा तदा ॥ १२ ॥

नगस्वरूपिणी० ॥ दीपस्वभावज्ञान कहते हैं । चरराशिमें सूर्य हो तो चाल्यमान, स्थिरराशिमें सूर्य हो तो एक स्थानमें स्थित, द्विस्वभावराशिमें सूर्य हो तो चलास्थिर (हस्तमें स्थित) दीपक कहना ॥ १२ ॥

लग्ने चरे चरो दीपः स्थिरे स्वस्थानसंस्थितः ॥
द्विदेहभे करस्थः स्यादिति केचिद्बुधा जगुः ॥ १३ ॥

अनुष्टुप्० ॥ चरलग्न हो तो चलाया जाता हुआ, स्थिरलग्न हो तो अपने स्थानमें उपस्थित, द्विस्वभावलग्न हो तो हाथमें दीपक कहना ॥ १३ ॥

राश्यादिके चन्द्रमसि प्रदीपस्तैलेन पूर्णोऽस्ति वदेद्बुधाग्र्यः ॥
तथैव मध्यांतगते शशांके मध्यत्वमल्पत्वमुपैति दीपः ॥ १४ ॥

उपजातिवृ० ॥ तैलज्ञान कहते हैं । राशिके आदिमें अर्थात् दश अंशके भीतर चन्द्रमा हो तो तेलसे परिपूर्ण, वैसाही राशिके मध्यमें अर्थात् ग्यारह अंशसे ऊपर बीस अंशके भीतर चन्द्रमा हो तो दीपार्द्धतेल, राशिके अन्तमें अर्थात् इक्कीस अंशसे तीस अंशके भीतर चन्द्रमा हो तो स्वल्पतेल दीपकमें पण्डितवर कहे ॥ १४ ॥

तैलेन पूर्णः प्रथमे दृकाणे त्वर्द्धो द्वितीये च तृतीयकेऽल्पः ॥
लग्नेशवर्द्णकरूपकेन तुल्यं स्वरूपं खलु वर्तिकायाः ॥ १५ ॥

इन्द्रवज्रावृ० ॥ तैल और वर्तीस्वरूपज्ञान कहते हैं । लग्नका आदि द्रेष्काण हो तो तैलसे पूर्ण, द्वितीय द्रेष्काण हो तो तैलसे अर्ध, तृतीय द्रेष्काण हो तो तैलस्वल्प दीपक कहना 'स्वसप्तमसुतधर्मेशा द्रेष्काणास्ते प्रकीर्तिताः' पूर्वोक्त है। लग्नेशके वर्ण रूपके समान वर्तीस्वरूप निश्चय करके कहना ॥ १५ ॥

सत्त्वं रजश्चैव तमो गुणश्च त्रिंशांशके यस्य रविश्च तादृक् ॥
बलाढ्यखेटस्य समानमूर्तिर्जातं कुलं देशमलं विमृश्य ॥ १६ ॥

उपजातिवृ० ॥ जातकके गुण व स्वरूप कहते हैं । त्रिंशांशमें जिस राशिका सूर्य हो उस राशिका सत्त्वरजस्तमोगुणमध्ये जो गुण हो वह गुण जातकका कहना जाति और कुल देवता अत्यन्त विचार करके बलिष्ठग्रहके समान जातकका स्वरूप कहना ॥ १६ ॥

सत्त्वं सुरेज्यार्ककलाधराश्च रजः सितज्ञो तम आर्किभौमौ ॥
ग्रहाः प्रयच्छंति हि जातकानां निजं निजं सत्त्वगुणादिकं च ॥ १७ ॥

उपजातिवृ० ॥ सत्त्वादिगुणज्ञान कहते हैं । बृहस्पति सूर्य चंद्रमा बलिष्ठ हों तो सत्त्वगुण, शुक्र बुध बलिष्ठ हों तो रजोगुण, शनि मंगल बलिष्ठ हों तो तमोगुण एवं ग्रह जातकोंको अपने अपने सत्त्वादि गुणको निश्चय देते हैं १७॥

सपापोऽर्कयुक्तः क्षपानायकश्चेद्विलग्नं च चन्द्रं न वा पश्यतीज्यः ॥
न सार्कं विधुं पश्यतीज्योऽथवा चेत्तदा जायते जातको जारपुत्रः १८

भुजङ्गप्रयात० ॥ जारपुत्रज्ञान कहते हैं । जो पापग्रहसे और सूर्यसे युक्त चन्द्रमाको गुरु न देखे अथवा लग्नमें चन्द्रमाको गुरु न देखे अथवा लग्न चन्द्रमा अलग अलग हों गुरु न देखे अथवा सूर्ययुक्त चन्द्रमा हो गुरु न देखे तो जातक जारपुत्र पैदा होता है ॥ १८ ॥

गुरुक्षेत्रगते चन्द्रे तद्युक्ते वाऽन्यराशिगे ॥
तद्द्रेक्काणे तदंशे वा न परैर्जात इष्यते ॥ १९ ॥

अनुष्टुप्० ॥ जारपुत्रयोगभंगज्ञान कहते हैं । जो बृहस्पतिके राशि ९।१२ में चन्द्रमा हो अथवा बृहस्पतियुक्त चन्द्रमा हो अथवा जनुःकुण्डलीमें

और राशिकाभी चन्द्रमा द्रेष्काणमें अथवा नवांशमें बृहस्पतिके राशि ९ । १२ का हो तो जारजात नहीं होता है ॥ १९ ॥

उदयांशाधिपवद्वपुर्भवेदथवा वीर्ययुतग्रहेन्द्रवत् ॥
अथवा सेन्दुनवांशनाथवद्वपुरित्येव वदेद्विमृश्य च ॥ २० ॥

इति श्रीजयदेवकृतायां जातकचन्द्रिकायां सूतिकाध्यायश्चतुर्थः ॥ ४ ॥

त्रिष्टुप्० ॥ शरीरज्ञान कहते हैं । नवांश लग्नके स्वामीके तुल्य अथवा बलिष्ठ ग्रहके तुल्य नवांशकुण्डलीमें चन्द्रमा जिस राशिका हो उस राशिके अधिपतिके तुल्य जातककी शरीरलक्षण इसही तरह विचार करके गणक कहे। ग्रहोंका स्वरूपादिवर्णन पहिले कहा गया है ॥ २० ॥

इति श्रीकेशवानन्दविरचितायां जातकचन्द्रिकाभाषायां सूतिकाध्यायश्चतुर्थः ॥ ४ ॥

शशिन्यरौ विनाशगे खलेक्षिते मृतिर्द्रुतम् ॥
शुभेक्षिते समाष्टके शुभाशुभैस्तदर्धके ॥ १ ॥

नगस्वरूपिणी० ॥ अथ अरिष्टाध्यायः । मृत्युयोग कहते हैं । जो चंद्रमा छठे आठवें स्थानमें हो पापग्रह देखे तो शीघ्रही जातककी मृत्यु होती है, शुभग्रह देखे तो आठवें वर्ष मृत्यु, शुभ, पाप ग्रह देखे तो चौथे वर्ष मृत्यु होती है, चन्द्रमा छठे आठवें स्थानमें हो कोई ग्रह न देखे शुभग्रहकी राशिमें हो वा पापग्रहकी राशिमें हो अथवा शुभग्रहसंयुक्त हो तो मृत्यु नहीं होती, तैसाही कृष्णपक्षमें दिनका जन्म हो शुक्लपक्षमें रात्रिका जन्म हो और छठे आठवें स्थानमेंभी चन्द्रमा हो शुभाशुभ ग्रह देखेभी तौभी मृत्यु नहीं देता ॥ १ ॥

चन्द्रवच्छुभखगाः खलेक्षिता वक्रगाश्च शुभदृग्युता न चेत् ॥
जातकस्थितिरिहैकमासके लग्नपः खलयुतोऽस्तगोऽथवा ॥ २ ॥

रथोद्धतावृ० ॥ योगान्तर कहते हैं । यदि शुभग्रह प्रत्येक वा सभी षष्ठ अष्टम स्थानमें हों वक्रगाः (अस्तमयाः) अर्थात् बलयुक्त होके पापग्रह देखे शुभग्रह न देखे अथवा लग्नाधिपति पापसंयुक्त सप्तममें हो तो इस योगमें जातककी आयु एक मासकी होती है ॥ २ ॥

संध्याकाले कर्कराशेश्च होराराश्यंत्यस्थैः पापखेटैर्मृतिः स्यात् ॥
प्रत्येकं चेत्सेन्दुपापैर्नभोगैः केन्द्रस्थैर्वा जातको मृत्युमेति ॥ ३ ॥

शालिनीवृ०॥ योगान्तर कहते हैं । अर्द्धास्त सूर्यसे तारोंके उदय होनेतक सायंसन्ध्या, तारोंके लुप्त होनेसे सूर्यार्द्धोदयपर्यन्त प्रातःसन्ध्या, सन्ध्यासमयमें कर्क राशिकी होरा हो नवम नवांशमें पापग्रहोंसे जातक मृत्युको पहुँचता है, चन्द्रमासहित तीनों पापग्रह प्रत्येक केन्द्रमें हों तो जातक मृत्युको पहुँचता है ॥ ३ ॥

चक्रप्रागपरार्द्धजैः खलखगैः सौम्यैश्च कीटोदये ।
यद्वा कंटकरन्ध्रगैः खलखगैर्लग्ने विधौ निष्प्रभे ॥
यामित्रोदयरन्ध्ररिःफभगते पापेन युक्ते विधौ ।
सदृष्ट्या रहिते च कश्चिदपि सत्केन्द्रेन चेन्नैधनम् ॥ ४ ॥

शार्दूलविक्रीडित०॥ योगान्तर कहते हैं । लग्नका नवांशकरके जितने अंश नवांशमें भुक्त हों चतुर्थ राशिके उतनेही अंश छोडके बाकी उस चतुर्थ राशिके अंशकोंको लेकर पंचम षष्ठ सप्तम अष्टम नवम और जितने अंश चतुर्थके छोड दिये गये हैं उतने अंश दशम राशिके लेकर अपरार्द्ध समझना, दशम राशिके बाकी अंशकोंको लेकर एकादश द्वादश एक द्वि तीन और चतुर्थ राशिके जो अंश छोडदिये गये थे उनको लेकर पूर्वार्द्ध समझना। **उदाहरण**-- जैसा कि लग्न १३ अंश हो तो चतुर्थ राशिके १३ अंश छोडके बाकी १७ अंश और ५।६।७।८।९ और दशम राशिके १३ अंशतक अपरार्द्ध हुआ प्रत्येक दशमराशिके १७ अंश लेकर चतुर्थ राशिके १३ अंशतक पूर्वार्द्ध हुआ और ग्रह तात्कालिक स्पष्टांशसे विचारना चाहिये, चक्रके पूर्वभागमें पापग्रह हों पश्चिमभागमें शुभग्रह हों कर्कट वृश्चिक लग्न हो अथवा केन्द्र-रन्ध्र १।४।७। १०।८ स्थानमें पापग्रह हों· क्षीणचन्द्रमा लग्नमें हो अथवा सप्तम लग्न अष्टम द्वादशस्थानमें पापग्रहयुक्त चन्द्रमा हो शुभग्रकी दृष्टि न हो कोई शुभग्रह केन्द्रमेंभी न हो तो जातककी मृत्यु होती है ॥ ४ ॥

क्षीणेन्दौ व्ययसंस्थितेऽपि वै लग्नाष्टोपगतैरशोभनैः ॥
सौम्ये शून्यतरैश्च कंटकैः सद्यः स्यान्निधनं वदेद्बुधः ॥ ५ ॥

शुद्धविराट्० ॥ योगान्तर कहते हैं । क्षीणचन्द्रमा द्वादश स्थानमें पापग्रह लग्न अष्टममें शुभग्रह केन्द्रमें न हों तो निश्चय जातककी मृत्यु होती है यों गणक कहे ॥ ५ ॥

सोपरागखलखेटयुग्विधौ लग्नगे धरणिजेऽष्टमाश्रिते ॥
अम्बयैव सह मृत्युमाप्नुयाच्चन्द्रवद्दिनमणौ च शस्त्रजम् ॥ ६ ॥

रथोद्धतावृ० ॥ रिष्टान्तर कहते हैं । राहुग्रस्त चन्द्रमा शनियुक्त लग्नमें मंगल अष्टममें हो तो माताके साथ जातककी मृत्यु होती है, राहुग्रस्त सूर्य शनियुत लग्नमें मंगल अष्टममें हो तो माताकेही साथ जातककी शस्त्रसे मृत्यु होती है ॥ ६ ॥

क्षीणे शीतकरे विलग्नभगते केन्द्राष्टमस्थैः खलैः ।
पापान्तर्गतशीतगौ स्मरसुखाष्टस्थेऽथवा नैधनम् ॥
पापान्तर्गतलग्नगे शशधरे तुर्याष्टयामित्रगे ।
क्रूरे चेद्बलवद्दृशा विरहितं मृत्युर्जनन्या सह ॥ ७ ॥

शार्दूलविक्रीडित० ॥ रिष्टान्तर कहते हैं । क्षीणचन्द्रमा लग्नमें हो केंद्राष्टम १।४।७।१०।८ स्थानमें पापग्रह हों अथवा पापग्रहोंके मध्यस्थ चन्द्रमा ७।४।८ स्थानमें हो अथवा पापग्रहोंके मध्यस्थ लग्नमें चन्द्रमा हो पापग्रह ४।८।७ में हो, बलिष्ठ शुभग्रह न देखे तो माताके साथ जातककी मृत्यु होती है ऐसे चन्द्रमाको बलिष्ठ शुभग्रह देखे तो जातककी मृत्यु होती है माताकी मृत्यु नहीं होती ॥ ७ ॥

लग्ने रिःफे धर्मगे मृत्युगे च चन्द्रे सौरे चित्रभानौ महीजे ॥
शीघ्रं मृत्युं प्राप्नुयाज्जातकश्च देवाचार्यो नो भवेद्बलाढ्यः॥ ८ ॥

शालिनीवृ० ॥ रिष्टान्तर कहते हैं । लग्नमें चन्द्रमा, द्वादश शनि, नवममें सूर्य, अष्टममें मंगल हों, बृहस्पति बलयुक्त न हो तो जातक शीघ्रही मृत्युको प्राता है बलवान् बृहस्पति इनमेंसे किसहीको वा सभीको देखे तो मृत्यु नहीं

होती अर्थात् बलिष्ठ बृहस्पति पंचममें हो इन सबको देखे तो रिष्ट नहीं होता ८॥

पुत्रे कलत्रे नवमे विलग्ने रिःफेऽष्टमे पापयुते सुधांशौ ॥
मृत्युर्भवेद्भार्गवजीवसौम्यैर्नो चेद्बलाढ्यैर्युति वीक्षितेऽत्र ॥ ९ ॥

उपजातिवृ०॥ रिष्टान्तर कहते हैं । जो पापयुक्त क्षीणचन्द्रमा ५।७।९।१।१२।८ स्थानमें हो बलिष्ठ शुक्र बृहस्पति बुध इनमेंसे कोईभी चन्द्रमासे संयुक्त न हो वा न देखे तो जातककी मृत्यु होती है अर्थादेव युक्त वा दृष्ट चन्द्रमा हो तो रिष्टाभाव कहना ॥ ९ ॥

योगे यत्र च नावधिर्निगदितस्तस्मिन्बली यो ग्रह- ।
स्तद्राशिं हिमगौ गते स्वमथवा लग्नं च चारः क्रमात् ॥
यावद्भिर्दिवसैर्बलेन सहिते पापग्रहालोकिते ।
तावद्भिर्मरणं वदेद्बुधजनः संवत्सराभ्यन्तरे ॥ १० ॥

इति श्रीजयदेवकृतायां जातकचन्द्रिकायामरिष्टाध्यायः पंचमः ॥ ५ ॥

शार्दूलविक्रीडित०॥ नहीं कहा गया है मरणकाल जिन्होंमें ऐसे रिष्टयोग कहते हैं । जिस योगमें मृत्युसमय नहीं कहा है उस योगके करनेवाले ग्रहोंके मध्ये जो बली हो उस बली ग्रहके राशिमें चारवशसे जब चन्द्रमा आवे अथवा जितने दिनोंमें पापग्रह दृष्टियुत बलिष्ठ चन्द्रमा चारवशसे अपने राशि ४ में वा लग्नमें आवे उतने दिनोंसें संवत्सरके भीतर बुधजन जातककी मृत्यु कहे ॥ १० ॥

इति श्रीकेशवानन्दविरचितायां जातकचन्द्रिकाभाषायां अरिष्टाध्यायः पंचमः ॥ ५ ॥

सर्वानिमान्वीर्ययुतः सुरेज्यो लग्नस्थितश्चेच्छमयेदरिष्टान् ॥
एको बहून्पापचयांश्च दुष्टान्यथा गिरीशाकलितप्रणामः ॥ १ ॥

उपजातिवृ०॥ अरिष्टभंगाध्याय कहते हैं । बलिष्ठ बृहस्पति जो लग्नमें हो तो यह पूर्वोक्त सब अरिष्टोंको नाश करता है जैसा महादेवको किया गया प्रणाम बहुत दुष्ट पापोंके समूहको नाश करता है ॥ १ ॥

लग्नपश्चेद्बली पापदृग्वर्जितः केन्द्रगैः सौम्यखेटैस्तथा वीक्षितः ॥
मृत्युपाकं विधूयाशु दीर्घायुषं श्रीसुखैश्वर्ययुक्तं करोत्युद्भवे ॥ २ ॥

स्रग्विणी० ॥ जन्मकालमें जो पापग्रह दृष्टिरहित बलवान् लग्नका स्वामी हो केन्द्रस्थित शुभग्रहोंसे दृष्ट हो तो मृत्यु दूर करके शीघ्र दीर्घायु सम्पत्ति सुख ऐश्वर्यको करता है ॥ २ ॥

उदयादपि मृत्युसंस्थितो गुरुशशिजर्क्षदृकाणगो यदा ॥
रजनीशो विदधात्यसंशयं परिरक्षां खलु जातकस्य च ॥ ३ ॥

वियोगिनीवृ० ॥ गुरु बुधके राशिके द्रेष्काणमें स्थित लग्नसे अष्टम स्थानमें चन्द्रमा हो तो निश्चय जातककी रक्षाको निःसन्देह करता है ॥ ३ ॥

सौम्यर्क्षगः पूर्णकलेवरश्च कलाधरः सौम्यखगांतगश्च ॥
अरिष्टभंगं प्रकरोत्यशेषं विशेषतो भार्गवदृष्टियोगात् ॥ ४ ॥

उपजातिवृ० ॥ शुभग्रहकी राशिमें स्थित अथवा शुभग्रहोंके मध्य पूर्ण चन्द्रमा विशेषकरके शुक्रकी दृष्टिसे सम्पूर्ण अरिष्टका नाश करता है ॥ ४ ॥

सौम्योशनोदेवपुरोहितानामेकोऽपि चेत्केन्द्रगतो ग्रहेन्द्रः ॥
तत्रापि चेत्सौम्ययुगीक्षितश्च सद्यो भवेन्मृत्युभयापहारी ॥ ५ ॥

इन्द्रवज्रावृ० ॥ बुध शुक्र बृहस्पति सभी वा एकभी बलिष्ठ होके केन्द्रमें स्थित हो और शुभग्रहयुक्त अथवा दृष्ट हो तो तत्कालही मृत्युके भयको नाश करता है ॥ ५ ॥

सूतौ रिपुस्थानगतोऽपि चन्द्रो जीवज्ञशुक्राः स्वदृकाणसंस्थाः ॥
जातं शिशुं रक्षति सुप्रयत्नान्मन्त्रो यथा भीमभुजंगदष्टम् ॥ ६ ॥

इन्द्रवज्रा० ॥ जन्मकालमें षष्ठस्थानस्थितभी चन्द्रमा गुरु बुध शुक्र अपने अपने द्रेष्काणमें हों तो प्रयत्नसे जातकको रक्षा करता है जैसा मन्त्र भयानक सर्पके दंशेको ॥ ६ ॥

सम्पूर्णदेहः शशभृद्यदा स्यात्सौम्यद्वयान्तर्गतवांश्च यत्र ॥
प्रसूतिकालेऽखिलरिष्टहंता भुजङ्गसंघस्य यथा गरुत्मान् ॥ ७ ॥

उपजाति०॥ जन्मकालमें जो पूर्णचन्द्रमा किसी स्थानमें सौम्य ग्रहोंके मध्यमें हो तो सम्पूर्ण अरिष्टका नाश करता है जैसा गरुड सर्पोंके समूहको ॥ ७॥

वलक्षपक्षेऽपि च पूर्णदेहश्चन्द्रो निशासामयिकप्रसूतौ ॥
रन्ध्रारिभावाश्रयगः कदाचिज्जातस्य मृत्योर्भयदो भवेन्न ॥ ८ ॥

उपजाति०॥ शुक्लपक्षमें रात्रिका जन्म हो पूर्णचन्द्रमा अष्टम षष्ठ अथवा द्वादश स्थानमेंभी हो तो कभी जातकको मृत्युभय नहीं देता है ॥ ८ ॥

स्फुरन्मयूखप्रकरेऽमरेशपुरोहिते वीर्ययुतेऽपि यत्र ॥
प्रसूतिकालेऽपि च कंटकस्थे निःशेषकष्टं समुपैति नाशम् ॥ ९ ॥

उपजाति०॥ जन्मसमय उदयकालका बलिष्ठ बृहस्पति किसी स्थानमें हो अथवा केन्द्रमें हो तो सम्पूर्ण अरिष्टको नाश करता है ॥ ९ ॥

चन्द्राधिष्ठितराशीशः केन्द्रे वाथ शुभग्रहः ॥
निःशेषरिष्टहंतासौ पापौघस्य हरिर्यथा ॥ १० ॥

अनुष्टुप्०॥ चन्द्रमा जिस राशिका हो उस राशिका अथवा शुभग्रह केन्द्रमें हो तो सम्पूर्ण अरिष्टका नाश करता है जैसा नारायण पापोंके समूहका ॥ १० ॥

सौम्यालयस्था ज्ञगुरूशनोऽब्जाः सौम्यांशगाः सौम्यदृकाणगाश्चेत् ॥
अरिष्टयोगाः प्रशमं प्रयांति प्रदीपकं प्राप्य यथा पतंगाः ॥ ११ ॥

उपजाति०॥ बुध बृहस्पति शुक्र चन्द्रमा शुभग्रहके राशिमें अथवा नवांशमें अथवा द्रेष्काणमें हों तो अरिष्टयोग शान्त हो जाते हैं जैसे पतंग दीपकको पायकरके ॥ ११ ॥

पापाः प्रसूतौ यदि सौम्यवर्गे दृष्टाः शुभांशालयगैः शुभैश्चेत् ॥
निघ्नंत्यरिष्टं सकलं यथोक्तं यथा विरक्ता युवतिर्निजेशम् ॥ १२ ॥

उपजाति०॥ जो जन्मसमयमें पापग्रह सौम्यग्रहके राशिके हों और शुभग्रहके नवांशमें स्थित शुभग्रहोंसे दृष्ट हों तो पूर्वोक्त सम्पूर्ण अरिष्टको नाश करते हैं जैसी व्यभिचारिणी तरुणी (स्त्री) अपने पतिको ॥ १२ ॥

लग्नात्त्रिषष्ठायसमाश्रितश्चेद्दृष्टोऽपि खेटैः शुभसंज्ञकैश्च ॥
निहंत्यरिष्टं खलु सैंहिकेयः क्षणाद्यथा तूलचयं समीरः ॥ १३ ॥

उपजाति० ॥ जो लग्नसे ३।६।११ स्थानमें स्थित राहु हो और शुभग्रह देखे तो निश्चय अरिष्टको नाश करता है जैसा क्षणमें वायु कार्पासराशिको १३॥

शीर्षोदयर्क्षेष्वखिला नभोगा यत्र प्रसूतौ प्रकृतिस्थिताश्चेत् ॥
अशेषयोगाकलितं त्वरिष्टं विलीयते सर्पिरिवाग्निसंस्थम् ॥ १४ ॥

उपजाति० ॥ जन्मसमय जो शीर्षोदय ५।६।७।८।३।११।१२ राशिमें संपूर्ण ग्रह हों तो सर्वग्रहजनित रिष्ट दूर होताहै जैसा अग्निमें स्थित आज्य १४॥

यत्र प्रसूतौ विजयी ग्रहेन्द्रः शुभाभिधः शोभनवीक्षितश्च ॥
निहंत्यशेषान्निधनाख्ययोगान्महीरुहान्वातरवः प्रचण्डः ॥ १५ ॥

उपजाति० ॥ जन्मसमय जो युद्धसे पराजित शुभग्रह हो और उसको शुभग्रह देखे तो सम्पूर्ण मृत्युकारक योगोंको नाश करता है जैसा महावायुका वेग वृक्षोंको ॥ १५ ॥

प्रसूतिकाले यदि शीतभानुः शुभैर्नभोगैः परिवीक्ष्यमाणः ॥
अरिष्टकांस्तर्जयतीह योगान्यथा नृपो दुश्चरितांश्च पुंसः ॥ १६ ॥

उपेन्द्रवज्रा० ॥ जन्मसमयमें जो चन्द्रमा शुभग्रहोंकरके दृष्ट हो तो अरिष्ट योगोंको लिकावता है जैसा राजा कुकर्मी पुरुषोंको ॥ १६ ॥

केन्द्रादौ रवितो विधावधमता मध्यत्वमुत्कृष्टता ।
शीलज्ञानयशोवयोद्रविणताकौशल्यकानां क्रमात् ॥
अह्नि स्वांशसुहृल्लवांशकगते चन्द्रे सुरार्य्येक्षते ।
रात्रौ तद्वतिं भार्गवे क्षणगते सद्वित्तसौख्यान्वितम् ॥ १७ ॥

शार्दूलविक्रीडित० ॥ चन्द्रयोग कहते हैं । सूर्यसे चन्द्रमा केन्द्रमें हो तो विनय शास्त्रबोध यश यौवनादिभोग धन नैपुण्य अधम होते हैं, पणफरमें हो तो विनयादि सम होते हैं, आपोक्लिममें हो तो विनयादि उत्तम प्रकार होते हैं । दिनका जन्म हो चन्द्रमा अपने नवांशमें वा अपने अधिमित्रके नवांशमें हो बृह-

स्पति देखे अथवा रात्रिका जन्म हो चन्द्रमा अपने नवांशमें वा अपने अधिमित्रके नवांशमें हो शुक्र देखे तो पुरुष धनवान् सौख्यवान् होता है ॥ १७ ॥

चन्द्राद्वैरिकलत्रमृत्युषु शुभैश्चन्द्राधियोगास्त्रयः ।
शश्वत्सौख्यविभूतयो विरिपुभी रोगाश्च दीर्घायुषः ॥
एकस्मिन् बलपो भवेत्स सचिवो योगद्वये भूपति- ।
योगानां त्रितये लसद्गुणगणैः स्यादग्रगण्यो भुवि ॥ १८ ॥

शार्दूल० ॥ अधियोग कहते हैं । चन्द्रमासे षष्ठ सप्तम अष्टम स्थानमें बुध बृहस्पति शुक्र हों इन स्थानोंमेंसे ये ग्रह तीनों स्थानोंमें वा दो स्थानोंमें वा एकहीमें हों तो यह तीन अधियोग होते हैं, यह व्यासजीने सात प्रकारका कहा है चन्द्रमासे षष्ठस्थानमें सबही शुभग्रह हों तो १, सप्तममें हों तो २, अष्टममें हों तो ३, षष्ठ सप्तम स्थानमें हो तो ४, षष्ठ अष्टममें हों तो ५, सप्तम अष्टममें हों तो ६, षष्ठसप्तमाष्टममें हों तो ७, ऐसे अधियोगवाले पुरुष सदा सौख्यवान् ऐश्वर्यवान् शत्रुवर्जित निर्भयरोगवर्जित चिरंजीवी होते हैं अर्थादेव चन्द्रमासे इस प्रकार ६ । ७ । ८ स्थानमें पापग्रह हों तो पूर्वोक्त सौख्यादि फल नहीं होता, चन्द्रमासे इस प्रकार ६ । ७ । ८ स्थानमें शुभ पापग्रह हों तो पूर्वोक्त सौख्यादि फल मध्यम होता है, अधियोगमें एक ग्रह बलिष्ठ हो तो पूर्वोक्त सौख्यादियुक्त पुरुष मंत्री होता है, दो ग्रह बलिष्ठ हों तो पृथ्वीपति होता है, तीन ग्रह बलिष्ट हों तो पुरुष सद्गुणवान् पृथ्वीमें अग्रगण्य आशय कि चक्रवर्ती होता है ॥ १८ ॥

त्रिकोणगे गुरौ सुते निशाकरे यदा तदा ॥
कुजे च कर्मगेऽर्भका भवन्ति दीर्घजीविनः ॥ १९ ॥

इति श्रीजयदेवकृतायां जातकचान्द्रिकायां रिष्टभंगाध्यायः षष्ठः ॥ ६ ॥

नगस्वरूपिणी० ॥ दीर्घजीवियोग कहते हैं । जो त्रिकोण ५ । ९ स्थानमें बृहस्पति पंचम चंद्रमा दशम मंगल हो तो बालक चिरंजीवी होते हैं ॥ १९ ॥

इति श्रीकेशवानन्दविरचितायां जातकचन्द्रिकाभाषायामरिष्टभंगाध्यायः षष्ठः ॥ ६ ॥

हित्वा रविं व्ययगतैरनफाख्ययोगो द्रव्यस्थितैः शशधरात्सुन-
फाभिधः स्यात् स्वान्त्यस्थितैर्दुरुधरा किल; जन्मकाले केम-
द्रुमो व्ययधने यदि कोऽपि न स्यात् ॥ १ ॥

वसन्ततिलका० ॥ अनफा सुनफा दुरुधरा केमद्रुमयोगोंको कहते हैं । जो जन्मसमयमें चन्द्रमासे सूर्यके विना द्वादशस्थानमें पांचहीं ग्रह वा कोई ग्रह हो तो अनफा, द्वितीय स्थानमें हों तो सुनफा, द्वितीय द्वादशमें हों तो दुरुधरा, द्वादश द्वितीयमें कोई ग्रह न हो तो निश्चय है केमद्रुमयोग होता है ॥ १ ॥

चंद्रमा ग्रहयुक्तश्चेदथवा केन्द्रगो यदा ॥
केमद्रुमविपाकाश्च न भवन्ति हि जंतुनः ॥ २ ॥

अनुष्टुप्० ॥ केमद्रुमभंगयोग कहते हैं । जो चन्द्रमा ग्रहयुक्त हो अथवा केन्द्रमें हों तो केमद्रुमयोगका फल निश्चय है प्राणियोंको नहीं होता ॥ २ ॥

अनफायामगदः सुशीलवान्विषयी सौख्यकरः सुकीर्तिमान् ॥
सुनफायां स्वकृतार्थसंचयः पृथिवीपालवदेव कर्मसु ॥ ३ ॥

त्रिष्टुप्० ॥ अनफासुनफायोगफल कहतेहैं । जन्मकालमें अनफायोगसे पुरुष निरोगी सुशीलवान् भोगी सौख्ययुक्त कीर्तिमान् होता है, सुनफायोगमें अपने पौरुषसे धनसंग्रह करनेवाला और कर्म करनेके विषयमें राजाके समान होता है ॥ ३ ॥

स्वेष्टार्थभाक् च सुखवाहनदानवांश्च सद्भृत्यवान्दुरुधरा यदि
जन्मकाले ॥ केमद्रुमेऽतिमलिनो विसुखी च नीचः प्रेष्यः
खलश्च विधनो नृपजोऽपि जातः ॥ ४ ॥

वसन्ततिलका० ॥ दुरुधराकेमद्रुमयोगफल कहते हैं । जो जन्मकालमें दुरुधरायोग हो तो अपने प्रियधनोंको भोगनेवाला सुखी वाहनवाला दानी अच्छे सेवकोंवाला होता है, केमद्रुमयोगमें जो राजपुत्रभी पैदा हो तो अतिमलिन सुखवर्जित अपने कुलके अनुचित कर्म करनेवाला दूसरेका काम करनेवाला दुष्टस्वभाव धनहीन होता है ॥ ४ ॥

उत्साही सधनः प्रचण्डमतिमान्संदिग्धकर्मा नरः।
शौर्यौदार्ययुतो यदा क्षितिसुतो योगे प्रवृत्तस्तदा ॥
सूक्ष्मात्सूक्ष्मविचारवित्पटुमतिर्द्रव्यान्वितो मानवः।
सद्वाक्यः प्रथितो यदा शशिसुतस्तद्योगकर्त्ता भवेत् ॥ ५ ॥

शार्दूलवि०॥ अनफादियोगका विशेष फल कहते हैं। जो योगकारक मंगल हो तो उद्योगी धनी तीक्ष्ण बुद्धिमान् असमीक्षित कर्मकर्त्ता शौर्यवान् उदारचेता पुरुष होता है, जो बुध योग कर्ता हो तो सूक्ष्मसे सूक्ष्म विचारशील चतुर धनी सुन्दरवाणीवाला ख्यातिमान् पुरुष होता है ॥ ५ ॥

जीवश्चेद्बहुधान्यधर्मभाग्बहुसौख्यो नृपपूजितो भवेत् ॥
विषयासक्तमना रतिप्रियो भृगुजश्चेद्धनसंचयान्वितः ॥ ६ ॥

भद्रविराट्०॥ बृहस्पति योगकर्त्ता हो तो बहुत अन्नवान् धर्ममें तत्पर अनेक सौख्ययुक्त राजपूज्य पुरुष होता है, शुक्र योगकर्त्ता हो तो विषयभोगोंमें आसक्त स्त्रियोंमें लोल धनसंग्रहकर्त्ता पुरुष होता है ॥ ६ ॥

रविजश्चेत्परभूतिभाग्नरो बहुकर्मा सुगणेश्वरो भवेत् ॥
बहुखेटा यदि योगकारकाः खलु तत्तत्फलमेलनाद्वदेत् ॥ ७ ॥

त्रिष्टुप्०॥ शनि योगकर्त्ता हो तो दूसरेके ऐश्वर्य गृह स्त्री वाहन परिवारका भोगनेवाला नानाकार्यकर्त्ता बहुतोंका मालिक होता है, परंच २। ३। ४। ५ ग्रह योगकारक हों तो निश्चय उन ग्रहोंके पूर्वोक्त फलको संमेल करके कहना ॥ ७ ॥

सूर्यतो विविधुभिर्नभश्चरैर्द्वादशद्रविणभोभयस्थितैः ॥
वोशिवेश्युभयचारिनामतो दैवविद्भिरिह सम्मतं स्मृतम् ॥ ८ ॥

रथोद्धता०॥ अब सूर्ययोग कहते हैं। सूर्यसे चन्द्रमावर्जित ग्रह द्वादश स्थानमें हो तो वोशि, दूसरेमें हो तो वेशि, द्विर्द्वादशमें हो तो उभयचारी योग होता है. जातकशास्त्रमें आचार्योंने यह सम्मत कहा है ॥ ८ ॥

मन्दहग्भवति कष्टकारकः कुब्जतासहित आनताननः ॥
वोशियोग इह यस्य जन्मनि वाचि तस्य नियमो न कोऽपि हि ॥९॥

रथोद्धता०॥ वोशियोगफल कहते हैं। जिसका जन्ममें वोशियोग हो वह मन्दहष्टिवाला कष्टके कार्यको करनेवाला कुब्जी (कुबडिया) नम्र मुखवाला और तिसकी वाणी अप्रमाण निश्चय होती है ॥ ९ ॥

वाग्विलाससहितोऽलसभागी पुष्टपूर्वतनुमांश्च दयालुः ॥
तिर्यगक्षिगतिरस्य भवेच्चेद्वेशियोग इह जन्मनि यस्य ॥ १० ॥

स्वागता०॥ वेशियोगफल कहते हैं। जिसके जन्ममें वेशियोग हो वह रमणीयवचन बोलनेवाला आलस्ययुक्त बल पुष्टशरीर रूपावान् और तिसकी तिरछी दृष्टि होतीहै ॥ १० ॥

नात्युच्चः सरलहगर्थसंचयेन संयुक्तः समतनुवान्नरः सहिष्णुः ॥
स्थैर्यं स्याद्गुणगणसंयुतोऽसौ योगश्चेदुभयचरीह जन्मकाले ॥११॥

प्रहर्षिणी०॥ उभयचारी योगफल कहते हैं। जिसके जन्मसमयमें उभयचारी योग हो वह छोटा शरीर स्वच्छ दृष्टिवाला धनी सब अंगोंमे शोभनीय सहनशील सद्गुणवान् होता है ॥ ११ ॥

तीक्ष्णांशुः प्रकरोति चन्द्रसहितो यन्त्राश्मकृन्मानवम् ।
भौमेनापपरं बुधेन च बुधं सत्कीर्तिसौख्यान्वितम् ॥
देवेज्येन परक्रियं च विषयं शुक्रेण शस्त्रक्रियम् ।
सौरेणैकभसंस्थितो दिनमणिर्धातुक्रियाविज्जनम् ॥ १२ ॥

शार्दूलवि०॥ द्विग्रहयोग कहते हैं। सूर्य चन्द्रमाके साथ हो तो वह मनुष्य अनेक यन्त्र और पत्थरके कार्योंका करनेवाला होता है, मंगलयुक्त हो तो पापमें तत्पर, बुधयुक्त हो तो पण्डित और सुन्दर कीर्तिमान् सौख्ययुक्त, बृहस्पतियुक्त हो तो परकार्यतत्पर विषमस्वभावाला, शुक्रयुक्त हो तो खड्ग वगैरह शस्त्रोंकी क्रियाओंको जाननेवाला, शनियुक्त हो तो ताम्रादि धातुके काममें निपुण मनुष्यको करता है ॥ १२ ॥

चन्द्रोऽङ्गारेण युक्तो जनयति मनुजं पण्यवस्तुक्रयज्ञम् ।
सौम्येन ख्यातिभाजं प्रियवचनरतं वित्तवंतं सुशीलम् ॥
वागीशेन स्ववंशाधिकमचलधनं भार्गवेणाञ्चलज्ञम् ।
सौरेण स्वामिपार्श्वोज्झितझषनयनापुत्रमत्रोति चाहुः ॥ १३ ॥

स्रग्धरा०॥ चंद्रमा मंगलसे युक्त हो तो दूकानदारी वगैरह कामोंको जाननेवाला, बुधसंयुक्त हो तो प्रख्यात और प्रिय बोलनेवाला धनवान् सुशील, बृहस्पतियुक्त हो तो अपने वंशमें अग्रगण्य निश्चल धनवाला, शुक्रयुक्त हो तो वस्त्रके सम्पूर्ण क्रियाओंको जाननेवाला, शनियुक्त हो तो पतिका साथ छोड देनेवाली स्त्रीसे अर्थात् परघरवालीसे अर्थात् पैदा होवे इस योगमें पण्डितजन इस तरह कहते हैं ॥ १३ ॥

भौमः सौम्येन युक्तो व्यवहरति वणिक्कर्मभिर्बाहुयोद्धा ।
जीवेन क्षोणिपालो विविधनिगमविद्भूमिदेवो भवेद्वा ॥
शुक्रेण द्यूतकर्त्ता परयुवतिरतो दक्षिणो युद्धवेत्ता ।
मार्त्तण्डीयेन दुःखी ह्यनृतवचनभाग्जायते जातकोऽत्र ॥१४॥

स्रग्धरा०॥ मंगल बुधके साथ हो तो अनेक वस्तुके व्यापारमें तत्पर मल्लयुद्ध (कुश्ती) करनेवाला, बृहस्पतियुक्त हो तो पृथ्वीका पति नाना शास्त्रोंको जाननेवाला अथवा ब्राह्मण होता है, शुक्रसे युक्त हो तो द्यूतकर्म करनेवाला परस्त्रियोंमें आसक्त चतुर और युद्ध जाननेवाला, शनिसे युक्त हो तो दुःखभागी मिथ्या बोलनेवाला बालक ऐसे योगमें पैदा होता है ॥ १४ ॥

जीवेन युक्ते किल चन्द्रपुत्रे सङ्गीतविन्नृत्यरुचिश्च मल्लः ॥
शुक्रेण वाग्मी गणभूमिनाथः सौरेण मायाकलितश्च धूर्त्तः ॥१५॥

इन्द्रवज्रा०॥ बृहस्पतिसे युक्त बुध हो तो अच्छी गायनविद्याओंको जाननेवाला, नाचनेमें निपुण, कुश्ती करनेवाला, शुक्रसे युक्त हो तो वाक्पटु, बहुत मनुष्योंका और भूमिका स्वामी, शनिसे संयुक्त हो तो दूसरेके ठगनेमें चतुर गुरुजन प्रभृतियोंके वचनोंको लंघन करनेवाला होता है ॥ १५ ॥

सुरपूज्येऽसुरपूज्यसंयुते शुभविद्यो बहुदारभाग्धनी ॥
दिननाथात्मजसंयुते गुरौ क्षुरकर्मा घटकारकोऽथवा ॥ १६ ॥

त्रिष्टुप्॰॥ बृहस्पति शुक्रसे संयुक्त हो तो सुंदर विद्यावान् बहुत स्त्रियोंको सेवन करनेवाला धनी, शनिसे युक्त हो तो श्मश्रुकर्म करनेवाला अर्थात् निकृष्ट कर्म करनेवाला वा मृत्तिका वगैरहके कलशा आदि बनानेवाला होता है॥ १६॥

शुक्रसूर्यजसमागमोऽल्पदृक् चित्रपुस्तलिपिकर्मकृज्जनः ॥
स्त्रीसमाश्रयसमृद्धिमाप्नुयादेवमेव फलकं त्रिभिर्वदेत् ॥ १७ ॥

रथोद्धता॰॥ शुक्र शनिसे युक्त हो तो मन्ददृष्टिवाला चित्रकार पुस्तक वगैरहकी लेखन क्रियाओंको करनेवाला स्त्रीके आश्रयसे धनकी वृद्धिको पानेवाला होता है, दो स्थानोंसे द्विग्रह योग हो तो दोनों फल कहने, तीन स्थानोंमें हों तो तीनही फल कहने, तीन ग्रह साथ हों तो तीनोंके फल कहने ॥ १७ ॥

चतुरादिभिरेकर्क्षसंस्थितैर्गगनेचरैः ॥
प्रव्रज्याभिधयोगः स्याद्गृहिणीमतिदुःखदः ॥ १८ ॥

अनुष्टुप्॰॥ प्रव्रज्यायोग कहते हैं। एक राशिमें चार ग्रह अथवा ५। ६। ७ ग्रह स्थित हों तो प्रव्रज्यानाम योग घरवालीको अत्यन्त दुःख देनेवाला होता है ॥ १८ ॥

वन्याशनश्च कापाली बौद्धश्चैवैकदण्डभृत् ॥
त्रिदण्डी योगवान्नग्नो सबलार्कादिभिः क्रमात् ॥ १९ ॥

अनुष्टुप्॰॥ प्रव्रज्या करनेवाले ग्रहोंमें बलवान् सूर्य हो तो फलाहारी चन्द्रमा हो तो कपालपात्रधारी, मंगल हो तो भगुवा वस्त्रधारी, बुध हो तो एक दण्डका धारण करनेवाला, बृहस्पति हो तो तीन दण्डका धारण करनेवाला, शुक्र हो तो सदा भ्रमणशील, शनि हो तो दिगम्बर होता है, अर्थादेव प्रव्रज्या करनेवाला बलवान् ग्रह ग्रहयुद्धमें हारा हो तो फकीरी लेकर छोड देता है, जो दो वा तीन ग्रह बली हों तो पहिले एक प्रकारकी फकीरी लेकर दूसरे प्रकार फिर तीसरे प्रकार लेगा, जिस समय जिस ग्रहकी दशान्तर्दशा होगी उस समयमें

पूर्वगृहीतको छोडकर उस उस ग्रहके अनुसार फकीरी ग्रहण करता रहेगा, यही फल ४।५।६।७ ग्रहोंकाभी जानना, कोई बलवान् न हो तो प्रव्रज्या योग नहीं होता, ग्रह युद्धमें हारा न हो और एकही ग्रहकी प्रव्रज्या हो तो उसीकी प्रव्रज्या आजन्म रहेगी ॥ १९ ॥

चौरो भोक्ता दाक्षिणो द्रव्ययुक्तो भूपः षण्ढो निर्भयो निर्धनश्च ॥
मूर्खः पापः क्रूरकर्माऽभयःस्यादेषामीशश्चापि वर्गोत्तमांशे ॥२०॥

शालिनी० ॥ लग्नके नवांश द्वादशांशके फल कहते हैं। जिस राशिका नवांश हो वह राशि जन्मलग्नमें न हो तो जैसा मेष जन्मलग्न न हो और मेष नवांश हो तो चौर, इसी तरह आगेभी समझना, वृष नवांश हो तो भोग भोगनेवाला, मिथुन नवांश हो तो पण्डित, कर्क नवांश हो तो धनाढ्य, सिंह नवांश हो तो राजा, कन्या नवांश हो तो नपुंसक, तुला नवांश हो तो भयवर्जित, वृश्चिक नवांश हो तो दरिद्री, धनु नवांश हो तो मूर्ख, मकर नवांश हो तो पापी, कुम्भ नवांश हो तो हिंसा करनेवाला, मीन नवांश हो तो निर्भय होवे, वर्गोत्तम नवांश हो तो इनका स्वामी होवे जैसा मेषलग्न हो और मेषही नवांश हो तो चौरोंका स्वामी, वृष लग्न हो और वृषही नवांश हो तो भोग भोगनेवालोंका स्वामी होवे, इसी तरह आगेभी समझना (च) से विकल्प है कि जो फल 'स्थूलारक्तदृगुष्णभोजनरुचि' इत्यादि चन्द्रसमेत मेषादि राशियोंका आगे कहा जायगा वही फल मेषादि द्वादशांशमें जातकके कहने 'राशिवद्द्वादशांशैः' इति बृहज्जातके ॥ २० ॥

त्रिभिः स्वर्क्षगतैर्मन्त्री त्रिभिस्तुंगगतैर्नृपः ॥
त्रिभिर्नीचोपगैः प्रेष्यस्त्रिभिरस्तंगतैर्जडः ॥ २१ ॥

अनुष्टुप् ० ॥ योगान्तर कहते हैं। तीन ग्रह अपने राशिके हों तो मन्त्री, उच्चके हों तो राजा, नीचके हों तो दास, अस्त हों तो मूर्ख होता है ॥२१॥

वंशवद्वंशमुख्यस्ववर्गेश्वरो द्रव्यवान्भोगवान्भूपवान्भूपतिः ॥
स्वर्क्षगैकोत्तरावृद्धिगैः खेचरैः किञ्चिदप्यूनपाकं सुहृद्गेहगैः॥ २२ ॥

स्रग्विणी ० ॥ योगान्तर कहते हैं। अपने राशिका एक ग्रह हो तो पुरुष वंशके अनुकूल होता है, दोसे वंशमें अग्रगण्य, तीनसे अपने परिजनोंका स्वामी, चारसे धनी, पांचसे भोगी, छःसे राजाके तुल्य, सातसे राजा होता है, इसी क्रमसे मित्रक्षेत्री ग्रह हों तो यह फल कुछही न्यून होता है। (क्वचित्) 'स्वोच्चगौ रविशीतांशू जनयेतां नराधिपम्। स्वर्क्षगौ धनिनां ख्यातं स्वत्रिकोणगतावपि ॥ १ ॥ अन्धं दिगम्बरं मूढं परपिण्डोपजीविनम्। कुर्यातामपि नीचस्थौ पुरुषं शशिभास्करौ ॥ २ ॥' ॥ २२ ॥

आदिभिः स्वोच्चगैर्भूपवंशोद्भवो जायते जातको भूमिपालो बली॥
पञ्चषट्सप्तभिर्भिन्नवंशोद्भवस्तद्वदेव त्रिकोणोपगैर्व्योमगैः ॥ २३ ॥

स्रग्विणी० ॥ राजोंका बलिष्ठोंका जन्मज्ञान कहते हैं। तीन ग्रह तुंगके हों तो राजकुलका जातक राजा, त्रिकोणके हों तो सेनापति होता है, ५।६।७ ग्रह उच्चके हों तो अन्य कुलकाभी जातक राजा, त्रिकोणके हों तो सेनापति होता है, (परन्तु लग्न उच्चराशिका हो तो सत्य है) ॥ २३ ॥

निर्धनो दुःखितो मूर्खबुद्धिर्गदी बंधभाक् तापितो
मृत्युभागी भवेत् ॥ जात एकोत्तराव्योमगैर्वृद्धिगैः
शत्रुनीचर्क्षगैरेवमार्या जगुः ॥ २४ ॥

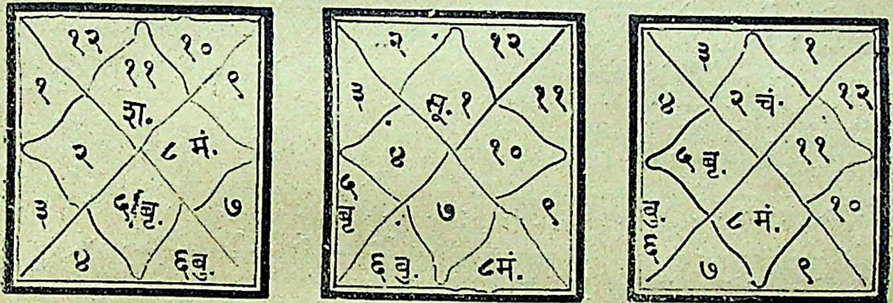
इति श्रीजयदेवकृतायां जातकचन्द्रिकायां नानायोगाध्यायः सप्तमः ॥ ७ ॥

स्रग्विणी० ॥ आश्रययोग कहते हैं। शत्रुराशिका वा नीच राशिका एक ग्रह हो तो धनहीन, दोसे दुःखी, तीनसे मूर्ख, चारसे रोगी, पांचसे वन्धनयुक्त, छःसे सन्तापयुक्त, सातसे मृत्युका भागी जातक होता है, इस तरह श्रेष्ठजन कहते हैं ॥ २४ ॥

इति श्रीकेशवानन्दविरचितायां जातकचन्द्रिकाभाषायां नानायोगाध्यायः सप्तमः॥७॥

घटार्कौ लग्नस्थे युवतिहरिकीटैः क्रमगतैर्ग्रहैर्विज्जीवारै-
र्भवति मनुजो मानवपतिः ॥ तनौ मेषस्थेऽर्के गदितभ-
गतैर्ज्ञप्रभृतिभिर्वृषेन्दौ लग्नस्थे पुनरपि तथा तैर्नरपतिः ॥ १ ॥

शिखरिणीवृ० ॥ राजयोगत्रय कहते हैं। लग्नमें कुंभका शनि अथवा लग्नमें मेषका सूर्य अथवा लग्नमें वृषका चन्द्रमा हो और इन तीनों योगोंमें कन्यामें बुध, सिंहमें बृहस्पति, वृश्चिकमें भौम हो तो मनुष्य राजा होता है, इन तीनों योगोंको कुण्डलीमें स्पष्ट लिखते हैं ॥ १ ॥



घटस्थौ लग्नार्की यदि युवतिराशौ रविबुधौ तुलाजेन्दुक्षेत्रे
भृगुजकुजजीवैर्नरपतिः ॥ तनौ गोस्थे चन्द्रे पुनरपि तथा
पूर्वगदितैर्ग्रहेन्द्रैस्तत्तत्स्थैर्भवति मनुजः पुंगलपतिः ॥ २ ॥

शिखरिणी० ॥ राजयोगद्वय कहते हैं। जो तुलालग्नमें शनि वा लग्नमें वृषका चन्द्रमा और इन दोनों योगोंमें कन्यामें सूर्य बुध, तुलामें शुक्र, मेषमें मंगल, कर्कमें गुरु हो तो मनुष्य राजा होता है ॥ २ ॥

धनुर्भे चन्द्रार्कौ कलशभगतौ भूमितनयस्तनौ चेत्तुंग-
स्थो दिनपतिसुतो भूम्यधिपतिः ॥ तनौ स्वोच्चस्थेऽर्के
सुरपतिगुरौ तौलिकगते सरात्रीशे सौरे द्युनभवनयाते
क्षितिपतिः ॥ ३ ॥

शिखरिणी० ॥ फिर राजयोगद्वय कहते हैं। जो लग्नमें तुलाका शनि, धनुमें चन्द्रमा सूर्य, कुंभमें मंगल हो तो राजा होता है। लग्नमें मेषका सूर्य, धनुमें बृहस्पति, तुलामें चन्द्रमा शनि हो तो मनुष्य राजा होता है ॥ ३ ॥

तनौ नक्रस्थेऽर्कौ झषमिथुनकन्याहयगतैश्चतुर्भिश्चन्द्राद्यैः
प्रथितगुणकीर्त्या सह नरः ॥ घटे सौरिः कौर्प्ये सुरपति-
गुरुर्लेयभगतः सहस्रांशुश्चेत्स्याद्वृषभतनुगेन्दुर्नरपतिः ॥ ४ ॥

शिखरिणी० ॥ फिर राजयोगद्वय कहते हैं। लग्नमें नक्रका शनि, मीनमें चन्द्रमा, मिथुनमें मंगल, कन्यामें बुध, धनुमें बृहस्पति, अथवा लग्नमें वृषका चन्द्रमा, तुलामें शनि, वृश्चिकमें बृहस्पति, सिंहमें सूर्य हो तो राजा होताहै ॥ ४ ॥

धनुषि सविधौ जीवे नक्राद्यभागगते कुजे झषभतनुगे काव्ये
जातो भवेत्पृथिवपातिः ॥ तनुगशशिजे स्वोच्चे पूर्वोक्तखेचरसं-
स्थितौ भवति नियमाज्जातो नाथो नृणां गुणिनां प्रियः ॥ ५ ॥

हरिणवृ० ॥ फिर राजयोगद्वय कहते हैं। लग्नमें मीनका शुक्र वा लग्नमें कन्याका बुध, धनुमें चन्द्रमा बृहस्पति, मकरके प्रथम दल १५ अंशभीतर मंगल हो तो जातक राजा और गुणवान् जनोंका प्रिय होता है ॥ ५ ॥

सुतस्थितौ कुजार्कजौ सुखे गुरुज्ञभार्गवाः ॥
यदोच्चराशिगो बुधस्तनौ यदा भवेन्नृपः ॥ ६ ॥

नगस्वरूपि० ॥ एक राजयोग कहते हैं। जो लग्नमें कन्याका बुध, पंचमस्थानमें मंगल शनि, चतुर्थमें गुरु बुध शुक्र हों तो राजा होता है ॥ ६ ॥

समीनचन्द्रमास्तनौ घटे शनिर्मृगे कुजः ॥
यदा हरौ प्रभाकरस्तदाऽचलापतिर्नरः ॥ ७ ॥

नगस्वरू० ॥ पुनः एक राजयोग कहते हैं। जो लग्नमें मीनका चन्द्रमा, कुंभमें शनि, मकरमें मंगल, सिंहमें सूर्य हो तो राजा होता है ॥ ७ ॥

सारः क्रियो लग्नसमाश्रितश्चेत्कर्के गुरुर्भूमिपतिर्गुणाढ्यः ॥
मेषाश्रिते क्ष्मातनये रिपुस्थे कीटक्षगे देवगुरौ नृपः स्यात् ॥ ८ ॥

इन्द्रवज्रा० ॥ राजयोगद्वय कहते हैं। जो लग्नमें मेषका भौम, कर्कमें बृहस्पति हो तो गुणवान् राजा होता है। मेषका मंगल षष्ठस्थानमें, कर्कमें बृहस्पति हो तो राजा होता है ॥ ८ ॥

स्वोच्चस्थितज्ञो यदि लग्नसंस्थो द्यूने शशीज्यौ दशमे भृगुश्चेत् ॥
पुत्रस्थितौ भूतनयार्कपुत्रौ रसापतिः स्यादिह निश्चयेन ॥ ९ ॥

उपजाति० ॥ फिर राजयोग कहते हैं। जो लग्नमें कन्याका बुध, सत-

मर्मे चन्द्रमा बृहस्पति, दशममें शुक्र, पंचममें मंगल शनि हों तो ऐसे योगमें निश्चय राजा होता है ॥ ९ ॥

अपि हीनकुले जाताः प्रोक्तभूपालयोगकैः ॥
भवन्ति भूमिपतयः कथं नो भूपवंशजाः ॥ १० ॥

अनुष्टुप्० ॥ पूर्वोक्त राजयोगोंमें अन्य कुलके पैदा हों तो पृथ्वीपति होते हैं राजाकेही वंशमें जो उत्पन्न हों तो क्यों पृथ्वीपति न हों अपि तु अवश्य होंगे ॥ १० ॥

अर्धोदितेऽर्केऽब्जयुतेऽजलग्ने स्वोच्चे कुजे कुम्भगतेऽर्कसूनौ ॥
धनुर्धरे देवगुरौ नृपस्य सुतो नरेशोऽन्यसुतो धनाढ्यः ॥ ११ ॥

उपजाति० ॥ नृपवंशियोंका राजयोग कहते हैं । लग्नमें मेषका आधा उदय सूर्य चन्द्रमासे युक्त हो, मकरमें मंगल, कुंभमें शनि, धनुमें बृहस्पति हो तो राजाका पुत्र राजा होता है अन्य कुलका धनी होता है ॥ ११ ॥

स्वगेहशुक्रे सुखगेऽथ चन्द्रे धर्मस्थिते शेषनभश्चरैस्तु ॥
लग्नायदुश्चिक्यसमाश्रितैश्च भूपोद्भवो भूपतिरन्य इभ्यः ॥ १२ ॥

उपजाति० ॥ फिर नृपवंशियोंका राजयोग कहते हैं । चतुर्थस्थानमें वृष तुलाका शुक्र, नवमस्थानमें तुला मीनका चन्द्रमा, शेष ग्रह रवि मंगल बुध हस्पति शनि १।११।३ स्थानमें हों अर्थात् कुंभलग्न हो, वृषमें चतुर्थ शुक्र, तुलामें नवम चन्द्रमा, शेष ग्रह रवि, मंगल, बुध, बृहस्पति, शनि, कुंभ धनु मेष राशिमें हों, वा कर्कलग्न हो, चतुर्थमें तुलाका शुक्र, नवमस्थानमें मीनका चन्द्रमा, शेष ग्रह रवि, मगल, बुध, बृहस्पति, शनि कर्क वृष कन्याराशिमें हों तो राजपुत्र राजा होता है अन्यवंशी धनाढ्य होता है ॥ १२ ॥

सौम्ये लग्नगते सबले चेत्सद्वीर्ये च शुभे नवमस्थे ॥
पुण्यस्वोपचयैरितरैश्च भूपः स्यान्नृपजोऽपि वदान्यः ॥ १३ ॥

वैतालिय० ॥ योगान्तर कहते हैं । बलिष्ठ बुध लग्नमें, बलवान् शुभग्रह

नवममें शेष ग्रह ९ । २ । ३ । ६ । १० । ११ स्थानमें हों तो राजपुत्र राजा, अन्य वंशी धनवान् होता है ॥ १३ ॥

वृषेन्दौ लग्नस्थे द्रविणभगुरौ शत्रुभशनौ परैरायप्राप्तैर्भवति
नृपपुत्रो नरपतिः॥ तनौ सौरे सौख्ये सुरपतिगुरौ खेऽर्कश-
शिनौ परैः प्राप्तिप्राप्तैर्नरपतिसुतः क्ष्मापतिरिह ॥ १४ ॥

शिखरिणीवृ० ॥ योगान्तर कहते हैं। लग्नमें वृषका चन्द्रमा, द्वितीय बृहस्पति, षष्ठ शनि, शेष ग्रह रवि बुध कुज शुक्र एकादशस्थानमें हों तो नृपपुत्र राजा होता है, लग्नमें शनि, चतुर्थ बृहस्पति, दशम रवि चन्द्रमा, एकादश स्थानमें मंगल बुध शुक्र हों तो इस योगमें नृपपुत्र राजा होता है ॥ १४ ॥

धने सौम्यांगारौ सुखभवनगार्केज्यभृगुजा भवे सारिः खेन्दुर्भ-
वति यदि भूपोद्भवनृपः ॥ तनौ मंदांगारौ सुखमदनधर्मायदशमे
निशेशामर्त्यैज्यासुरगुरुबुधार्का यदि नृपः ॥ १५ ॥

शिखरिणीवृ० ॥ फिर योगान्तर कहते हैं। जो द्वितीय स्थानमें बुध भौम, चतुर्थ बृहस्पति शुक्र, एकादश शनि, दशम चन्द्रमा हो अथवा लग्नमें शनि मंगल ४ । ७ । ९ । १० । ११ स्थानमें चन्द्रमा बृहस्पति शुक्र बुध सूर्य हों तो राजपुत्र राजा, अन्य धनी होता है ॥ १५ ॥

बुधगुरुभृगुराशौ संस्थितौ कर्मकामे दिनमणिरविपुत्रौ भोगि-
नामुद्भवोऽत्र ॥ शुभखचरगृहस्थैः शोभनैः कण्टकस्थैः खल-
भगखलखेटैश्चौरपः स्याद्धनाढ्यः ॥ १६ ॥

मालिनी० ॥ भाग्यशाली चौरपतिज्ञान कहते हैं। जो बुध गुरु शुक्रके मिथुन कन्या धनु मीन वृष तुला राशियोंका दशम सूर्य हो, सप्तम शनि हो तो भाग्यशालियोंका जन्म होता है, शुभग्रहोंके वृष मिथुन कर्क कन्या तुला धनु मीन राशियोंके शुभग्रह केन्द्र १।४।७।१० स्थानमें हों पापग्रहोंके मेष सिंह वृश्चिक मकर कुंभ राशियोंके पापग्रह हो तो चौरोंका राजा और धनाढ्य होता है ॥ १६ ॥

योगे यत्र नृपाज्जातो राजा तत्रान्यजो धनी ॥
ज्ञातव्यः सर्वपद्येषु बालैः कोमलबुद्धिभिः ॥ १७ ॥

इति श्रीजयदेवकृतायां जातकचन्द्रिकायां राजयोगाध्यायोऽष्टमः ॥ ८ ॥

त्रिष्टुप्० ॥ जिस योगमें राजपुत्र राजा होना कहा है तिस योगमें अन्यवंशी धनी होता है सरलबुद्धिवाले बालकोंने सब श्लोकोंमें जानना ॥ १७ ॥

इति श्रीकेशवानन्दविरचितायां जातकचन्द्रिकाभाषायां राजयोगाध्यायोऽष्टमः ॥ ८ ॥

मेषे रवौ ख्यातियुतोऽध्वशीलो दक्षोऽल्पवित्तोऽस्त्रभृद्देव जातः ॥
वृषे सुगंध्यम्बरपण्यजीवी स्त्रीद्वेषकृद्गीतरुचिर्नरः स्यात् ॥ १ ॥

उपजाति० ॥ मेषवृषगत सूर्यफल कहते हैं । मेषके सूर्यमें विख्यात भ्रमणशील चतुर अल्पद्रव्यवाला अस्त्रधारीही होता है अर्थादेव परमोच्चांश १० में हो तो स्थिर धनाढ्य शस्त्रधारियोंका मान्य होता है, वृषके सूर्यमें सुगंध द्रव्यके वस्त्रके व्यवहारसे आजीविका करनेवाला स्त्रियोंके साथ विवाद करनेवाला गायनमें इच्छावाला होता है ॥ १ ॥

नृयुग्मराशौ दिनपे सुविद्यो ज्योतिर्मतज्ञो द्रविणेन युक्तः ॥
कुलीरगे क्रूरमतिः परेषां कार्ये रतो रोगयुतोऽल्पविद्यः ॥ २ ॥

उपजाति० ॥ मिथुनकर्कगत सूर्यफल कहते हैं। मिथुनके सूर्यमें सुन्दर विद्यावान् ज्योतिःशास्त्रवेत्ता धनी होता है, कर्कके सूर्यमें उग्रस्वभाव अन्य लोकोंके कार्य करनेमें तत्पर रोगी स्वल्पविद्यावाला होता है ॥ २ ॥

सिंहेऽर्केऽज्ञः शैलगोप्रीतियुक्तश्चैकांतस्थः सद्बलो मानवः स्यात् ॥
कन्यागेऽर्के चित्रपुस्तोपजीवी विद्योपेतः स्त्रीवपुर्जातकोऽत्र ॥ ३ ॥

शालिनी० ॥ सिंहकन्यागत सूर्यफल कहते हैं । सिंहमें सूर्य होनेसे मूर्ख पर्वत गोष्ठमें प्रीति संयुक्त एकान्तमें रहनेवाला बलवान् होता है, कन्यामें सूर्य होनेसे चित्रकार पुस्तक लिखनेसे आजीविका करनेवाला विद्यावान् स्त्रीके समान शरीरवाला जंतु इस योगमें पैदा होता है ॥ ३ ॥

घटे रवौ मद्यरुचिश्च नीचो हैरण्यको मार्गविदत्र जातः ॥
अलिस्थिते साहसिकोऽस्त्रधारी क्रूरस्वभावश्च विषार्जितस्वः ॥ ४॥

उपजाति० ॥ तुलावृश्चिकस्थित सूर्यफल कहते हैं । तुलामें सूर्यसे मद्य (शराव) विक्रय करनेवाला नीच कर्म करता स्वर्णकार संचारशील जातक होता है, वृश्चिकमें सूर्य होनेसे असमीक्षित कर्म करनेवाला अस्त्रधारी उग्रस्वभाव विष (अफीम प्रभृति) के क्रयविक्रयसे धनोपार्जन करनेवाला होता है ॥ ४॥

धनुर्धरेऽर्के धनवाँल्लिपिज्ञः सदर्चितः क्रूरमतिश्च वैद्यः ॥
मृगे जडः स्वल्पधनो वणिक् च नीचोतिलोभोऽन्यधनोपजीवी॥५॥

उपजाति० ॥ धनुर्मकरस्थ सूर्यफल कहते हैं । धनु राशिके सूर्यसे धनाढ्य लेखनकर्ममें निपुण सज्जनोंका मान्य उग्रस्वभाव वैद्यकर्म करनेवाला होता है, मकरके सूर्यसे मूर्ख सूक्ष्म धनवाला वाणिज्य करता कुलके अनुचित कर्म करनेवाला बहुत लोभी दूसरेके ऐश्वर्यको भोगनेवाला होता है ॥ ५ ॥

कुंभे रवौ तनयपुण्यपरिच्युतोऽस्वोऽनीचे कुलेऽप्यशुचिकर्मकरो मनुष्यः ॥ मीने प्रवालमणिविक्रयजातलाभः स्त्रीणां प्रियो भवति मानवजातजातः ॥ ६ ॥

वसन्तति० ॥ कुंभमीनस्थ सूर्यफल कहते हैं. कुंभमें सूर्य हो तो पुत्रोंसे भाग्यसे रहित धनहीन उत्तम कुलमेंभी पैदा हो तोभी नीच कर्म करनेवाला मनुष्य होता है, मीनमें सूर्य हो तो मूंगा मणि प्रभृतियोंके क्रयविक्रयसे लाभ करनेवाला स्त्रियोंका प्यारा जातक होता है ॥ ६ ॥

स्थूलारक्तदृगुष्णभोजनरुचिः शीघ्रप्रसादोऽध्वगः ।
कामान्धः कृशजानुमांश्च कुनखः स्फोटांकितो मस्तके ॥
चापल्यश्चिरवित्तवान् रणरतः कांताजनैरावृतः ।
सेवाज्ञश्च सहोदरादिगणितश्चन्द्रेऽजराशिस्थिते ॥ ७ ॥

शार्दूलवि० ॥ मेषस्थ चन्द्रफल कहते हैं । मेषराशिमें चन्द्रमा हो तो वर्तुलाकार (गोल) लाल नेत्रवाला उष्णभोजनमें रुचिवाला शीघ्र प्रसन्न होने-

वाला भ्रमणशील अतिकामी मांसवर्जित जंघावाला कुरूपी नखवाला शिरमें व्रण हो अतिचपल बहुत कालपर्यन्तको धनसंग्रह करता संग्राममें लौलीन स्त्रीजनोंसे आदरयुक्त सेवाकर्मको जाननेवाला बंधुवर्गमें अग्रगण्य पुरुष होता है ॥ ७ ॥

श्लेष्मी कांततनुः पृथूरुवदनस्त्यागी विलासी क्षमी ।
पृष्ठे पार्श्वमुखेऽङ्कितो दृढसुहृत्कन्याप्रजः स्नेहवाक् ॥
प्रायः पूर्वकुटुम्बकादिरहितः सर्वप्रियो यौवने ।
वार्धक्ये सुखभाग्विधौ वृषगते दीप्ताग्निमान्मानवः ॥ ८ ॥

शार्दूलवि० ॥ वृषस्थ चन्द्रफल कहते हैं । वृषमें चन्द्रमा हो तो कफप्रकृति रमणीय शरीर स्थूल नितम्ब मुखवाला दानी भोगी क्षमावान् पीठमें पार्श्वमें चिह्नयुक्त गाढे मित्रोंवाला कन्यावान् मधुरभाषी बाहुल्यकरके प्रथम कुटुंब धन पुत्र स्त्रीसे रहित सबका प्यारा तरुणावस्थामें वृद्धावस्थामें सुख भोगनेवाला प्रदीप्त जठराग्निवाला मनुष्य होता है ॥ ८ ॥

रक्ताक्षः कुटिलांगजः पटुमतिः कामेंगितद्यूतवित् ।
दूतज्ञो वनिताभिलाषणमना हास्याप्रियो गीतवित् ॥
कांतांगः प्रियवाक् च तंत्रकुशलो बह्वन्नभुङ् नृत्यवित् ।
मूर्खैः प्रीतिकरो नरो बहुयशाश्चन्द्रे तृतीयर्क्षगे ॥ ९ ॥

शार्दूलवि० ॥ मिथुनस्थ चन्द्रफल कहते हैं । मिथुनमें चन्द्रमा हो तो लाल नेत्रवाला कुण्डलाकार केशवाला चतुरबुद्धि कोकशास्त्रोक्त कन्दर्पकी चेष्टाको और जुआको जाननेवाला परस्पर सन्देशको पहुँचानेवाला स्त्रियोंमें अधिकप्रीति करनेवाला हँसनेमें प्रिय गानवेत्ता रमणीय शरीर मधुर बोलनेवाला पण्डित बहुत अन्न खानेवाला नाचका जाननेवाला मूर्खोंके साथ प्रीति रखनेवाला बहुत कीर्तिमान् पुरुष होता है ॥ ९ ॥

शीघ्रावक्रगमो धनैर्विरहितोऽपेतः सदा चन्द्रव- ।
ज्ज्योतिःशास्त्ररतो रतिप्रियतरः स्त्रीभिर्जितः सत्सुहृत् ॥
प्रीत्या याति वशं सुपीनगलको मित्रानुरक्तो लघु- ।
स्तोयोद्यानविलासशीलमनुजश्चन्द्रे स्वराशिस्थिते ॥ १० ॥

शार्दूलवि०॥ कर्कस्थ चन्द्रफल कहते हैं। कर्कराशिमें चन्द्रमा हो तो जल्दी टेढा चलनेवाला कभी धनवान् कभी निर्धन ज्योतिःशास्त्रमें प्रवीण रतिमें अतीवप्रिय स्त्रियोंका वशवर्ती अच्छे मित्रोंवाला प्रीतिसे वशीभूत होनेवाला स्थूल कंठ मित्रोंमें अनुरागी छोटा शरीर जलमें उद्यान (बगीचा) में विहार करनेवाला मनुष्य होता है ॥ १० ॥

सामर्षः पृथुलाननः कपिलदृङ्निष्कारणे कोपकृ- ।
त्स्त्रीद्वेषी नगमांसकाननरुचिः स्वल्पात्मजस्त्यागवान् ॥
मातुर्वश्यगतोऽपि विक्रमयुतो दंतोदरादिव्यथा- ।
संप्राप्तः स्थिरधीः प्रगर्भितमनाः सिंहर्क्षगे शीतगौ ॥ ११ ॥

शार्दूल०॥ सिंहस्थ चन्द्रफल कहते हैं। सिंहमें चन्द्रमा हो तो क्रोधी बडा मुखवाला पीतनेत्रवाला विना हेतुके क्रोध करनेवाला स्त्रियोंके साथ विद्वेषशील पर्वतमें मांसमें वनमें प्रीति करनेवाला अल्पपुत्रवान् दानशील माताके वशीभूत शूरवीर दन्त और पेटमें पीडासंयुक्त निश्चय बुद्धिवाला अहंकारी मनुष्य होता है ॥ ११ ॥

सद्वाक्यः सुरतिप्रियः परधनैः संयुज्यते धर्मवित् ।
लज्जामंदगमो विदेशगमनः सत्ये रतः सौख्यभाक् ॥
मेधावी सुकलः कलासु कुशलः सदीर्घदोर्दण्डधृक् ।
शास्त्रज्ञोऽल्पसुतः सुताप्रजनकः कन्यर्क्षगे शीतगौ ॥ १२ ॥

शार्दूलवि०॥ कन्यास्थ चन्द्रफल कहते हैं। चन्द्रमा कन्याराशिमें प्राप्त हो तो मधुरभाषी संभोगमें प्रीति करनेवाला दूसरेके कार्योंसे तथा धनोंसे संयुक्त (मुख्तियार हो) धर्ममें तत्पर लज्जासे नम्र गतिवाला परदेशवासी सत्यमें तत्पर सुख भोगनेवाला बुद्धिमान् सुन्दर कान्तिवाला कलाओं (गायन वादित्र शास्त्रादि) में निपुण अच्छे लंबे बाहुवाला शास्त्रार्थ जाननेवाला अल्प पुत्र और बहुत कन्याओंका उत्पन्न करनेवाला पुरुष होता है ॥ १२ ॥

प्राज्ञः स्त्रीविजितः शुचिः कृशमृदुः पार्श्वाङ्गयष्टिः पुमान् ।
देवब्राह्मणभक्तितत्परमना द्रव्यान्वितो मार्गवित् ॥
बन्धूनामुपकारकृत्स्वमनुजैस्तैरेव दुःखं गतो ।
हीनांगः सरुजः क्रयादिकुशलश्चन्द्रे तुलायां गते ॥ १३ ॥

शार्दूलवि० ॥ तुलास्थ चन्द्रफल कहते हैं। तुलामें चन्द्रमा हो तो कवि हो स्त्रियोंके वशीभूत सुन्दर आचारी माडा कोमल बगल व शरीरवाला देवतोंकी ब्राह्मणोंकी सेवकाईमें तत्पर चेता हो धनवान् भ्रमणशील अपने जनोंका हितकारी अपने जनोंसेही दुःख पानेवाला गात्रभंग हो रोगी क्रयविक्रयके व्यवहारमें निपुण पुरुष होवे ॥ १३ ॥

जनकगुरुभिस्त्यक्तो बाल्ये रुजापरिपीडितो नरपतिकुले पूज्यः
क्रूरेंगितोऽघयुतो भवेत् ॥ पृथुलनयनः स्थौल्यं वक्षस्युरोर्युगलेऽ-
पि च कुलिशझषवाचिह्नं चांगेऽलिगे सति शीतगौ ॥ १४ ॥

हरिणीवृ० ॥ वृश्चिकगत चन्द्रफल कहते हैं। वृश्चिकमें चन्द्रमा हो तो माता पिता व उपदेश करनेवालोंने त्याग दिया हो छोटी अवस्थामें रोगसे अत्यन्त घायल राजकुलमें मान्य उग्र चेष्टावाला गुप्त पापी हो विस्तीर्ण नेत्र-वक्षस्थल व दोनों ऊरु (चूतड) स्थूल होवें अंगमें अर्थात् हाथपैरोंमें वज्रमत्स्यके तुल्य चिह्नवाला पुरुष होता है ॥ १४ ॥

दीर्घग्रीवास्यदंतः पितृभवधनवांस्त्यागवान्काव्यकर्त्ता ।
वीर्याढ्यः स्थूलकर्णाधरभुजसहितः कुब्जको धृष्टचेताः ॥
बन्धूद्विग्नोपकर्त्तोत्सवसहितमना नो बलाद्वश्यमेति ।
धर्मज्ञः शिल्पवेत्ता प्रवचनचतुरो धन्विराशौ सुधांशौ ॥ १५ ॥

स्रग्धरा० ॥ धनुर्गत चन्द्रफल कहते हैं। धनुमें चन्द्रमा हो तो लम्बे ग्रीवा मुख और दंत होवें पिताके धनसे संयुक्त हो दाता काव्य रचनेवाला बलवान् पुष्ट कान ओंठ बाहु हों कुब्ज (कुबडिया) हो प्रगल्भ हो भाइयोंके बीच उद्विग्न करनेवाला बलसे वशमें नहीं आनेवाला धर्मात्मा शिल्पविद्याका जाननेवाला वाक्पटु पुरुष होता है ॥ १५ ॥

धर्मी क्षामकटिर्विशालवदनो लुब्धो जरास्त्रीरतो ।
निर्लज्जः सकृदेव वाक्यकृदिहौदार्याद्युपेतोऽलसः ॥
शीतालुर्मनुजप्रियः स्वमनुजोपेतः सदा निर्दयः ।
काव्यादौ रसिकोऽटनश्च मकरे याते त्रियामेश्वरे ॥ १६ ॥

शार्दूलवि० ॥ मकरगत चन्द्रफल कहते हैं । मकरमें चन्द्रमा हो तो धर्मात्मा कमरके नीचे माडा हो सुहावना मुख लोभी वृद्ध स्त्रीके साथ सम्भोग करनेवाला लज्जावर्जित एकही वारके कहनेसे माननेवाला उदार आलस्ययुक्त शीत न सहनेवाला सम्पूर्ण जनोंका प्यारा नित्य अपने जनोंसे मेल रखनेवाला दयाहीन काव्यालंकार शास्त्र पढनेवाला भ्रमणशील पुरुष होता है ॥ १६ ॥

दैवाद्वृद्धियुतः क्षणे क्षययुतोऽन्यस्त्रीधनाद्ये रतः ।
पापात्मा तनुबाहुकण्ठचरणो रूक्षांगजो मूर्खधीः ॥
स्थूलोष्ठोरुयुगास्यपृष्ठजघनः पुष्पप्रियः सत्सुहृत् ।
मार्गे क्लेशसहोऽनुलेपनमनाश्चन्द्रे प्रयाते घटे ॥ १७ ॥

शार्दूलवि० ॥ कुम्भगत चन्द्रफल कहते हैं । कुंभमें चन्द्रमा हो तो क्षणमें धनवान् क्षणमें धनहीन परस्त्री परधन और पापकर्ममें तत्पर पापबुद्धिवाला बाहु कण्ठ पैर ये सब कृश होवें बाल रूक्ष हों जडमति ओंठ चूतड मुख पीठ जंघा ये सब मोटे फूलोंपर प्यार रखनेवाला रास्ता चलनेके क्लेशको सहनेवाला सुगन्धित वस्तुका लेपन करनेवाला पुरुष होता है ॥ १७ ॥

जलजपरकीयार्थप्राप्तिप्रियावसने रतिः समशुभवपुस्तुङ्गघ्राणो बृहद्गलशीर्षवान् ॥ अहितगणसंजेता स्त्रीभिर्जितः शुभदृग्द्युतिर्निधिधनबृहद्भोगी दक्षोऽन्त्यराशिगते विधौ ॥ १८ ॥

हरिणी० ॥ मीनगत चन्द्रफल कहते हैं । मीनमें चन्द्रमा हो तो मोती वगैरह धनका और दूसरेके धनका भोग करनेवाला स्त्रियोंमें वस्त्रोंमें प्यार करनेवाला शोभनीय शरीरवाला ऊंची नासिका ऊंचा और पुष्ट शिरवाला शत्रुसमूहको जीतनेवाला स्त्रियोंके वशीभूत सुन्दर नेत्रोंकी छविवाला बहुत धनका भोगनेवाला चतुर पुरुष होता है ॥ १८ ॥

नरपोपकृतोटनं क्षताङ्गो धनवांश्चौर्यरतश्च धौर्त्यवान् ॥
क्रयविक्रयकारको बली गणनाथः स्वगृहे गते कुजे ॥ १९ ॥

वियोगिनी० ॥ मंगल स्वगृह १।८ में हो तो राजपूज्य घूमनेवाला शरीरमें चिह्न हो धनवान् चौरीकर्ममें तत्पर उद्धत व्यापार करनेवाला बलवान् सेनापति मनुष्य होता है ॥ १९ ॥

सुहृत्सु वैषम्यकरः परेषां कार्येन रक्तो युवतीजितश्च ॥
सुवेषयुक्तः स्थिरता स्वभावे शुक्रर्क्षयाते सति भूमिजाते ॥ २० ॥

उपजाति० ॥ मंगल शुक्रराशि २।७ का हो तो मित्रोंमें क्रूर अन्य जनोंके काममें कपट करनेवाला स्त्रियोंके वशीभूत सुन्दर अलंकारयुक्त निश्चय स्वभाव पुरुष होवे ॥ २० ॥

असहो विसुहृत्सुतान्वितो रिपुवर्गेऽप्युपकारकारकः ॥
कृपणोऽभयवांश्च याचको बुधभे भूमिसुते सुगीतवित् ॥ २१ ॥

वियोगिनी० ॥ मंगल बुधके राशि ३।६ में हो तो तेजस्वी मित्रोंसे वर्जित पुत्रोंसे संयुक्त शत्रुजनोंकाभी उपकार करनेवाला कृपण (कंजुस) निर्भय हो परधनका चाहनेवाला सुन्दर गायनको जाननेवाला मनुष्य होवे ॥ २१ ॥

जलाश्रयस्याश्रयजातवित्तः स्वबुद्धिमान्भूरिविनोदचित्तः ॥
सौजन्यहीनोऽवयवेन हीनो दीनो भवेत्कर्कटगे कुजे च ॥ २२ ॥

उपजाति० ॥ मंगल कर्कटमें हो तो नाव वगैरहसे अथवा जलमें गमन करनेसे धनोपार्जन करनेवाला सुन्दर बुद्धिमान् बहुत खेलमें चित्त रखनेवाला दुर्जन अंगभंग दुर्बल मनुष्य होवे ॥ २२ ॥

सिंहे कुजे स्वल्पसुतोऽबलश्च वनेचरः क्लेशसहो मनुष्यः ॥
जीवर्क्षगेऽनेकरिपुर्नरेन्द्रसाचिव्यवानल्पसुतोऽभयश्च ॥ २३ ॥

उपजाति० ॥ मंगल सिंहमें हो तो अल्प पुत्रवान् निर्धनी वनमें फिरनेवाला क्लेशको सहनेवाला, धनुर्मीन राशिमें हो तो बहुत शत्रुवाला राजमंत्री अल्प पुत्रवान् निर्भय मनुष्य होता है ॥ २३ ॥

बृहद्धनापत्ययुतो नृपो वा भूपेन तुल्यो मकरे कुजे च ॥
दुःखैःप्रयुक्तो विधनोऽटनश्च क्रूरोऽनृती भूमिसुते घटस्थे॥२४॥

उपजाति० ॥ मंगल मकरमें हो तो बहुत धन सन्ततिसे संयुक्त राजा अथवा राजाके तुल्य होवे, कुंभमें हो तो सदा दुःखी निर्धनी भ्रमणशील उग्रस्वभाववाला मिथ्याभाषी मनुष्य होवे ॥ २४ ॥

द्यूतमद्यरसिकश्च नास्तिकस्तस्करः कपटकृद्धि मानवः ॥
कुप्रिया मतिरतीवसाम्यवान् वृश्चिकक्रियसमाश्रिते बुधे॥२५॥

रथोद्धता० ॥ मेषादिस्थ बुधफल कहते हैं। बुध मेष वृश्चिक राशिमें हो तो द्यूत (जुआ) और मदिरापानमें आसक्त शास्त्रके अर्थमें दोष लगानेवाला चोर हो दूसरेके काममें कपट करनेवाला निन्दित स्त्रीवाला अहंकारशील असत्यवादी मनुष्य होवे ॥ २५ ॥

मतिदो बहुपुत्रदारवान्धनधान्यार्जनसन्मना जनः ॥
गुरुदेवसुचित्तवित्तदो भृगुजर्क्षे सति शीतभानुजे ॥ २६ ॥

वियोगिनी० ॥ बुध वृष तुलामें हों तो उपदेश देनेवाला बहुत पुत्र बहुत स्त्रियोंवाला बहुत धन और अन्नके उपार्जन करनेमें तत्पर गुरु पितृ मातृ प्रभृतियोंकी सेवा करनेवाला दानी मनुष्य होवे ॥ २६ ॥

मतिमाल्लिपिपुस्तचित्रविद्बहुभाषी प्रियवाकू तृतीयगे ॥
स्वबलाद्विषमार्जितार्थवान्स्वजने शत्रुसमः कुलीरगे ॥ २७ ॥

वियोगिनी० ॥ बुध मिथुनमें हो तो बुद्धिमान् पुस्तक चित्रकार लिखनेका जाननेवाला असत्यभाषी प्रिय बोलनेवाला, कर्कमें हो तो अपने बलसे धनोपार्जन करनेवाला बन्धुजनोंका शत्रुतुल्य मनुष्य होवे ॥ २७ ॥

स्त्रीणां द्वेष्टा निर्धनो निःसुखश्च स्त्रीषु प्रीतिप्राप्तचेताः खलश्च ॥
निःसंतानो मार्गशीलःस्ववर्गात्प्राप्तैश्वर्यः सिंहसंस्थेऽञ्जपुत्रे ॥२८॥

शालिनी० ॥ बुध सिंहमें हो तो स्त्रियोंके साथ द्वेष करनेवाला धनहीन

सुखवर्जित स्त्रियोंमें अभिलाषी मूर्ख सन्ततिहीन भ्रमणशील अपने परिजनोंसे विभवका पानेवाला मनुष्य होवे ॥ २८ ॥

सुखवानतिनिर्भयो नरो निगमे प्रीतमनाः सुयुक्तिमान् ॥
धनदः परदोषलोपकृत्प्रमदायां सति शीतभानुजे ॥ २९ ॥

वियोगिनी० ॥ बुध कन्यामें हो तो सुखी भयवर्जित शास्त्रमें रुचिवाला प्रयोगका जाननेवाला दाता दूसरेके दोषोंका लोप करनेवाला मनुष्य होवे ॥ २९ ॥

ऋणवान् शिल्पवेत्ता च परकर्मकरो नरः ॥
अवश्यकारको निःस्वो नक्रे कलशगे बुधे ॥ ३० ॥

अनुष्टुप्० ॥ बुध मकर कुंभमें हो तो ऋणी शिल्पकर्म करनेवाला दूसरेका काम करनेवाला दूसरेके आज्ञापर रहनेवाला दरिद्री मनुष्य होवे ॥ ३० ॥

व्यवहारपरो दक्षः सत्पूज्यो ह्यगे बुधे ॥
परराधनयुक्तश्च प्रेष्यः शिल्पी झषाश्रिते ॥ ३१ ॥

अनुष्टुप्० ॥ बुध धनुमें हो तो व्यापार करनेवाला सज्जनोंका मान्य चतुर हो, मीनमें हो तो दूसरेकी सेवा करनेमें निपुण हो, दास हो और शिल्पकाम करनेवाला होवे ॥ ३१ ॥

बलपो बहुमित्रदारवान्बहुपुत्रो बहुभृत्यवान्क्षमी ॥
बलवान्बहुवित्तदानवान् गुणवान्भूमिजराशिगे गुरौ ॥ ३२ ॥

वियोगिनी० ॥ मेषादिस्थबृहस्पतिफल कहते हैं। बृहस्पति मेष वृश्चिकमें हो तो सेनापति, बहुत मित्र बहुत स्त्रियोंवाला, बहुत पुत्रवान् बहुत सेवकोंवाला क्षमाशील तेजस्वी बहुत द्रव्य देनेवाला अच्छे गुणोंसे सम्पन्न मनुष्य होवे॥ ३२॥

स्वच्छांगः सहसुखधान्यपुत्रमित्रैस्त्यागी स्यात्सकलजनप्रियश्च
शौक्रे ॥ सद्देहस्तरलगुणात्मजः क्षमावान्सन्मित्रो भवति बुध-
र्क्षगे च जीवे ॥ ३३ ॥

प्रहर्षिणी० ॥ बृहस्पति वृष तुलामें हो तो निर्मल गात्र हो सुख अन्न पुत्र मित्र इनसे संयुक्त हो दाता संपूर्ण लोकोंका प्यारा मनुष्य होवे, मिथुन कन्याका

हो तो सुंदर परिवारवाला सुन्दर गुणवान् पुत्रवान् क्षमाशील अच्छे मित्रों-वाला पुरुष होवे ॥ ३३ ॥

सुतविभूतिकलत्रसुरत्नयुक् सुखयुतो निजतुंगगते गुरौ ॥
ससुखदारभवात्मजमौक्तिको नरवरो हरिगे सति वाक्पतौ ॥ ३४ ॥

द्रुतविलम्बि० ॥ बृहस्पति कर्कमें हो तो पुत्र ऐश्वर्य स्त्री सुन्दर मणि इन्होंसे संयुक्त हो, सुखी हो, सिंहमें हो तो सुख स्त्री ऐश्वर्य पुत्र मोती इनसे संयुक्त हो पुरुषोंमें श्रेष्ठ होवे ॥ ३४ ॥

हये मीनगे देवपूज्ये च मंत्री भवेन्मण्डलेशो धनेशो बलेशः ॥
स्ववंशोक्तसत्कर्मकानां विलोपी विसौख्यो विवित्तो गुरुर्नक्रगश्चेत् ३५

भुजङ्गप्रया० ॥ बृहस्पति धनुर्मीनमें हो तो राजमंत्री मण्डलका स्वामी धनवान् सेनापति होवे, जो मकरका हो तो अपने कुलके सत्कर्मोंका लोप करने-वाला दुःखी दरिद्री पुरुष होवे ॥ ३५ ॥

दारैश्वर्यात्मजोपेतो मुक्ताविद्रुमकादिभिः ॥
सुखसौभाग्यवांश्चैव गुरुश्चेत्कलशाश्रितः ॥ ३६ ॥

अनुष्टुप्० ॥ बृहस्पति कुंभमें हो तो मोती मूंगा प्रभृतियोंसे और स्त्री विभव पुत्र इनसे संयुक्त हो सुख सौभाग्यवान् मनुष्य होवे ॥ ३६ ॥

परस्त्रीरतः स्यात्तदर्थापवादैर्हृतस्वः कुलेऽकः कुजर्क्षे च शुक्रे ॥
बृहद्द्रव्यकीर्तिः कुलाग्र्योभयश्च नृपप्रीतियुक्तो भृगुः स्वभगश्चेत् ३७

भुजङ्गप्र० ॥ मेषादिराशिस्थ शुक्रफल । शुक्र मेष वृश्चिकमें हो तो दूसरेकी स्त्रियोंमें आसक्त दूसरेकी स्त्रियोंके विवादमें धन खर्च करनेवाला कुलमें कलङ्क लगानेवाला, जो वृष तुलामें हो तो बहुत धन और कीर्तिवाला अपने वंशमें अग्रेसर निर्भय राजमान्य होवे ॥ ३७ ॥

नृपाभिमान्योऽर्थयुतः कलावान् नृयुग्मराशौ युवतौ तु नीचः ॥
कर्के भृगौ भीरुरतिस्मरार्थी मदेन युक्तो द्विवधूधवश्च ॥ ३८ ॥

उपजाति० ॥ शुक्र मिथुन कन्यामें हो तो राजाके कामको करनेवाला

धनी गीतवादित्रप्रभृति कलोंका जाननेवाला निकृष्ट कर्मकारी, कर्कमें हो तो भयशील सम्भोगका चाहनेवाला अहंकारी दो स्त्रियोंका प्रिय मनुष्य होवे ३८॥

अबलातधनः स्वल्पतनयः प्रबलाबलः ॥
स्वस्त्रीवचनचारी च सिंहर्क्षे सति भार्गवे ॥ ३९ ॥

अनुष्टुप्० ॥ शुक्र सिंहमें हो तो स्त्रीका कमाया धन पावे सन्तति थोडी हो स्त्री प्रधान हो स्त्रीके वचनके अनुसार चलनेवाला मनुष्य होवे ॥ ३९ ॥

शश्वत्सुगुण्यपूज्यः स्यात्सुधनो धन्विगे भृगौ ॥
आढ्यो नृपार्चितो भोगी जनप्रियतमोऽन्त्यगे ॥ ४० ॥

अनुष्टुप्० ॥ शुक्र धनुमें हो तो सदा गुणिजनोंका मान्य धनवान्, मीनमें हो तो सम्पन्न राजमान्य भोग भोगनेवाला लोकोंका प्यारा मनुष्य होवे॥४०॥

कुत्सितास्वपि नारीषु विरतः स्मरवश्यगः ॥
स्त्रीजितः सुभगो मानी सौरर्क्षे संस्थिते सिते ॥ ४१ ॥

अनुष्टुप्० ॥ शुक्र मकर कुंभमें हो तो निंदित स्त्रियोंके साथ आसक्त हो कामी स्त्रीके वशमें हो शोभनीय शरीर हो मानवान् मनुष्य होवे ॥ ४१ ॥

जडो विमित्रः कपटोऽटनश्च क्लेशेन युक्तोऽजगतेऽर्कपुत्रे ॥
वर्ज्यासु नारीष्वनुरक्तचेता भूर्यङ्गनो मध्यधनो वृषस्थे ॥४२॥

उपजातिवृ० ॥ मेषादिराशिस्थ शनिफल कहते हैं। शनि मेषमें हो तो मूर्ख मित्रहीन कपट (छल) करनेवाला भ्रमणशील दुःखी होवे. वृषमें हो तो वर्जनीय (अपने गोत्रकी नीच गोत्रकी स्त्रियेंमें विधवा और वृद्ध) स्त्रियेंमें आसक्त होवे बहुत स्त्रियोंवाला मध्यधनी होवे.'ब्राह्मणी विधवा मान्या स्वगोत्रा राजयोषितः। वर्णश्रेष्ठातिनीचा च ह्यगम्योक्ता बुधैः स्त्रियः' ॥ ४२ ॥

सुखार्थलज्जातनयैर्विहीनो लिपिक्रियायां स्खलितत्वमेति ॥
त्राता सतां नायकतां प्रयाति बुधर्क्षपाते सति भानुजाते ॥४३॥

उपजातिवृ० ॥ शनि मिथुन कन्यामें हो तो सुख धन लज्जा पुत्र इनसे हीन हो लेखनके काममें प्रवीण रक्षा करनेवाला सज्जनोंका स्वामी होवे॥४३॥

विकलरदो विधनश्च मातृहीनो विमतिसुतः खलु कर्कराशिगेऽर्कौ ॥
विसुतसुखस्त्ववहेलनान्वितः स्याद्बहुललनो हरिराशिगेऽर्कसूनौ४४॥

वैतालीय० ॥ शनि कर्कमें हो तो दंतोंसे हीन दरिद्री मातासे हीन मूर्ख पुत्रवर्जित निश्चय होवे. सिंहमें हो तो पुत्र और सुख इनसे हीन हो अनादरयुक्त रहे अर्थात् भारवाही हो बहुत स्त्रियोंवाला पुरुष होवे ॥ ४४ ॥

जनपदगणपूज्यः स्याच्चमूनायकोऽपि द्रविणगुणगणाढ्यः स्वो-
च्चसंस्थेऽर्कपुत्रे ॥ चपलतरमतिः स्यान्निर्दयो बंधभागी वधभय-
सहितोऽसौ वृश्चिके भानुसूनौ ॥ ४५ ॥

मालिनी० ॥ शनि तुलामें हो तो देश ग्रामप्रकृतियोंमें पूजनीय हो सेनापतिभी हो धन और शौर्यौदार्यादि गुण इनके समूहसे संयुक्त, वृश्चिकमें हो तो दयाहीन बंधील हो वधकी भयसे संयुक्त होवे अथवा बांधनेवाला मारनेवाला (हत्यारा) होवे ॥ ४५ ॥

भूपालये प्रत्ययितो नरः स्यादाजन्मसौख्यः सुसुतार्थवांश्च ॥
इष्टप्रियो ग्रामपुराधिनाथो गणाग्रणीर्जीवगृहेऽर्कपुत्रे ॥ ४६ ॥

उपजाति० ॥ शनि धनुर्मीनमें हो तो राजगृहमें उसकी प्रतीति होवे आजन्म सुखी सुन्दर पुत्र और धनवाला शोभन स्त्रीवाला ग्राम और नगरोंका स्वामी समूहोंका अग्रेसर होवे ॥ ४६ ॥

अन्यप्रियो द्रव्ययुतो बलेशः पुराधिनाथो मलिनोऽल्पदृष्टिः ॥
चिरं धनैश्वर्ययुतश्च भोक्ता स्वक्षेत्रगः सूर्यसुतो यदा स्यात्॥४७ ॥

उपजातिवृ० ॥ शनि मकर कुंभमें हो तो परस्त्रियोंका प्रिय धनाढ्य सेनापति नगरोंका स्वामी मलिन रहे अर्थात् स्नान दंतधावनादि न करे अल्प नेत्र हो बहुत कालपर्यन्त धन विभवसे संयुक्त रहे भोग भोगनेवाला होवे ॥ ४७ ॥

बलेन सहितेऽत्र भे तदधिपे च तत्स्थे ग्रहे यथोक्तसकलं फलं
जनुषि जातकः प्रावति ॥ द्वयोर्बलवतोः फलं लभति मध्यमं
चैकके लभेल्लघुफलं न किंचिदपि कोऽपि नो चेद्बली ॥ ४८ ॥

इति श्रीजयदेवकृतायां जातकचन्द्रिकायां राशिस्थग्रहफलाध्यायो नवमः ॥ ९ ॥

पृथ्वीवृ० ॥ उक्त फलका विशेष विचार कहते हैं । जो राशि बलवान् हो और राशिका स्वामीभी बलवान् हो और बलिष्ठग्रहसे संयुक्तभी हो तो पूर्वोक्त राशिस्थग्रहका संपूर्ण फल जन्मसे जातक पावता है, दो बलवान् हों तो पूर्वोक्त फल मध्यम, एक बलवान् हो तो सूक्ष्मफल, जो एकभी बलवान् न हो तो पूर्वोक्त फलको सूक्ष्मभी नहीं पावे, जैसे लग्न बलवान् हो लग्नेशभी बलवान् हो लग्नमें बली ग्रहभी होवे तो शरीरपुष्टि अधिक होगी, धनभावका राशि और धनेश दोनों बलवान् हों और बलिग्रह धनस्थानमें हों तो धनकी अच्छी वृद्धि होगी, दोसे मध्यम धन, एकसे सूक्ष्म धन, एकभी बली न हो तो कुछभी फल नहीं मिलेगा अर्थात् धनहीन होगा इसही प्रकार और भावोंका फल विचारना ॥ ४८ ॥

इति श्रीकेशवानन्दविरचितायां जातकचन्द्रिकाभाषायां राशिस्थग्रहफलाध्यायो नवमः ९

लग्नस्थेऽर्के विकलनयनो निर्दयः पारकीये कार्ये प्रीतः परम-
कुशलो जायते जातकोऽसौ ॥ मेषे सार्थस्तिमिरनयनो लेयगेऽ-
र्के निशान्धस्तौलिस्थेऽर्के विधननयनः पुष्पिताक्षश्च कर्के ॥ १ ॥

मन्दाक्रान्ता० ॥ भावस्थित ग्रहोंके फल कहते हैं । लग्नमें सूर्य हो तो हीनदृष्टि दयारहित दूसरेके काममें रुचि रखनेवाला परम चतुर होवे, परंतु मेषका हो तो धनी नेत्ररोगी, सिंहका हो तो रात्रिमें अंधा रहे, तुलाका हो तो दरिद्री और नेत्रहीन होवे, कर्कका हो तो नेत्रमें फूल हो वा तिरछी दृष्टि होवे ॥ १ ॥

भूरिद्रव्यो भूम्यधीशाहृतस्वो द्रव्यस्थाने वर्त्तमाने स्वरांशौ ॥
भूरिप्राज्ञो भूरिरुत्साहयुक्तो भ्राताऽसौख्यो भ्रातृभावे दिनेशे ॥ २ ॥

शालिनीवृ० ॥ द्वितीय सूर्य हो तो बहुधनी परन्तु राजा उसका धन हरे, तृतीय सूर्य हो तो विशेष बुद्धिमान् बडा उद्यमी भाईसे सुख न होवे ॥ २ ॥

सुखार्थहीनश्चलवासधीश्च ह्युद्विग्नचित्तः सुखगे दिनेशे ॥
विसात्क्रियापत्यधनो वनेगो दिनाधिनाथे सुतभावयाते ॥ ३ ॥

उपजाति० ॥ चतुर्थ सूर्य हो तो सुख और धनसे वर्जित होवे कभी वस्त्रहीन कभी वस्त्रयुक्त और बुद्धि चलायमान क्रोधशील हो, पंचम सूर्य हो तो अच्छे काम संतान धन इनसे हीन हो वनमें फिरनेवाला होवे ॥ ३ ॥

सत्त्वसौख्यधनवान्रिपुहंता यानमानसहितोऽरिगेऽर्के ॥
स्त्रीकृतस्वविलयो नृपभीतो रुग्युतो रिपुतोऽस्तगतेऽर्के ॥ ४ ॥

विषमवृ० ॥ षष्ठ सूर्य हो तो बल सौख्य धन इनसे संयुक्त हो शत्रुका मारनेवाला असवारी सन्मान इनसे युक्त हो, सप्तम सूर्य हो तो स्त्रीके वशीभूत राजासे भयशील शत्रुजनित रोगसे युक्त होवे ॥ ४ ॥

स्वल्पापत्यो हीनदृग्वित्तमांश्च द्वेषी रोगी कार्यवानष्टमस्थे ॥
सापत्यार्थःसत्सुतःसौख्यधीमान्धर्मेभानौमातृवर्गेऽरिवत्स्यात् ॥५॥

शालिनी० ॥ अष्टम सूर्य हो तो अल्प संतानवाला मंद नेत्रवाला धनी विद्वेषकर्त्ता रोगी अनेक कार्य करनेवाला होवे, नवम सूर्य हो तो पुत्र और धनसे संयुक्त हो सुन्दर सन्ततिवाला सुखी बुद्धिमान् माता वगैरह पूजनीय स्त्रियोंका शत्रु होवे ॥ ५ ॥

विक्रमी निगमविद्धवयुक्तश्चोपकारसुखभाग्गमनस्थे ॥
गीतविद्बहुधनी शुभकर्मा प्राप्तिगे दिनमणौ गणनाथः ॥ ६ ॥

स्वागता० ॥ दशम सूर्य हो तो पराक्रमी शास्त्रवेत्ता ऐश्वर्ययुक्त दूसरेका उपकार करनेवाला सुखी होवे, एकादश सूर्य हो तो गायनविद्या जाननेवाला बहुत धनी सत्कार्य करनेवाला सेनापति होवे (सेनामुखं गुल्मगणौ वाहिनी पृतना चमूः) इत्यमरे ॥ ६ ॥

स्वधर्महीनो द्रविणेन हीनो सरोगनेत्रो नृपचौरभीतः ॥
विरुद्धचेष्टो भवतीह मर्त्यो व्ययास्थितश्चेद्दिवसाधिनाथः ॥७॥

उपेन्द्रवज्रा० ॥ द्वादशस्थानमें सूर्य हो तो अपने कुलके धर्मोंसे वर्जित हो दरिद्री नेत्रोंमें रोग हो राजा और चौरसे त्रासयुक्त हो कुचेष्टा करनेवाला मनुष्य होवे ॥ ७ ॥

जडो मूकोन्मत्तो विकलहृदयोऽधोऽनुचितकृत्परप्रेष्यो मूर्तौ
शशिनि बहुशः क्षीणवपुषि ॥ कुलीरस्थे सौख्यो भवति वृषगे
भूरिविभवो भवेन्मेषे सस्वः कृशवपुषि पापेषु लघुता ॥ ८ ॥

शिखरिणी० ॥ चन्द्रभावफल कहते हैं । लग्नमें चन्द्रमा हो तो मूर्ख वाणीहीन और धूर्त्त सदा चित्तमें क्रोध करनेवाला नेत्रहीन अयोग्य कामको करनेवाला दूसरेका दास और बहुत कृश शरीर होवे, परन्तु कर्कका हो तो सुखी, वृषका हो तो बहुत ऐश्वर्यवान्, मेषका हो तो धनी, पापग्रहोंके साथ क्षीणचन्द्रमा हो तो पूर्वोक्तफलकी न्यूनता होती है ॥ ८ ॥

सुतसौख्यधान्यसुकुटुम्बयुतः शशिनि प्रपूर्णवपुषि द्रविणे ॥
लघुजाठराग्निधनबुद्धियुतं विकले कलावति वदंति बुधाः ॥ ९ ॥

प्रमिताक्षरा० ॥ धनस्थानमें पूर्ण चन्द्रमा हो तो पुत्र सुख अन्न सुन्दर परिवार इनसे संयुक्त हो, क्षीण चन्द्रमा हो तो पेटकी अग्नि धन बुद्धि यह न्यून होवे इस तरह पण्डित कहते हैं ॥ ९ ॥

हिंस्रः सुखोऽल्पप्रतिमोऽस्याद्बन्ध्वाश्रयोऽब्जे विदयस्तृतीये ॥
कृष्यंगनायानसुतांशुजातैः सौख्यं सुरार्चः सुखगे सुधांशौ ॥१० ॥

इंद्रवज्रा० ॥ तृतीय चन्द्रमा हो तो जीवहिंसा करनेवाला दुःखी भयवर्जित हो बंधुके आश्रयमें रहनेवाला दयाहीन होवे, चतुर्थ चन्द्रमा हो तो स्त्री असवारी पुत्र मोती प्रभृतियोंको भोगनेवाला देवतोंका पूजनेवाला हो ॥ १० ॥

सत्यः प्रसन्नः सुसुतार्थधीमाञ्जितेन्द्रियः संग्रहवान्सुतेऽब्जे ॥
मृद्वंगवह्निःसरुजारिकोपोऽलसोऽदयोऽल्पात्मजवान्रिपुस्थे ॥ ११ ॥

उपजातिवृ० ॥ पंचम चन्द्रमा हो तो सत्य बोलनेवाला आनन्दचेता शोभनीय पुत्र धन बुद्धि इनसे संयुक्त हो इन्द्रियजित अनेक वस्तुका संग्रह करनेवाला, षष्ठ चन्द्रमा हो तो जठराग्नि कम हो रोग और शत्रुसे युक्त हो आलस्यवान् निर्दयी अल्प पुत्रवाला होवे ॥ ११ ॥

ईर्ष्युः सदम्भो मदनातुरोऽस्वो नयांगहीनोऽस्तगते सुधांशौ ॥
सोद्विग्नचिन्तामयकार्श्यनिःस्वो भूपालचौरात्तभयोऽष्टमेऽब्जे ॥ १२ ॥

उपजाति० ॥ सप्तम चन्द्रमा हो तो ईर्षा करनेवाला अहंकारी कामके वशीभूत दरिद्री अधर्मी, अष्टम चन्द्रमा हो तो उदासीनता और चिंतासे युक्त कृश शरीर और दरिद्री होवे राजासे और चोरसे भयसंत्रस्त होवे ॥ १२ ॥

जनप्रियः सात्मजबंधुधीरः सुधर्मधीर्द्रव्यसुतस्त्रिकोणे ॥
लक्ष्मीसुकीर्तिः कृतकर्मसिद्धिर्भूपेष्टता शौर्यमिहास्ति खेन्दौ ॥ १३ ॥

उपजाति० ॥ नवम चन्द्रमा हो तो लोकोंका प्यारा हो पुत्र बन्धु बुद्धि इनसे संयुक्त हो धर्मात्मा और धनाढ्य होवे, दशम चन्द्रमा हो तो लक्ष्मीसे सत्कीर्तिसे संयुक्त सत्कर्मकी सिद्धिवाला राजपूज्य शूर होवे ॥ १३ ॥

मित्रार्थयुक्कीर्तिगुणैरुपेतो भोगी सुयानो भवभावगेन्दौ ॥
हिंस्रोंऽगहीनः सरिपुः सुहृत्सु वैषम्यकृत्स्वल्पदृगिन्दुरिःफे ॥ १४ ॥

इंद्रवज्रा० ॥ एकादश चन्द्र हो तो मित्र और धनसे संयुक्त सत्कीर्ति और सद्गुणोंसे संयुक्त ऐश्वर्य भोगनेवाला सुन्दर सवारीवाला होवे, द्वादश चन्द्रमा हो तो हिंसा करनेवाला गात्रभंग हो शत्रुसे संयुक्त हो मित्रोंके साथ वैर करनेवाला अल्पदृष्टि होवे ॥ १४ ॥

भ्रान्तधीः क्षततनुर्गमागमी साहसी च कुपितस्तनौ कुजे ॥
निर्धनः कुजनवैरमाश्रितो निर्दयः कशनभाग्धनोपगे ॥ १५ ॥

रथोद्धता० ॥ भावस्थ भौमफल कहते हैं । लग्नमें मंगल हो तो भ्रमबुद्धिवाला रणांकित शरीर हो इत उत आने जानेवाला हो निर्भय और क्रोधशील होवे, द्वितीय मंगल हो तो दरिद्री दुष्ट लोकोंके साथ वैर करनेवाला दयाहीन हो निकृष्ट अन्नको खानेवाला होवे ॥ १५ ॥

नृपकृपः सुखवित्तपराक्रमी भवयुतोऽनुजदुःखयुतस्त्रिगे ॥
असुखवाहनधान्यधनो जनो विकलधीः सुखगे सति भूसुते ॥ १६ ॥

द्रुतविलंबि० ॥ तृतीय मंगल हो तो राजासे कृपायुक्त सुख धन पुरु-

सार्थ इनसे संयुक्त ऐश्वर्यवान् भाईके दुःखसे संयुक्त होवे, चतुर्थ मंगल हो तो सुख वाहन अन्न द्रव्य इनसे हीन हो व्याकुल बुद्धिवाला होवे ॥ १६ ॥

असुतधनः कफवातवान्विबुद्धिः सुहृदबलासुखवर्जितः सुतस्थे ॥
रिपुगणहा प्रबलाग्निकामवांश्च सुजनगतोऽरिगतो धरात्मजश्चेत् १७॥

विषमवृ०॥ पंचम मंगल हो तो पुत्र और धनसे रहित कफवातप्रकृति बुद्धिहीन मित्र और स्त्रीके सुखसे वर्जित हो, षष्ठ मंगल हो तो शत्रुके समूहका मारनेवाला पेटकी अग्नि तेज हो और अत्यन्तकामी हो परिवारसंयुक्त होवे १७॥

अबलागतगेहसंचयो रुगनर्थोऽरिभयो द्युने कुजे ॥
रुधिरर्तो गतनिश्चयः कुधीर्विदयो निंद्यतमः कुजेऽष्टमे ॥ १८ ॥

वियोगिनी०॥ सप्तम मंगल हो तो स्त्रीसे हरा गया हो गृहका धन रोगी अन्यायी और शत्रुसे भययुक्त होवे, अष्टम मंगल हो तो रुधिरातिसारवाला होवे और उसकी कोई प्रतीति न करे दुष्टबुद्धि हो निर्दयी अतिनिन्दित होवे १८॥

समायुतो भूपतिमानयुक्तः सस्वो विधर्मो नवमे धराजे ॥
तोषावतंसोपकृतार्थयुक्तः सत्साहसैश्वर्ययुतोऽम्बरस्थे ॥ १९ ॥

इन्द्रवज्रा०॥ नवम मंगल हो तो ग्रामादि मर्यादासे संयुक्त राजमान्य धनी धर्मवर्जित होवे, दशम मंगल हो तो सन्तोषसे भूषित परोपकारी धनाढ्य हो धैर्य और सुन्दर ऐश्वर्यसे युक्त होवे ॥ १९ ॥

ताम्रविद्रुमसुशोणवस्त्रमुद्यानमानसहितो भवे कुजे ॥
बन्धनात्ययुतोऽल्पदृग्बलो मित्रनुत्कुमतिमान्कुजेऽन्त्यगे ॥२०॥

रथोद्धता०॥ एकादश स्थानमें मंगल हो तो तामा मूंगा सुन्दर लाल वस्त्र हर्ष असवारी मान इनसे संयुक्त होवे, द्वादश हो तो बंधन और मृत्युतुल्य कष्ट पावे नेत्ररोगी मित्रद्रोही दुर्बुद्धिवाला होवे ॥ २० ॥

शांतिनीतिसुतदारकलावान्दानधैर्यगुणवांस्तनुगे ज्ञे ॥
क्षेमसौख्यशुचिवित्तसुखैर्युक्सत्क्रियोऽखिलसुहृद्धनसंस्थे ॥ २१ ॥

स्वागता०॥ भावस्थ बुधफल कहते हैं। लग्नमें बुध हो तो क्षमा न्याय

पुत्र स्त्री कला (गीतनृत्यवाद्यकर्मप्रभृति) इनसे युक्त हो दाता धैर्यवान् सद्गुण सम्पन्न होवे, द्वितीय हो तो कुशल सौख्य पवित्रता धन सुख इनसे युक्त हो सत्कर्म करनेवाला सर्व लोकोंका प्रिय होवे ॥ २१ ॥

स्वजनयुक् जडधीर्बहुसाहसः कुमलतः कुमनास्त्रिगते बुधे ॥
सधनवाहनगीतगुणोऽटनो गृहसुखः सुखगः शशिजो यदा ॥ २२॥

द्रुतविलम्बित०॥ तृतीय बुध हो तो अपने लोकोंसे युक्त मूर्खबुद्धि बहुत साहसी दुष्ट पापसे निन्दितचेता होवे, चतुर्थ बुध हो तो धन वाहन गायन गुण (शौर्यौदार्यादि) इनसे संयुक्त भ्रमणशील गृहके सुखयुक्त होवे ॥ २२॥

मित्रपुत्रसुखयुक् शुभशीलो मंत्रशास्त्रविदसौ सुतगे ज्ञे ॥
वादविच्च रिपुयुग्गुणशाली निष्ठुरोऽलसयुतोऽरिगतश्चेत् ॥ २३ ॥

स्वागता०॥ पंचम बुध हो तो मित्र पुत्र सुख इनसे युक्त सुन्दर स्वभाववाला वैदिक आगमक मंत्रशास्त्र शिक्षाकल्प व्याकरणादि इनका जाननेवाला वह पुरुष होवे, जो षष्ठ बुध हो तो तार्किक हो शत्रुवान् गुणक्षांतिप्रभृतिसे विराजमान कठोर वचन बोलनेवाला आलस्ययुक्त होवे ॥ २३ ॥

धर्मवित्सुवचनः शुभशीलः कामिनीकनकसौख्ययुतोऽस्ते ॥
ख्यातिमान्नृपकृपः सविरोधोऽन्योपकारसहितो विदि रन्ध्रे ॥ २४॥

स्वागता०॥ सप्तममें बुध हो तो धर्मका जाननेवाला मधुरभाषी सुन्दर स्वभाववाला स्त्री सुवर्ण सौख्य इनसे संयुक्त हो, अष्टममें हो तो ख्यातिमान् राजासे सत्कारयुक्त हो और वैरसहित हो और लोकोंका उपकार करनेवाला होवे ॥ २४ ॥

धनसुतसुखभागी ज्ञः सहर्षोपकारी वितरणगुणयुक्तः सोन्मना धर्मधाम्नि ॥ स सुमतिशुभवाक्यः सप्रतिष्ठोऽतिवित्तः शुचितरवरकर्मा विक्रमी कर्मणि ज्ञे ॥ २५ ॥

मालिनी०॥ नवम बुध हो तो धन पुत्र सुख इनका भोगनेवाला होवे पण्डित हो प्रीतिसहित पराये उपकार करनेवाला दानशौंड उत्सुकचेता होवे,

दशममें बुध हो तो सुन्दर बुद्धिमान् और मधुरवचन कहनेवाला प्रतिष्ठासे युक्त धनवान् अत्यन्त शुद्ध सदाचारोंसे युक्त होवे पराक्रमी होवे ॥ २५ ॥

सानन्दविद्यः सधनः सुशीलो भोगी सदायः शशिजे भवस्थे ॥
सत्संगकर्मापगतोदयश्च धूर्तः सपापो मलिनो व्ययस्थे ॥२६॥

इन्द्रवज्रा० ॥ एकादश बुध हो तो सुख और विद्यासे युक्त धनी सुशील भोग भोगनेवाला नित्य लाभवाला, द्वादश स्थानमें बुध हो तो सज्जन गोष्ठी सत्कर्म इनसे रहित हो दयाहीन धूर्त (गुर्वादि वचनोंका उल्लंघन करनेवाला) हो स्नान दन्तधावनादिसे वर्जित होवे ॥ २६ ॥

विद्वान्नृपेज्यः सुतरामुदारो दारादिसौख्यस्तनुगो गुरुश्चेत् ॥
त्यागी सुशीलाकृतिधीः सुविद्यः संत्यक्तवैरः सधने धनेज्ये ॥२७॥

इन्द्रवज्रावृ०॥ भावस्थ गुरुफल कहते हैं । जो लग्नमें बृहस्पति हो तो पण्डित राजपूज्य अत्यन्त उदार स्त्रीपुत्रादि सौख्ययुक्त, धनभावमें हो तो दानी सुशील बुद्धिवाला सुन्दर विद्यावान् सबके साथ प्रीति रखनेवाला धनाढ्य होवे॥ २७॥

असुजनः कृपणो विमनाः कृशः क्षुधयुतोऽलसभाक् सहजे गुरौ ॥
भवयुतो बहुवित्तमुदान्वितो नृपकृतगृहसौख्ययुतः सुखे ॥ २८ ॥

द्रुतविलम्बित०॥ तृतीय बृहस्पति हो तो दुर्जन कृपण (कंजूस) उदास चित्तवाला दुबला (माडा) शरीर बुभुक्षायुक्त आलस्यको सेवन करनेवाला हो, चतुर्थ स्थानमें बृहस्पति हो तो ऐश्वर्यवान् बहुत धन और प्रीतिसंयुक्त हो राजाके किये हुए गृहके सौख्यसे संयुक्त होवे ॥ २८ ॥

सुमित्रपुत्रः ससुखार्थमंत्रः प्राज्ञः शुचिः श्रेष्ठतमः सुतस्थे ॥
हिंस्रोऽलसः कीर्तियुतोऽरिहन्ता विरागवाञ्छत्रुगृहे गुरुश्चेत् ॥२९॥

उपजाति० ॥ जो पञ्चम बृहस्पति हो तो सुन्दर मित्र और पुत्रवाला सुख धन मंत्र वैदिकागमक इनसे युक्त हो पण्डित पवित्र मान्यवर होवे, षष्ठ बृहस्पति हो तो हिंसा करनेवाला आलस्ययुक्त कीर्तिमान् शत्रुका मारनेवाला विशेष मायामोहसे वर्जित होवे ॥ २९ ॥

प्राज्ञः सुमित्रो विनयी सुमंत्री स्त्रीसौख्ययुक्तस्तमगे सुरार्ये ॥
प्रेष्योऽतिदीनो मलिनोऽलसः स्याद्विवेकहीनो विकृतोऽष्टमस्थे ३०

उपजाति० ॥ सप्तम बृहस्पति हो तो बुद्धिमान् अच्छे मित्रोंवाला नम्र (गुर्वादिकोंकी सेवा करनेवाला) सदुपदेश करनेवाला स्त्रीके सौख्यसे संयुक्त होवे, अष्टम बृहस्पति हो तो दास होवे अत्यंत दुर्बल स्नानादि करनेमें आलस्य करे सदा आलस्ययुक्त रहे निर्विवेकी धर्महीन होवे ॥ ३० ॥

नृपाभिमानी सुकृतिः सुविद्यो विख्यातियुक् पुण्यगते सुरेज्ये ॥
सराजचिह्नः सुविभूतियुक्तः सश्रीसुखः कर्मगृहे गुरौ च ॥ ३१ ॥

उपजाति० ॥ नवम बृहस्पति हो तो राजमान्य पुण्यवान् विद्यावान् प्रसिद्ध होवे, दशममें हो तो राजाके लक्षणोंसे युक्त होवे सुन्दर ऐश्वर्ययुक्त हो सम्पत्ति सुख इनसे युक्त होवे ॥ ३१ ॥

सविक्रमायाम्बरमानवित्तः सुकीर्तिसामर्थ्ययुतो भवस्थे ॥
सोद्वेगचिन्तालसपापकोपोऽव्रीडो विमानी कुपितो व्ययेज्ये ॥३२॥

उपजाति० ॥एकादशमें बृहस्पति हो तो पराक्रम लाभ वस्त्र मान धन इनसे संयुक्त सुंदरकीर्ति समर्थ (शक्य) इनसे संयुक्त होवे, द्वादशमें हो तो भ्रान्ति चिन्ता आलस्य पाप क्रोध इनसे युक्त हो निर्लज्ज मानहीन क्रोधशील होवे३२

सदा सुकर्मा विमलोक्तिकृद्गुणी सभूतिकन्दर्पसुखस्तनौ कवौ ॥
सुभोजनी सद्वसनी सुवाग्धनी युकीर्तियुग्धान्यगते भृगोः सुते ३३॥

वंशस्थ० ॥ भावस्थ शुक्रफल कहते हैं। लग्नमें शुक्र हो तो नित्य अच्छे काम करनेवाला स्पष्ट बोलनेवाला शौर्यौदार्यादि गुणवान् ऐश्वर्यवान् और कामी होवे, द्वितीय हो तो अच्छे आहार करनेवाला सुन्दर वस्त्र पहरनेवाला सुन्दर बोलनेवाला धनाढ्य सुन्दर कीर्तियुक्त होवे ॥ ३३ ॥

कृशो दुरात्मा कृपणोऽधनोऽस्मरः कुचेष्टितोऽनिष्टकरस्तृतीयगे ॥
सुभूमिमित्रालययानमानमुद्युत्सुखी धर्ममनाः सुखे सिते ॥ ३४ ॥

वंशस्थ० ॥ तृतीय शुक्र हो तो कृशशरीर हो दुष्टबुद्धि दान देनेवाला न

हो निर्धनी मन्द कामाग्निवाला दुष्ट चेष्टावान् निकृष्टकामको करनेवाला होवे, चतुर्थ हो तो भूमि मित्रगृह असवारी मान हर्ष इनसे युक्त हो सुखी रहे पुण्यात्मा होवे ॥ ३४ ॥

नानागमी भूरिधनात्मजः सुखी समानदानः सुतगे भृगोः सुते ॥
स्त्रीसौख्यहीनस्तनुरोगभाङ्नरो विभूत्ययुक्तो मलिनः सितेऽरिगे ३५ ॥

वंशस्थ० ॥ पंचममें शुक्र हो तो अनेक शास्त्रोंका जाननेवाला बहुत धनी बहुत पुत्रवान् सुखी मानी दानी होवे, षष्ठमें हो तो स्त्रीके सुखसे वर्जित हो रोगी ऐश्वर्यवर्जित हो स्नानादि न करनेसे अपवित्र हो ॥ ३५ ॥

कलिप्रियो गीतरुचीरतिप्रियः श्रेष्ठोऽम्बुलीलाकुशलः सितेऽस्तगे ॥
नीचःसकांतो विधनः शठोऽभयः स्त्रीपुत्रचिन्तासहितोऽष्टमे भृगौ ३६

वंशस्थ० ॥ सप्तम शुक्र हो तो कलहशील हो गायनमें इच्छा रखे संभोगमें प्रिय श्रेष्ठ हो जलक्रीडा करनेमें निपुण, अष्टममें हो तो वंशके अनुचित कर्म करनेवाला स्त्रीसहित हो दरिद्री दुर्जन निर्भय होवे स्त्री और पुत्रकी चिन्तासे युक्त होवे ॥ ३६ ॥

सकलसुकृतकर्मा पापहर्ता सतोषो विगतसकलरोषो धर्मगे भार्गवेऽस्मिन् ॥ स्वजनयुतकलत्रप्रीतियुक्तो सवित्तः शुचितरवरचित्तः सन्मतिः कर्मसंस्थे ॥ ३७ ॥

मालिनी० ॥ नवम शुक्र हो तो सम्पूर्ण पुण्यकर्मोंका करनेवाला पापवर्जित हो संतापी हो क्रोधवर्जित होवे, दशम हो तो अपने परिवार पुत्र स्त्री इनसे हर्षयुक्त धनाढ्य हो पवित्र और उदारचेता हो बुद्धिमान् होवे ॥ ३७ ॥

बहुधनागमवान्सुमतिः पुमान्नटनगीतविदायगते सिते ॥
गतसुकर्मक्रियः स्मरचेष्टितः कलिरुचिः सधनो व्ययगे भृगौ ॥ ३८ ॥

द्रुतविलम्बित० ॥ एकादश स्थानमें शुक्र हो तो बहुतधनी शास्त्रवेत्ता बुद्धिमान् नाच गायन जाननेवाला होवे, द्वादश हो तो दुष्कर्म करनेवाला कामी होवे कलहमें इच्छा रखे धनाढ्य होवे ॥ ३८ ॥

दरिद्रो हृद्रोगी मलिनतनुमान्कामवशगः शिशुत्वे पीडार्त्तोऽलसवशगतोऽगेऽर्कतनये ॥ हये मीने नक्रे घटधटभयातौ यदि यमस्तदानीं विद्वानीश्वरसमतया युक्त शुभतनुः ॥ ३९ ॥

शिखरिणी० ॥ भावस्थ शनिफल कहते हैं। लग्नमें शनि हो तो दरिद्री हृदयमें रोगयुक्त मलिन शरीर (स्नानादिवर्जित) रहे कामी रहे बाल्यावस्थामें बीमार रहे आलस्ययुक्त होवे, परन्तु जो धनुमीन मकर कुंभ तुला राशिका हो तो पण्डित और राजाके तुल्य हो सुहावना शरीर होवे ॥ ३९ ॥

स्वजनपदगतोऽस्वोऽसौ कुटुम्बोज्झितः स्यात्परजनपदयातः सर्वसौख्योऽसिते स्वे ॥ अहितहितजनानां पोषको भूपमान्यो गुणगणबलशाली विक्रमी विक्रमस्थे ॥ ४० ॥

मालिनी० ॥ दूसरा शनि हो तो अपने देशसे चला गया हो दरिद्री रहे कुटुम्बसे छोड दिया गया हो दूसरे देशमें जानेपर संपूर्ण सौख्यसे संयुक्त होवे तीसरा शनि हो तो शत्रु मित्र लोकोंका पालन करनेवाला राजासे मानयुक्त होवे गुण शौर्यौदार्यादि समूहसे सेनासे विराजमान रहे पराक्रमवान् होवे ४०॥

बहुवित्तवातसहितो विबलोऽलसकार्श्यदुःखसहितः सुखगे ॥
गतकामकान्तिसुतवित्तसुखः सगदो यदा रविसुतः सुतगे ॥ ४१ ॥

प्रमिताक्षरा० ॥ चतुर्थ शनि हो तो बहुत धनी और वातप्रकृति होवे बलरहित हो आलस्य कृशता दुःख इनसे युक्त रहे, पंचम हो तो कन्दर्प छवि पुत्र धन सुख इनसे वर्जित रहे रोगी होवे ॥ ४१ ॥

विबलारिवान्धनकुटुम्बयुतः सगणो बली रिपुगतेऽर्कसुते ॥
सगदः प्रियालयधनैर्विमुखः परभाग्यवान्भवति सप्तमगे ॥ ४२ ॥

प्रमिताक्षरा० ॥ षष्ठ शनि हो तो निर्बल शत्रुवाला धन कुटुम्बसे युक्त सेनासहित हो बलवान् होवे, सप्तममें हो तो रोगी रहे स्त्री गृह धन इनसे सुख न होवे दूसरेके ऐश्वर्यका भोग करनेवाला होवे ॥ ४२ ॥

कृशतनुः सगदोऽलसभाग्विदृग्विगततोषसुखोऽष्टमगे शनौ ॥
सुसुतवित्तसुखो विमलांगभाग्विमतिभाग्विमना नवमेऽर्कजे ॥ ४३ ॥

द्रुतविलम्बित० ॥ अष्टममें शनि हो तो कृश शरीर रहे रोगी हो आलस्ययुक्त रहे नेत्रहीन होवे संतुष्टता सुख इनसे वर्जित होवे, नवममें हो तो पुत्र धन सुख इनसे युक्त हो निर्मल शरीर रहे बुद्धिहीन दुष्टचित्तवाला होवे ॥ ४३ ॥

प्राज्ञः प्रधानमतिमान्सभयो विनीतो ग्रामाधिकारसहितः सधनोऽम्बरस्थे ॥ कृष्यौर्णिकाश्वगजनीलबलान्वितः स्यात्सद्वस्तुता भवति लाभगतेऽर्कसूनौ ॥ ४४ ॥

वसन्तति० ॥ दशममें शनि हो तो पण्डित होवे श्रेष्ठ बुद्धिमान् भाग्ययुक्त रहे नम्र होवे मण्डलेश्वर हो धनाढ्य होवे, एकादशमें हो तो कृषि (खेती) ऊर्ण (ऊन) घोटक हस्ती नलिमणि सेना इनसे युक्त होवे अच्छी चीजोंसे युक्त होवे ॥ ४४ ॥

विदयो विधनः स्वकर्महीनो विसुखो हीनतनुर्व्ययेऽर्कपुत्रे ॥
तनुभादिफलं शनेर्यदुक्तं तमसश्चापि हि भावजं तदेव ॥ ४५ ॥

अर्द्धसमवृ० ॥ द्वादशमें शनि हो तो दयाहीन हो दरिद्री अपने कुलके कर्मोंसे हीन रहे दुःखी क्षीण शरीर होवे यह निश्चय है। लग्नादि बारहभावोंका फल जो शनिका कहा है राहुका और केतुकाभी वही तन्वादिभावोंका फल कहना ४५॥

सौम्यैस्तन्वादिवृद्धिर्भवति खलखगैः संक्षयः स्याच्च किंच ।
सत्याचार्या वदंति व्ययरिपुनिधने तत्फलं च प्रतीपम् ॥
स्वोच्चे कोणे स्वगेहे सुहृदरिभवने नीचभे सद्विपाकं ।
पूर्णं पादोनमर्धांघ्रिलघु च विफलं दुष्फले वैपरीत्यम् ॥ ४६ ॥

इति श्रीजयदेवकृतायां जातकचन्द्रिकायां भावाध्यायो दशमः ॥ १० ॥

स्रग्धरा० ॥ तन्वादि बारह भावोंका विशेष फल कहते हैं । शुभग्रहोंसे तन्वादि बारह भावोंकी वृद्धि होती है पापग्रहोंसे हानि होती है और कुछ सत्याचार्य कहते हैं द्वादश षष्ठ अष्टममें विपरीत फल करते हैं जैसे द्वादशमें शुभग्रह

हों तो खर्चकी हानि पापग्रह खर्चकी वृद्धि करते हैं, षष्ठ स्थानमें शुभग्रह हों तो शत्रुकी हानि पापग्रह शत्रुकी वृद्धि करते हैं अष्टम स्थानमें शुभग्रह मृत्युकी हानि करते हैं पापग्रह मृत्युकी वृद्धि करते हैं, उच्चका ग्रह शुभ फलको पूर्ण अर्थात् चार चरणफल देता है, मूल त्रिकोणका ग्रह पादोन अर्थात् तीन चरण फल देता है स्वराशिका ग्रह अर्ध अर्थात् दो चरणफल देता है मित्रक्षेत्री ग्रह अंघ्रि अर्थात् एकचरण फल देता है शत्रुक्षेत्री एक चरणसेभी अल्प फल देता है, नीच राशिका और अस्तका ग्रह कुछभी शुभफल नहीं देता अशुभ फल इसके विपरीत देता है। जैसा अस्तका ग्रह हो अथवा नीचका ग्रह हो तो अशुभ फलको पूर्ण अर्थात् चार चरण फल देता है, शत्रुक्षेत्री ग्रह पादोन अर्थात् तीन चरणफल देता है मित्रक्षेत्री ग्रह अर्ध अर्थात् दो चरणफल देता है स्वक्षेत्री ग्रह अंघ्रि अर्थात् एक चरणफल देता है मूलत्रिकोणका ग्रह एक चरणसेभी अल्पफल देता है उच्चका कुछभी फल नहीं देता जब जिस ग्रहकी दशाप्रवेश हो वा अष्टक वर्गमें प्रवेश हो तब उसका यह पूर्वोक्त फल विचारना ॥ ४६ ॥

इति श्रीकेशवानन्दविरचितायां जातकचन्द्रिकाभाषायां भावाध्यायो दशमः ॥ १० ॥

पुंयोषितोर्जन्मफलं तु तुल्यं किं चात्र राशीश्वरलग्नसंस्थम् ॥
तद्वीर्ययोगाद्वपुराकृतिः स्यात्सौभाग्यशीलत्वमुशंति चास्ते ॥ १ ॥

इन्द्रवज्रा० ॥ स्त्रीजातक कहते हैं। पुरुष स्त्रीका जन्मफल तो तुल्य होता है परन्तु कोई फल स्त्रियोंके असम्भव हैं इस हेतुसे यहां स्त्रीजातकमें कहते हैं। लग्नचन्द्रमाके बलके योगसे स्त्रीका शरीर और आकार होवे, सप्तममें सौभाग्य और स्वभाव होवे एवं आचार्य कहते हैं स्पष्ट आगे कहते हैं ॥ १ ॥

समगतेऽब्जे लग्नेऽबलाकृतिस्थिता शुभखगयुते दृष्टे सच्छील-
भूषणसंयुता ॥ असमभगतौ चेतौ पुंरूपशीलयुता खलखग-
दृष्टौ पापा गुणैश्च विवर्जिता ॥ २ ॥

विषम० ॥ स्त्रीका स्वभावादिक ज्ञान कहते हैं। समराशिमें लग्न चन्द्रमा

हों तो स्त्री अपने आकारकी अर्थात् स्त्रीस्वभावकी होती है, शुभग्रह लग्न चन्द्रमामें युक्त हो अथवा देखे तो सुन्दरस्वभाव सुन्दरभूषणयुक्त होती है, लग्न चन्द्रमा विषम राशिके हों तो स्त्री पुरुषके तुल्य वर्णकी और पुरुषतुल्य स्वभावकी होती है, लग्नचन्द्रमाको पापग्रह देखे तो स्त्री पाप करनेवाली अच्छ गुणोंसे वर्जित होती है, लग्नचन्द्रमाको शुभपापग्रह देखे तो मिश्रफल कहना ॥ २ ॥

ताभ्यां सप्तमभे बलेन सहिते सौम्यग्रहावीक्षिते ।
भर्त्ता कापुरुषोऽर्कजेन्दुसुतयोः क्लीबोऽस्तराशिस्थयोः ॥
प्रायोऽस्ते चरभे प्रवाससहितो भर्त्ता स्थिरे स्वस्थितः ।
शेषर्क्षेऽस्तगते द्विभावसहितो जातः स्त्रियाः स्यात्पतिः ॥ ३ ॥

शार्दूलवि० ॥ भर्तृगुणज्ञान कहते हैं । लग्नसे अथवा चन्द्रमासे सप्तम राशि बलहीन हो शुभग्रह न देखें तो स्त्रीका भर्ता कातर (कुत्सित) होवे, लग्न चन्द्रमासे सप्तम राशि शनि बुधयुक्त हो तो भर्ता नपुंसक हो, लग्नचन्द्रमासे सप्तम चर राशि हो तो भर्ता प्रवासी होवे, स्थिर राशि हो तो भर्ता गृहमेंही स्थित होवे, द्विस्वभावराशि हो तो भर्ता कभी गृहमें रहे कभी प्रवासी होवे ३ ॥

सूर्यर्क्षे वांशके वा द्युनभवनगते भूरिकर्मा मृदुः स्या- ।
च्चान्द्रे कामी मृदुर्वा क्षितिसुतगृहगे स्त्रीविलोलोऽतिकोपः ॥
बौद्धे विद्वान्सुशीलःसुरगुरुगृहगे सद्गुणी स्यात्स्ववश्यः
शौक्रे कांतः सुभाग्यो रविसुतभवने मूर्खभर्त्ता जरार्त्तः ॥ ४ ॥

स्रग्धरा० ॥ फिर भर्तृगुणज्ञान कहते हैं । सिंहराशि वा सिंहनवांशक स्त्रीके जन्मलग्नसे सप्तममें होनेमें उसका भर्ता अतिव्यवहार कर्म करनेवाला और कोमल होगा, कर्क राशि वा कर्कनवांशक सप्तममें हो तो उसका भर्ता कामातुर और कोमल होगा, मेष वृश्चिक राशि अथवा मेष वृश्चिक नवांशक सप्तममें हो तो उसका भर्ता स्त्रियोंकी अति इच्छा करनेवाला और कोप करनेवालाभी होगा, मिथुन कन्या राशि वा मिथुन कन्या नवांश सप्तममें हो तो उसका भर्ता पंडित और सुशील होगा धनुर्मीन राशि वा धनुर्मीन नवांश

सप्तममें हो तो उसका भर्ता गुणवान् जितेन्द्रिय और तेजस्वी होगा, वृष तुला राशि वा वृष तुला नवांशक सप्तममें हो तो उसका भर्ता रूपवान् भाग्यशील होगा, मकर कुंभ राशि वा मकर कुंभ नवांश सप्तममें हो तो उसका भर्ता मूर्ख और बूढा होगा, जो राशि और हो और अंश औरका औरही हो तो उन दोनोंमें जो बली हो उसका फल कहना ॥ ४ ॥

पत्युज्झिता सप्तमराशिगेऽर्के भूम्यात्मजेऽस्ते विधवैव बाल्ये ॥
पापेक्षिते भास्करनन्दनेऽस्मिन्कन्यैव वृद्धत्वमुपैति जाता ॥ ५ ॥

इन्द्रवज्रा० ॥ योगान्तर कहते हैं । स्त्रीके जन्मलग्नसे वा चन्द्रमासे सप्तम सूर्य होनेमें उस स्त्रीका पति उसको छोड देता है, मंगल सप्तममें हो तो छोटीही अवस्थामें रण्डा हो जाती है, शनि सप्तममें हो पापग्रह देखता हो तो कन्याही बुढी हो जाती है उसका विवाह नहीं होता है ॥ ५ ॥

त्र्यादिभिः स्याद्बलैरस्तगैर्विप्रिया मिश्रखेटैः पुनर्भूर्भवेज्जातिका ॥
सप्तमे वीर्यहीने शुभे चेक्षिते क्रूरखेटे स्वभर्त्रोज्झिता स्वेच्छगा ॥ ६ ॥

स्रग्विणी० ॥ तीन वा जादे पापग्रह सप्तममें होनेसे स्त्री रण्डा होती है, पाप सौम्यग्रह सप्तममें हो तो विवाहित पतिको छोडकर दूसरेकी स्त्री होती है, सप्तममें पापग्रह होवे निर्बल शुभग्रह देखे तो उसका भर्ता उसको छोड देता है वह स्वच्छंदगामिनी होती है ॥ ६ ॥

परस्परांशस्थितयोः सितारयोरन्यप्रसक्तैव चलस्वभावका ॥
द्यूने यदा शीतगुनान्वितौ च तौ स्यातां सितारौ परपूरुषाप्रिया ॥ ७ ॥

उपजाति० ॥ जिसके जन्ममें मंगल वृष तुला नवांशकमें हो शुक्र मेष वृश्चिक नवांशकमें हो वह स्त्री दूसरे पुरुषके साथ आसक्त और चंचल स्वभावकी होती है; चन्द्रमायुक्त शुक्र मंगल सप्तममें हो तो (पतिकी आज्ञासे) स्त्री परपुरुषगामिनी होती है ॥ ७ ॥

आरार्कजर्क्षोदयगेन्दुशुक्रो पापेक्षितावन्यरतांबया चेत् ॥
भौमांशगेऽस्तेऽर्कसुतेक्षिते च सरुग्भगा स्याच्छुभगा शुभांशे ॥ ८ ॥

उपजातिवृ० ॥ जो मेष वृश्चिक मकर कुंभ इनमेंसे कोई राशि लग्नमें चन्द्रमा शुक्र संयुक्त होवे पापग्रह देखे तो स्त्री अपनी मातासहित व्यभिचारिणी होवे, सप्तममें मेष वृश्चिक नवांश हो और शनि देखे तो उस स्त्रीके भगमें रोग रहे, शुभग्रहका अंशक सप्तममें हो तो स्त्री सुन्दर भगवाली होवे ॥ ८ ॥

ईर्ष्यायुक्ता सुसौख्या पतिहृदयपरा चन्द्रशुक्रौ तनुस्थौ ।
चेद्विचन्द्रौ भवेतां सुसुखगुणयुता स्यात्सुविज्ञा कलासु ॥
स्यातां शुक्रेन्दुपुत्रो यदि रुचिरतनुः स्त्री सुभाग्येन युक्ता ।
तस्मिंश्चेत्सौम्यजीवासुरवरगुरवोऽनेकसौख्या गुणाढ्या ॥ ९ ॥

स्रग्धरा० ॥ जो चन्द्रमा शुक्र लग्नमें हों तो स्त्री दूसरेकी रीस करनेवाली और सदा सौख्ययुक्त रहे पतिकी अत्यन्त प्यारी होवे, बुध चन्द्रमा लग्नमें हों तो सुन्दर सुखवाली अच्छे गुणोंसे युक्त और अनेक कलाओंको जाननेवाली होवे, जो लग्नमें शुक्र बुध हों तो स्त्री सुंदर रूपवती सौभाग्यवती होवे, जो लग्नमें बुध बृहस्पति शुक्र होवे तो स्त्री अनेक सौख्यवती अनेक सद्गुणोंसे युक्त होवे ॥ ९ ॥

कुजज्ञजीवशुक्रैश्च सबलैः समलग्नगैः ॥
ब्रह्मज्ञा भूरिशास्त्रज्ञा भूमौ ख्यातियुता पुनः ॥ १० ॥

अनुष्टुप्० ॥ मंगल बुध बृहस्पति शुक्र यह बलिष्ठ होके सम राशिके लग्नमें हों तो स्त्री सुन्दर कीर्तिवाली परब्रह्मको जाननेवाली बहुत शास्त्रोंको जाननेवाली पृथ्वीमें ख्यातियुक्त होवे ॥ १० ॥

पृष्ठोदयर्क्षेषु च कण्टकस्थाः सौम्याः खलाः सूर्ययुता नृराशौ ॥
कांता भवेद्भूपतिकामिनी सा सुशीलिनी पुत्रधनैरुपेता ॥ ११ ॥

उपजातिवृ० ॥ पृष्ठोदय राशियोंके शुभग्रह केन्द्रमें हों सूर्ययुक्त पापग्रह नृराशियोंके हों तो स्त्री सुंदर रूपवती और राजाकी स्त्री सुन्दर स्वभाववाली पुत्रवती धनवती होवे ॥ ११ ॥

यदि तुंगगः शशिसुतस्तनुगो भवभावगो यदि सुरेन्द्रगुरुः ॥
नृपकामिनी भवति सा वनिता शुभशीलसौख्यसुरूपयुता ॥ १२ ॥

प्रमिताक्षरा०॥ जो लग्नमें बुध कन्याका हो एकादश स्थानमें कर्कका बृहस्पति हो तो वह स्त्री राजभार्या होती है सुन्दर सौख्य और सुन्दर चरितवाली सुरूपवती होती है ॥ १२ ॥

रसवर्गकेषु यदि शुद्धतमस्त्रिदशार्चितः खलु चतुष्टयगः ॥
अपि पूर्णकायशशिदृष्टियुतो नृपचित्तवित्तसहिता वनिता ॥ १३॥

प्रमिताक्षरा०॥ जो षड्वर्गकी कुण्डलियोंमध्ये बलवान् बृहस्पति केंद्रमें हो पूर्णचन्द्रमा देखे वा संयुक्त होवे तो निश्चय राजाकी प्यारी और धनसे युक्त स्त्री होवे ॥ १३ ॥

यदि कामधामगसितेन्दुसुतौ गुरुवीक्षितौ भगवतः शशभृत् ॥
नरनाथयोषिदतिकीर्तिसुखा बहुपुत्रिणी शुभगता सहिता ॥ १४॥

प्रमिताक्षरा०॥ जो सप्तम स्थानमें बृहस्पतिकी दृष्टियुक्त शुक्र बुध हों चन्द्रमा एकादशस्थानमें हो तो स्त्री राजभार्या अतिकीर्ति और सुखवती बहुत पुत्रवती अच्छे चालचलनकी होवे ॥ १४ ॥

यदयोग्यमेति फलं तत्रभवं वनितासु न वदंति बुधाः ॥
नरनाथतादि च नपुंसकतादि फलं वदन्ति खलु तत्पतिषु ॥ १५॥

इति श्रीजयदेवकृतायां जातकचन्द्रिकायां स्त्रीजातकाध्याय एकादशः ॥ ११॥

प्रमिताक्षरा०॥ स्त्रियोंके ग्रहोंका जो फल भर्त्ताके योग्य हो उसको पण्डितजन स्त्रियोंमें नहीं कहते हैं, राज्यादि लाभ शुभफल और नपुंसकतादि प्रभृति अशुभफल निश्चय स्त्रियोंके पतियोंमें कहते हैं ॥ १५ ॥

इति श्रीकेशवानन्दविरचितायां जातकचन्द्रिकाभाषायां स्त्रीजातकाध्याय एकादशः ११॥

सूर्येऽष्टमे वह्निभयान्मृतिर्भवेच्चन्द्रे जलाद्भूमिसुते च शस्त्रतः ॥
बुधे ज्वरादामयतः सुरार्चिते शुक्रे क्षुधः सूर्यसुते तृषोद्भवा ॥ १ ॥

उपेन्द्रवंशा०॥ निर्याणाध्याय कहते हैं। अष्टम स्थानमें सूर्य हो तो अग्निभयसे, चंद्रमा हो तो जलसे, मंगल हो तो शस्त्रसे, बुध हो तो ज्वरसे, बृहस्पति

हो तो अज्ञातरोगसे, शुक्र हो तो तृषासे, शनि हो तो क्षुधासे मृत्यु होवे. दो वा बहुत ग्रह अष्टममें हों तो इनमेंसे जो बलिष्ठ हो उसके हेतुसे मृत्यु होवे ॥ १ ॥

शून्येऽष्टमे पश्यति यो बलीयांस्तद्धातुकोपोद्भवमृत्युमेति ॥
चरेऽष्टमे स्यान्निधनं विदेशे स्थिरे स्वदेशे द्वितनौ पथि स्यात् ॥ २ ॥

उपजातिवृ० ॥ जब अष्टमस्थानमें कोई ग्रह न हो तो जो बलवान् ग्रह अष्टमस्थानको देखे उसके धातुके कोपसे मृत्यु होती है अर्थादेव अष्टमस्थानमें जो राशि हो वह राशि 'शिरोमुखं बाहुयुगं' इत्यादि पूर्वोक्त क्रमसे कालपुरुषके जिस अंगमें हो उस अंगमें उस धातुके कोपसे मृत्यु होती है, इसमेंभी मृत्यु देनेवाला ग्रह बलवान् हो तो शुभकर्मसे, बलहीन हो तो पापकर्मसे, मध्यम हो तो मिश्रकर्मसे धातुकोप होगा, अष्टममें चरराशि हो तो परदेशमें, स्थिरराशि हो तो अपने देशमें, द्विस्वभाव राशि हो तो मार्गमें मृत्यु होवे ॥ २ ॥

सूर्ये पित्तः श्लेष्मवातौ हिमांशौ पित्तश्लेष्मौ भूमिजे ज्ञे त्रयोऽपि ॥
जीवे श्लेष्मा भार्गवे श्लेष्मवातौ सौरे श्वासो धातवः स्युर्ग्रहाणाम् ३ ॥

शालिनी० ॥ सूर्यमें पित्तधातु, चन्द्रमामें कफवात, मंगलमें पित्तकफ, बुधमें त्रिदोष (वातपित्तकफ), बृहस्पतिमें कफ, शुक्रमें कफवात, शनिमें श्वास (वात) यह ग्रहोंके धातु हैं ॥ ३ ॥

आरार्कयोर्मृत्युसुखास्थयोश्च शिलाप्रहारान्मृतिरस्ति जंतोः ॥
बंध्वस्तमेषूरणगैर्यमेन्दुक्षोणीसुतैः स्यात्खलु कूपपातात् ॥ ४ ॥

उपजातिवृ० ॥ अष्टम मंगल चतुर्थ सूर्य हो तो शिलाके प्रहारसे, चतुर्थ शनि सप्तम चन्द्रमा दशम मंगल हो तो कूएँमें गिरनेसे निश्चय प्राणीकी मृत्यु होती है ॥ ४ ॥

कन्यर्क्षगौ भास्कररात्रिनाथौ क्रूरेक्षितौ चेत्स्वजनाद्वधः स्यात् ॥
द्विदेहलग्ने यदि सूर्यचन्द्रौ जले विमग्नाम्रियते स जातः ॥ ५ ॥

उपजाति० ॥ जो कन्याराशिमें सूर्य चन्द्रमा हों और पापग्रह देखता हो तो अपने मनुष्यके हाथसे मृत्यु होवे, द्विस्वभावराशि लग्नमें हो सूर्य चन्द्रमा संयुक्त हों तो वह मनुष्य जलमें डूबनेसे मरता है ॥ ५ ॥

कर्केऽर्कपुत्रे मृगगे मृगाङ्के जलोदरान्मृत्युमुपैति जातः ॥
पापद्वयान्तर्गतगे कुजर्क्षे स्थिते विधावायुधतोऽग्नितो वा ॥ ६ ॥

उपजाति० ॥ कर्कमें शनि मकरमें चन्द्रमा हो तो जलोदर (पाण्डुरोग) से जातक मृत्युको पाता है, पापग्रहोंके मध्यमें मेष वृश्चिकका चन्द्रमा हो तो शस्त्रसे अथवा अग्निसे जातक मृत्युको पाता है ॥ ६ ॥

कन्यायां चेत्पापमध्यस्थितेन्दुर्मृत्युर्जंतोः शोणितोद्भूतरोगात् ॥
सौरर्क्षस्थे तद्वदेवौषधीशे वह्नौ पाताद्रज्जुना वा वधः स्यात् ॥ ७ ॥

शालिनी० ॥ जो कन्यामें चन्द्रमा पापग्रहोंके बीच हो तो रुधिरविकारसे प्राणीकी मृत्यु होवे, मकर कुंभमें चन्द्रमा पापग्रहोंके बीच हो तो अग्निमें पडनेसे अथवा रस्सी (फांसी) से प्राणीकी मृत्यु होवे ॥ ७ ॥

धीधर्मसद्मगतयोः पापखेचरयोस्तथा ॥
सौम्यग्रहादृष्टयोश्च बंधनान्मृत्युमाप्नुयात् ॥ ८ ॥

अनुष्टुप्० ॥ जो पंचम नवम पापग्रह हों और उनको शुभग्रह न देखें तो मनुष्य बन्धनसे मृत्युको पाता है ॥ ८ ॥

पाथोनराशिर्यदि सप्तमे स्थितस्तस्मिंस्त्रियामापतिनान्वितः खलः ॥
क्रिये भृगुश्चेत्तरणिस्तनौ भवेत्स्वसद्मनि स्त्रीजनहेतुना मृतिः ॥ ९ ॥

वंशस्थ० ॥ चन्द्रमासे युक्त पापग्रह कन्याराशिका सप्तममें हो मेषमें शुक्र लग्नमें सूर्य हो तो अपने गृहमें स्त्रीजनोंके निमित्तसे मृत्यु होवे ॥ ९ ॥

खे तुर्येऽस्ते सौरिभूम्यात्मजार्कै मृत्युः शस्त्राग्निक्ष्मापालकोपात् ॥
द्रव्ये तुर्ये कर्मभावेऽर्कपुत्रे चन्द्रे क्ष्माजे स्याद्व्रणैः कीटकाद्यैः ॥ १० ॥

शालिनी० ॥ दशम स्थानमें शनि चौथा मंगल सप्तम सूर्य हो तो खड्गादिसे वा अग्निसे वा राजाके क्रोधसे मृत्यु होवे, द्वितीय स्थानमें शनि चौथा चन्द्रमा दशम मंगल हो तो कृमियोंके व्रणोंसे मृत्यु होवे ॥ १० ॥

मेषूरणे च तरणी रसातलगतः कुजः ॥
यदि जन्मनि जायेत वाहनात्पतितस्य तत् ॥ ११ ॥

अनुष्टुप्० ॥ जो जन्मसमय दशम सूर्य चतुर्थ मंगल हो तो सवारीसे गिरके मरे ॥ ११ ॥

वीर्याढ्येन कुजेन च दृष्टे क्षीणेन्दौ निधनेऽर्कसुते च ॥
गुह्योद्भूतरुजा च मृतिर्वा शस्त्राद्वा कृमितोऽथ च दाहात् ॥ १२ ॥

रथोद्धता० ॥ जो क्षीणचन्द्रमाको बलवान् मंगल देखे अष्टम शनि हो तो गुह्यस्थानके रोग बवासीर भगन्दरादिसे वा खङ्गादि शस्त्रसे वा कृमि पडनेसे वा अग्निके हेतुसे मृत्यु होवे ॥ १२ ॥

द्यूनगौ यदि सूर्यभूमिजौ निधने सद्मनि भास्करात्मजः ॥
विकले शशिनि स्थिरातले निधनं तस्य वदेद्विहंगमात् ॥ १३ ॥

वैतालिय० ॥ जो सूर्य मंगल सप्तम हों शनि अष्टम और क्षीणचन्द्रमा चतुर्थ हो तो पक्षीके हेतुसे मनुष्यकी मृत्यु होवे ॥ १३ ॥

लग्ने रवौ पंचमगे कुजे च मृत्यौ शनौ धर्मगते शशांके ॥
कुड्यप्रपाताच्छिखरप्रपाताद्वधो भवेद्वाऽथ च वज्रपातात् ॥१४॥

उपजाति० ॥ जो लग्नमें सूर्य पंचम मंगल अष्टम शनि नवम चन्द्रमा हो तो भित्ति (दिवाल) से वा पर्वतके शृंगसे गिरके वा दबके वा वज्रके गिरनेसे मृत्यु होवे ॥ १४ ॥

न चेन्निधनभं ग्रहैर्भवति संयुतं वीक्षितं न वा निधनकारको
भवति कोऽपि योगस्तदा ॥ बली द्विभुजसंख्यकोद्भवदृकाण-
नाथोऽथवा विनाशगृहनायको निजगुणैर्मृतिं यच्छति ॥ १५ ॥

पृथ्वीवृ० ॥ जो अष्टमस्थानमें कोई ग्रह न हो और कोई ग्रह अष्टमको देखताभी न हो अथवा मृत्युका करनेवाला कोई योगभी न हो तो जन्मलग्न द्रेष्काणसे बाईसवां द्रेष्काणका स्वामी अथवा अष्टमस्थानका स्वामी इन दोनों-मेंसे जो बलवान् हो वह अपने अग्नि जलप्रभृति पूर्वोक्त गुणोंसे मृत्यु देता है। प्रत्येक राशिके तीन द्रेष्काण होते हैं जन्मसमयके द्रेष्काणसे गिनती किया तो बाईसवां द्रेष्काण लग्नसे अष्टम राशिमें होता है जैसा लग्नका प्रथम द्रेष्काण हो

तो अष्टमस्थानकी राशिकाभी प्रथम द्रेष्काण, लग्नका दूसरा द्रेष्काण हो तो अष्टमस्थानकी राशिकाभी दूसरा द्रेष्काण, लग्नका तीसरा द्रेष्काण हो० तो अष्टमस्थानकी राशिकाभी तीसरा द्रेष्काण बाईसवां द्रेष्काण होता है ॥ १५ ॥

लग्नांशाधिपतिः क्रिये भवति चेन्नाशोऽजचारे स्थले ।
गोचारे वृषभे गृहे च मिथुने कीटे जलीयस्थले ॥
सिंहे चेद्विपिने स्त्रियां च भुवने जूके तु पुण्येऽष्टमे ।
श्वभ्रेऽश्वे हयसंचरेऽत्यमकरे तोये घटे सद्मनि ॥ १६ ॥

शार्दूल० ॥ जन्मलग्नका जो तात्काल नवांश हो उसका स्वामी जिस राशिमें हो उस राशिके तुल्य भूमिमें मृत्यु कहना, जैसा लग्न नवांशका स्वामी मेषमें हो तो भेड बकरीके संचारस्थानमें, वृषमें हो तो गोवृषभके स्थानमें, मिथुनमें हो तो घरमें, कर्कमें हो तो जलाईस्थलमें, सिंहमें हो तो वनमें, कन्यामें हो तो जलमें, तुलामें हो तो दूकानमें, वृश्चिकमें हो तो छिद्रादिस्थानमें, धनुमें हो तो घोडेके स्थानमें, मीन और मकरमें हों तो जलमें, कुंभमें हो तो घरमें मृत्यु होती है ॥ १६ ॥

जूके कुजेऽजेऽर्कसुतेऽर्कजर्क्षे विधौ पुरीषाद्यशुचिस्थले तत् ॥
नक्रर्क्षगे क्षीणविधौ स्मरेऽर्के कर्के कुजे स्यान्निधनं तथैव॥ १७॥

उपजाति० ॥ तुलामें मंगल मेषमें शनि कुंभ मीनमें चन्द्रमा अथवा मकरमें क्षीणचन्द्रमा सप्तम सूर्य कर्कमें मंगल हो तो विष्ठाप्रभृतिके अपवित्र स्थानमें मृत्यु होवे (बृहज्जातकमें तो केवल स्थान लिये हैं ' यातैर्वा गलितेन्दुसूर्यरुधिरैर्व्योमास्तबन्ध्वाह्वयानिति ' इसका अर्थ-क्षीणचन्द्रमा दशम, सूर्य सप्तम, कुज चतुर्थ हो तो विष्ठादिके मलिनस्थानमें मृत्यु होवे) ॥ १७ ॥

सूर्येन्द्वोर्वीर्ययुक्तश्चेद्द्रेष्काणेशोक्तलोकतः ॥
समागतो जातकोऽयं पृथ्व्यामिति वदेद्बुधः ॥ १८ ॥

अनुष्टुप्० ॥ सूर्यचन्द्रमामेंसे जो बलवान् हो और वह द्रेष्काणमें जिस-

राशिका हो उसके स्वामीके उक्त लोकसे यह जातक पृथ्वीमें आया है जन्मलग्नादिका विचार कर इस तरह कहे ॥ १८ ॥

अव्ययं सुरगुरौ कलयंति रात्रिनाथसितयोः पितृलोकम् ॥
भास्कराक्षितिजयोः खलु तिर्यक् सौरचन्द्रसुतयोर्नरकं च ॥ १९ ॥

स्वागता० ॥ बृहस्पतिके ९।१२ द्रेष्काणमें हों तो देवलोकसे (अर्थात्) पहिले देवलोकमें था, चन्द्रमा वा शुक्रके ४।२।७ द्रेष्काणमें हो तो पितृलोकसे, सूर्य वा मंगलके ५।१।८ द्रेष्काणमें हो तो तिर्यक्लोकसे, शनि वा बुधके १०।११।३।६ द्रेष्काणमें हो तो निश्चय नरकसे यह जातक आयाहै॥ १९॥

षष्ठाष्टसप्तमसवीर्यखगोक्तलोके वा वैरिरन्ध्रसबलस्य दृकाणपस्य ॥
गंतव्यमत्र मृतकेन नरेण सत्यंसत्यादयो ग्रहविदो हि वदंति संतः२०

वसन्ततिलका० ॥ छठे सातवें स्थानमें जो ग्रह बली हो उसका जो उक्त लोक है वही मरनेमेंभी मिलेगा वा षष्ठाष्टम द्रेष्काणमें जौन राशि हों उनके जो स्वामी हैं उन दोनोंमें जो बलवान् हो उसके उक्त लोकमें सत्य मृतक मनुष्यको जानाहै सत्याचार्यप्रभृति सज्जन ज्योतिर्विद् निश्चय कहते हैं ॥ २० ॥

रिपुनिधनगृहस्थे स्वोच्चगे देवपूज्ये झषभतनुगते वा सन्नवांशे स्थिते च ॥ भवति मनुजमुक्तिश्चोद्विर्याश्च शेषा जनिसमयवदेव स्याद्गतिर्मृत्युकाले ॥ २१ ॥

इति श्रीजयदेवकृतायां जातकचन्द्रिकायां निर्याणा ध्यायो द्वादशः ॥ १२॥

मालिनी० ॥ कर्कका बृहस्पति छठे आठवें स्थानमें हो (बृहज्जातकमें जो केन्द्रभी लिया है ' गुरुरथ रिपुकेन्द्रच्छिद्रगः स्वोच्चसंस्थः' इसका अर्थ--कर्कका बृहस्पति ६।८ स्थानमें अथवा केन्द्र १।४।७।१० मेंभी हों तो) अथवा जो मीन लग्नमें शुभग्रहके नवांशका बृहस्पति हो और ग्रह बलहीन हों तो जन्मसमयके समान मृत्युसमयमेंभी मनुष्यकी गति अर्थात् मोक्षगति होवे मृतककी गति किस लोकको हुई यह विचार मृत्युकालके लग्नादिसे करना ॥ २१ ॥

इति श्रीकेशवानन्दविरचितायां जातकचन्द्रिकाभाषायां निर्याणाध्यायो द्वादशः ॥ १२॥

पित्तामाक्षिशिरोव्यथा खररुचौ दुष्टेऽथ चन्द्रेऽनिल- ।
प्राधान्यं कफवातमेहजरुजा भीतिस्ततो भूमिजे ॥
पित्तासृग्व्रणभीरथो शशिसुते त्रैदोषमोहादयो ।
रोगा अप्यथ देवमन्त्रिणि कफच्छर्दी ज्वरार्तिर्भवेत् ॥ १ ॥

शार्दूलवि० ॥ अनिष्टाध्याय कहते हैं । दुष्ट सूर्य हो तो पित्त आमसहित नेत्र शिरमें पीडा होवे, दुष्ट चंद्रमा हो तो वाताधिक्य और कफवात प्रमेह रोगका भय होवे, दुष्ट मंगल हो तो पित्ताधिक्य रुधिरविकार चिह्नक्षय होवे, दुष्ट बुध हो तो पित्त वात कफ और मोहकारक रोग होवे, दुष्ट बृहस्पति हो तो कफ छर्दी ज्वरका दुःख होवे ॥ १ ॥

दैत्येज्ये कफवातमेहजरुजा स्त्रीसंगमादुद्भवे- ।
दार्कौ श्वासरुजानिलोदरजरुग्भीरस्ति गुह्ये व्यथा ॥
राहौ सर्पजलाद्भयं कटितटे पीडा विषूच्या भयं ।
केतौ भूतपिशाचभीर्विकलता सर्वत्र खेटस्थितौ ॥ २ ॥

शार्दूलवि० ॥ दुष्ट शुक्र हो तो स्त्रीसंगसे कफ वात प्रमेह रोग होवे, दुष्ट शनि हो तो श्वासरोग वातसे उदरपीडा भय गुह्यस्थानमें पीडा होवे, दुष्ट राहु हो तो सर्पजलसे भय कमरमें पीडा विषूचिकासे भय होवे, दुष्ट केतु हो तो भूत पिशाचोंकरके व्याकुल होवे ग्रहकी स्थितिमें सब जगह ऐसाही कहना ॥ २ ॥

लग्नाचन्द्रात्पुत्रकलत्रे स्वेशायुक्ते वा तदद्दष्टे ॥
पुत्रापायः स्त्रीनिधनं स्यात्तद्वत्सर्वेष्वेव गृहेषु ॥ ३ ॥

मत्तमयूर० ॥ स्त्रीसुतनाशयोग कहते हैं । लग्नसे अथवा चन्द्रमासे पञ्चमस्थान अपने स्वामीसे युक्त अथवा दृष्ट न हो तो पुत्रनाश होवे, इस तरह सप्तमस्थान हो तो स्त्री नाश होवे और भावोंकाभी योंही क्रम समझना अर्थात् जो भाव अपने स्वामीसे युक्त वा दृष्ट हो उस भावकी वृद्धि होती है ॥ ३ ॥

कन्या लग्ने तत्र चेद्रासरेशो मीने मन्दे कामिनी मृत्युमेति ॥
पुत्रस्थाने संस्थितश्चेन्महीजः पुत्रापायो जायते जीवितस्य ॥४ ॥

शालिनी० ॥ फिर स्त्रीसुतनाशयोग कहते हैं । जो लग्नमें कन्याका सूर्य और मीनका शनि हो तो स्त्री मृत्यु पाती है, लग्नमें कन्याका सूर्य और पंचम मंगल हो तो मनुष्यका पुत्र नाश होता है ॥ ४ ॥

शुक्रात्सुखाष्टमगतेषु खलग्रहेषु मध्यस्थिते भृगुसुते खलखेटयोर्वा ॥
सौम्याभिधैर्गगनगैरयुगीक्षिते च योषावधो भवति वह्निनिपातपाशात्५

वसंतति० ॥ जो शुक्रसे चतुर्थ अष्टम स्थानमें पापग्रह हो तो अग्निसे स्त्रीनाश होवे शुक्र पापग्रह संयुक्त हो वा पापग्रहोंके बीचमें हो तो गिरनेसे स्त्रीनाश होवे, शुक्र शुभग्रहसे संयुक्त न हो और शुभग्रह देखेभी नहीं तो रस्सीसे स्त्रीनाश होवे अर्थात् स्त्री फांसीसे अपनेको मारेगी ॥ ५ ॥

लग्नात्षडान्त्यगतयो रविचन्द्रयोश्च काणो भवेद्वनितया सह मानवोऽसौ ॥ जायाश्रितौ सुकृतधीभवनाश्रितौ वा दैत्येज्यवासरकरौ मनुजः कुभार्यः ॥ ६ ॥

मधुमाधवी० ॥ काणहीनांग योग कहते हैं । जिसका जन्म लग्नसे षष्ठ सूर्य द्वादश चन्द्रमा हो तो वह मनुष्य स्त्रीके साथ अन्धा होवे अर्थात् स्त्री पुरुष दोनों अन्धे होवें, शुक्र सूर्य दोनों साथही सप्तममें वा नवममें वा पंचममें हों तो उस पुरुषकी भार्या हीनांगी होती है ॥ ६ ॥

तनुभवनगतार्कौ कौर्प्यकर्कान्त्यभांत्यांशकगतभृगुपुत्रे चेत्सुतर्क्षे त्वनिष्टम् ॥ मृतपतिवनितेशः स्यात्स्मरांत्याङ्गपापैर्विकलशशिनि धीस्थे व्यङ्गतो व्यात्मजो वा ॥ ७ ॥

मालिनी० ॥ वन्ध्यापति योग सुतकलत्राभावयोग कहते हैं । जो लग्नमें शनि हो वृश्चिक कर्क मीन इनमेंसे किसीके नवांशमें शुक्र हो और पचममें पापग्रह हो तो वह पुरुष विधवा (रण्डा) स्त्रीका पति होवे, सप्तम द्वादश लग्नमें पापग्रह हों क्षीणचन्द्रमा पंचममें हो तो पुरुष भार्याहीन वा पुत्रहीन होवे॥७॥

शनिकुजर्क्षवधूभवने भृगौ परवधूपरतस्तदवेक्षिते ॥
कुजशनैश्चरयुक् शशलाञ्छने वनितया हि तया सह पुंश्चलः॥८॥

द्रुतविलंबि० ॥ परस्त्रीगमनादि योग कहते हैं । लग्नसे मकर कुंभ मेष वृश्चिक इनमेंसे किसी राशिका सप्तम शुक्र हो और उसको शनि वा कुज देखता हो तो वह पुरुष परस्त्रीगामी होवे, मकर कुंभ मेष वृश्चिक इनमेंसे किसी राशिका सप्तम शुक्र और कुज शनियुक्त चन्द्रमा देखे तो निश्चय है स्त्रीके साथ पुरुष व्यभिचारी होवे अर्थात् पुरुष परस्त्रीमें आसक्त रहे और उसकी स्त्री परपुरुषोंमें आसक्त रहे ॥ ८ ॥

ससितेन्दुतोऽस्तभवनार्किकुजौ विसुतोऽथवा विवनितो मनुजः॥
नरयोषिदृक्षगकुजार्कसुतौ यदि वार्द्धके लभति वृद्धवधूम् ॥९॥

प्रमिताक्षरा० ॥ पुत्रहीनादि योग कहते हैं । जिसके शुक्र चन्द्रमा एक राशिमें हों और इनसे सप्तम शनि मंगल हों तो वह पुरुष पुत्रहीन अथवा स्त्रीहीन होवे, पुरुष स्त्री संज्ञक दो ग्रह एक राशिमें हों और इनसे सप्तम शनि मंगल हों तो पुरुष वृद्धावस्थामें वृद्धस्त्रीको पाता है ॥ ९ ॥

वंशच्छेत्ता कर्ममित्रास्तसंस्थैर्नक्षत्रेशक्रूरकाव्यैर्भवेत्सः ॥
शिल्पी लग्नत्र्यंशयुक्तेन्दुपुत्रे केन्द्रस्थेनादित्यपुत्रेण दृष्टे ॥ १० ॥

शालिनी० ॥ वंशनाश चित्रकारयोग कहते हैं । जिसका दशम चन्द्रमा चतुर्थ पापग्रह सप्तम शुक्र हो वह पुरुष वंशका नाश करनेवाला दुर्योधन जैसा होवे, जिस राशिके द्रेष्काणमें बुध हो वह राशि केन्द्रके शनिसे देखी जाय तो चित्रकारप्रभृति कारीगिरीके कामोंको करनेवाला होवे ॥ १० ॥

दास्यां जातो रिःफगे सौरिभागे दैत्याचार्ये प्राहुरित्येवमार्याः ॥
चन्द्रार्कौ चेल्लग्नतः सप्तमस्थौ मार्तण्डीयालोकिते शिल्पकर्मा ११

शालिनी० ॥ दासीजन्म चित्रादियोग कहते हैं । शनिके नवांशमें शुक्र द्वादश हो तो दासीसे पैदा होवे, इसही तरह आचार्य कहते हैं । लग्नसे सप्तम चन्द्रमा सूर्य हों और शनिकी दृष्टि उनपर हो तो चित्रकारादि कारीगिरी कामोंका करनेवाला होवे ॥ ११ ॥

पापेक्षितौ भृगुजभूमिसुतौ भवेतां चेदस्तगौ च मनुजोऽनिल-
रोगभाक् स्यात् ॥ कर्कांशके शशिनि वृश्चिकभांशके वा क्रूरे-
क्षिते भवति गुह्यरुजार्तिमांश्च ॥ १२ ॥

उद्धर्षिणी० ॥ वातरोग गुप्तरोगज्ञान कहते हैं। जो सप्तममें शनि मंगल हों और इनको पापग्रह देखें तो पुरुष वातरोगी होवे, कर्क नवांशमें वा वृश्चिक नवांशमें शनि हो और क्रूरग्रह देखे तो पुरुष गुप्तरोगसे दुःखी होवे ॥ १२ ॥

चेत्स्वांत्यगौ क्षितिजसूर्यसुतौ तनुस्थे चन्द्रेऽस्तगे दिनमणौ
खलु शिल्पकर्मा ॥ कर्मस्थिते शशिनि सप्तमगे धराजे वेशि-
स्थितेऽर्कतनये मनुजोऽङ्गहीनः ॥ १३ ॥

वसन्ततिलका० ॥ जो द्वितीय द्वादशमें मंगल शनि हो लग्नमें चन्द्रमा सप्तम सूर्य हो तो निश्चय शिल्पकाम करनेवाला हो, (बृहज्जातकमें तो ऐसा योग श्वेतकुष्ठीका लिखा है--श्वित्री रिःफधनस्थयोरशुभयोश्चन्द्रोदयेऽस्ते रवौ) दशम चन्द्रमा सप्तम मंगल सूर्यसे द्वितीय शनि हो तो पुरुष अंगहीन होवे ॥ १३ ॥

गुल्मश्वासकविद्रधिक्षयरुजासंपीडितोऽन्तस्थिते।
रात्रीशे खलखेटयोर्यदि भवेज्जामित्रगो भास्करः ॥
अन्योन्यांशगृहस्थयोर्हिममयूखादित्ययोः प्लीहभाक्।
तौ चेदेकगृहस्थितावपि तथा जातः कृशांगोऽथवा ॥ १४ ॥

शार्दूलवि० ॥ और योग कहते हैं। शनि मंगलके बीचमें चन्द्रमा हो और सप्तम सूर्य हो तो कुक्षिमें मांसपिण्ड (पल्ली) श्वास व्रणविशेष धातुक्षीण इन रोगोंसे दुःखी होवे, कर्कमें सूर्य सिंहमें चन्द्रमा अथवा कर्कनवांशमें सूर्य सिंह नवांशमें चन्द्रमा हो तो कुक्षिमें मांसपिण्ड अर्थात् पल्ली हो, सूर्य चन्द्रमा साथही सिंहराशि वा सिंहनवांशमें हों अथवा कर्कराशि वा कर्क नवांशमें हों तौभी कुक्षिमें मांसपिण्ड हो, अथवा दुर्बल शरीर होवे ॥ १४ ॥

धन्विस्थे च तदंशके हिमकरे भौमेन वा सौरिणा।
युक्ते वा समवीक्षिते च मनुजः कुष्ठी भवेन्निश्चितम् ॥

चन्द्रे वा क्रियकर्कनक्रपृथुरोमांशस्थिते सौरिणा ।
वा भौमेन युगीक्षितेऽपि च तथा कुष्ठी सकष्टी भवेत् ॥१५॥

शार्दूल० ॥ और योग कहते हैं। धनुराशिमें वा धनुर्नवांशमें चन्द्रमा हो भौमसे वा शनिसे युक्त हो अथवा दृष्ट हो तो निश्चय मनुष्य कुष्ठी होवे, मेष कर्क मकर मीन इनमेंसे किसी नवांशमें चन्द्रमा हो और वह शनिसे वा मंगलसे युक्त हो अथवा दृष्ट हो तौभी कुष्ठी कष्टसहित होवे ॥१५॥

धीधर्मस्थैः कर्कनक्रालिमीनैर्मंदक्ष्माजार्कैर्युतैर्वीक्षितैर्वा ॥
कुष्ठाङ्गः स्याद्वा व्रणैः स्फोटकाद्यैर्युक्ताङ्गो वा जातको हीनकर्मा १६॥

शालिनी० ॥ और योग कहते हैं। पञ्चम नवमस्थानमें कर्क मकर वृश्चिक मीनका चन्द्रमा हो और शनि मंगल सूर्य इनमेंसे किसीसे संयुक्त हो वा दृष्ट हो तो कुष्ठी हो, अथवा उक्त योगोंमेंसे चन्द्रमा शुभ दृष्ट हो तो व्रणविस्फोटकादिसे युक्त होवे अथवा कुलानुचित कर्म करनेवाला होवे ॥ १६ ॥

धने कुजोऽरिगो विधुर्व्यये शनिर्मृतौ रविः ॥
यदा तदा भवेन्नृणामवश्यमन्धता सदा ॥ १७ ॥

नगस्वरूपि० ॥ और योग कहते हैं। जो द्वितीय मंगल षष्ठ चन्द्रमा द्वादश शनि अष्टम सूर्य हो तो निश्चय पुरुषोंको सदा अंधता अर्थात् दृष्टिहीनता होवे ॥ १७ ॥

नवमधीसहजायगताः खला यदि शुभैः खचरैरयुगीक्षिताः ॥
नियमतो बधिरत्वकरा नृणां रदविकारकराः स्मरगास्तथा ॥१८॥

द्रुतविलम्बि० ॥ कर्णदन्तरोग कहते हैं। नवम पंचम तृतीय एकादश स्थानोंमें पापग्रह मंगल चन्द्रमा शनि सूर्य हों और शुभग्रहोंसे युक्त अथवा दृष्ट न हों तो उनमेंसे जो बलवान् हो उसके 'सूर्ये पित्तः श्लेष्मवातौ हिमांशावित्यादि' पूर्वोक्त धातुके विकारसे बहिरा होवे अर्थात् कान फूट जावे, और जो पापग्रह मंगल चन्द्रमा शनि सूर्य सप्तममें हों और शुभग्रहोंसे युक्त अथवा दृष्ट न हों तो दांतोंका रोग होवे इसमेंभी बलवान् ग्रहके धातुके विकारसे दन्तरोगोत्पत्ति कहना ॥ १८ ॥

सोपरागिणि विधौ तनुस्थिते लग्नतो नवमपञ्चमस्थयोः ॥
सूर्यजावनिजयोः पिशाचता चन्द्रवद्दिनमणौ विनेत्रता ॥ १९ ॥

रथोद्धता० ॥ राहुग्रस्त चन्द्रमा लग्नमें हो और लग्नसे नवम पंचम शनि मंगल हो तो शरीरमें पिशाच लगा होवे, राहुग्रस्तसूर्य लग्नमें हो और लग्नसे नवम पंचम शनि मंगल हों तो मनुष्य अन्धा होवे ॥ १९ ॥

वातव्याततनुर्भवेन्मदनगे मंदेन युक्ते गुरौ सोन्मादस्तनुगे गुरौ स्मरगृहे याते महीनंदने ॥ तद्वत्स्यात्तनुगेऽर्कजेऽवनिसुते धीधर्म-जामित्रगे क्षीणेंदौ सह भानुनांत्यभवने ह्युन्मादिनं वा वदेत् ॥२०॥

शार्दूल० ॥ बावलायोग कहते हैं । शनिसे युक्त बृहस्पति सप्तममें हो तो वातसे व्याप्त शरीर होवे, लग्नमें बृहस्पति सप्तम मंगल हो तो उन्मत्त अर्थात् बावला होवे, लग्नमें शनि पंचम नवम वा सप्तम मंगल हो अथवा द्वादशमें सूर्य युक्त क्षीणचन्द्रमा हो तो बावला होवे ॥ २० ॥

धीधर्मगे दिनमणौ खलखेटदृष्टे जातो भवेद्दृढलोचनवान-सत्यः ॥ मार्त्तण्डवत्क्षितिसुतेऽवयवेन हीनश्चैतादृशेऽर्कतनये मनुजोऽतिरोगी ॥ २१ ॥

वसन्ततिलका० ॥ पंचम नवम सूर्यमें पापग्रहकी दृष्टि हो तो अन्धा और झूंठ बोलनेवाला होवे, पंचम नवम मंगलमें पापग्रहदृष्टि हो तो अंगहीन होवे पञ्चम नवम शनिमें पापग्रहकी दृष्टि हो तो मनुष्य बहुत रोगी होवे ॥ २१ ॥

त्रिभिः कुजयमादित्यैः कर्मस्थानसमाश्रितैः ॥
प्रेष्यो भवति जातोऽसौ नियमेन वदेद्बुधः ॥ २२॥

अनुष्टुप्० ॥ मंगल शनि सूर्य तीनों दशमस्थानमें हों तो यह जातक दास अर्थात् नौकर होवे, पण्डित इस नियमसे कहे कि इनमेंसे दशममें एक ग्रह हो तो श्रेष्ठ नौकरी, दो ग्रह हों तो मध्यम नौकरी, तीन ग्रह हों तो निन्दित नौकरीको पुरुष करता है ॥ २२ ॥

बुधर्क्षे कर्मभावस्थो भौमसौम्यसितैर्युतः ॥
सिंहिकातनयश्चेत्स्यात्क्षणे वृद्धिः क्षणे क्षयः ॥ २३ ॥

अनुष्टुप्० ॥ जो मिथुनकन्याका दशमस्थानमें राहु हो और मंगल बुध शुक्र इनमेंसे किसीसे संयुक्त हो तो पुरुष क्षणमें धनी क्षणमें दरिद्री होवे॥ २३॥

द्वितियस्थानगे भौमे सौरिणा सह संयुते ॥
सहजे सिंहिकासूनौ सहोदरमृतिं वदेत् ॥ २४ ॥

अनुष्टुप्० ॥ शनिसे संयुक्त द्वितीय स्थानमें मंगल हो तृतीयस्थानमें राहु हो तो सहोदर भाईका मृत्यु कहना ॥ २४ ॥

वैरिवेश्मनि भौमश्चेत्सप्तमे सिंहिकासुतः ॥
निधने सदने सौरिर्भार्यामरणमादिशेत् ॥ २५ ॥

अनु० ॥ स्त्रीमृत्युयोग कहते हैं । जो षष्ठस्थानमें मंगल सप्तम राहु अष्टम स्थानमें शनि हो तो स्त्रीका मरण कहना ॥ २५ ॥

घटे सौरिः स्त्रियां शुक्रः सिंहे क्ष्मानन्दनोऽपि चेत् ॥
मिथुने सिंहिकासूनुर्मातुर्मरणमादिशेत् ॥ २६ ॥

अनुष्टुप्० ॥ मातृमरणयोग कहते हैं । जो तुलामें शनि, कन्यामें शुक्र, सिंहमें मंगल, मिथुनमें राहु हो तो माताका मरण कहना ॥ २६ ॥

सुखे कर्मणि रिःफे च दुष्टखेटा यदा तदा ॥
मातरं पितरं हन्ति पश्चाद्देशान्तरं व्रजेत् ॥ २७ ॥

अनुष्टुप्०॥ मातृपितुमरण देशान्तरगमनयोग । जो चतुर्थ दशम द्वादशमें पापग्रह हों तो मनुष्य मातापिताको नाश करता है और पश्चात् दूसरे देशको जाता है ॥ २७ ॥

खलाः सर्वेषु केन्द्रेषु धनस्थोऽपि खलग्रहः ॥
दरिद्रो जायते जातः स्वपक्षे दुष्करो भवेत् ॥ २८॥

अनु० ॥ द्रोहियोग । जो केंद्रोंमें पापग्रह हों धनस्थानमेंभी पापग्रह हो तो जातक दरिद्री होता है और अपने हितैषियोंके साथ द्रोह करनेवाला होवे२८॥

त्रिकोणे नीचगोऽर्कश्चेन्निधने यदि भूसुतः ॥
अचिराज्जायते जातो भिक्षाजीवी च दुःखितः ॥ २९ ॥

अनुष्टुप्० ॥ भिक्षाजीवी दुःखीयोग । जो त्रिकोण ९।५ में नीच ७ क सूर्य और अष्टम मंगल हो तो शीघ्रही जातक भिकारी और दुःखितभी होता है ॥ २९ ॥

भावजन्यफलमादिशंति यच्छ्रीवराहमिहिरादिसूरयः ॥
तद्विलुप्य खलु तिष्ठते स्वयं योगजन्यमिह यच्छुभाशुभम् ॥ ३० ॥

इति श्रीजयदेवकृतायां जातकचन्द्रिकायामनिष्टाध्यायस्त्रयोदशः ॥ १३ ॥

रथोद्धता० ॥ श्रीवराहमिहिरप्रभृति कवि जिस भावस्थफलको कहते हैं निश्चय है उस फलको विलोपकरके इसमें योगोंका जो शुभाशुभ फल है वह आपही टिकता है ॥ ३० ॥

इति श्रीकेशवानन्दविरचितायां जातकचन्द्रिकाभाषायामनिष्टाध्यायस्त्रयोदशः ॥ १३ ॥

यद्यप्यत्र तु निश्चयेन कथितं नानाविधं दुष्फलं ।
खेटानां च तथाप्युशन्ति मुनयो नानाप्रतीकारकम् ॥
देवब्राह्मणपूजनेन गुरुवाक्सम्पादनेनान्वहं ।
सत्संगेन हुतेन दानवसुना पुष्टं फलं नो भवेत् ॥ १ ॥

शार्दूलवि० ॥ जोभी इस शास्त्रमें तो निश्चय करकेभी ग्रहोंका नानाप्रकार दुष्टफल कहा है तोभी मुनिलोक नानाप्रकारका उपाय कहते हैं, देवता और ब्राह्मणोंका पूजन करनेसे गुरुजनोंकी आज्ञा पालन करनेसे दिनप्रति सज्जनोंकी संगतिसे हवन करनेसे धनदान देनेसे दुष्ट फल नहीं होता है ॥ १ ॥

कौसुंभमंचलमपीह गुडं सताम्रं माणिक्यहेमकमलं सुरभिः सुवर्णा ॥ गोधूममाज्यमतुषं च मसूरिकान्नं सूर्यस्य तुष्टिदमिदं मुनिभिः प्रणतिम् ॥ २ ॥

वसन्ततिलका० ॥ पीला वस्त्र ताम्रसहित, गुड मणि सुवर्ण कमलपुष्प

अलंकारयुक्त गौ गेहूं घृत त्वक् (छोतर) वर्जित मसूरान्न यह वस्तु अर्थात् इनका दान सूर्यको तुष्ट करता है यों मुनिजनोंने कहा है ॥ २ ॥

आज्यपूर्णकलशं सितवस्त्रं शुक्लकान्तिवृषभं रजतं च ॥
मौक्तिकं च दधि शंखसुवर्णं दुष्टपाककरशीतकराय ॥ ३ ॥

स्वागता० ॥ दुष्टफलकारक चंद्रमाके वास्ते घृतसे भरा हुआ कलश (लोटा) सपेद वस्त्र, सपेद वृषभ, रौप्य (चांदी), मोती, दधि, शंख, सुवर्ण दान करै ॥ ३ ॥

मसूरिकाविद्रुमहेमताम्रमारक्तवस्त्रं करवीरपुष्पम् ॥
गोधूममारक्तवृषं गुडं च दानं प्रदद्यात्कुजतुष्टये च ॥ ४ ॥

उपजाति० ॥ मंगलकी तुष्टताके वास्ते मसूर मूंगा सोना तांबा लालवस्त्र करवीर पुष्प (कनेरका फूल) गेहूं केवल लाल वृषभ गुडभी दान देवे ॥ ४ ॥

आनीलवस्त्रं गुडहेममुद्गं गारुत्मरत्नं करिणो रदं च ॥
दासी च मेषो हरिताभवस्त्रं कांस्यं च रूप्यं कुसुमं बुधाय ॥ ५ ॥

इन्द्रवज्रा० ॥ बुधके वास्ते केवल नीलवस्त्र गुड सोना मूंगा हरिद्वर्णकी मणि हस्तीका दन्त दासी मेंढा (भेड) हरिद्वर्णका वस्त्र कांस्यपात्र चांदी हरित्पुष्प दान देवे ॥ ५ ॥

आपीतधान्यं ससुपीतवस्त्रं सुपुष्पकं शर्करया हरिद्राम् ॥
लसत्तुरंगं लवणं प्रदद्याद्दुष्टस्य तुष्टयै खलु वाक्पतेश्च ॥ ६ ॥

उपजाति० ॥ खोटे बृहस्पतिकी तुष्टिके वास्ते केवल पीला अन्न सुन्दर पीत वस्त्र सुंदर पीतपुष्प शर्करा हलदी दीप्यमान घोडा लवण निश्चयकरके दान देवे ॥ ६ ॥

चित्रं वस्त्रं तण्डुलान्वज्ररत्नं सर्पिः स्वर्णं रूप्यकं रौप्यमश्वम् ॥
गौरांगीं गां वत्सयुक्तां सदुग्धां दद्याच्छांत्यै भार्गवे सत्फलेप्सुः ॥ ७ ॥

शालिनी० ॥ चित्रवस्त्र चांवल वज्रमणि घी सोना चांदी सुपेद घोडा दूध देनेवाली बचेसहित सुपेद गौको शुभफलका चाहनेवाला मनुष्य शुक्रकी शान्तिके वास्ते दान देवे ॥ ७ ॥

महिषीमसिताभमंचलं तिलतैलं तिलमाषमायसम् ॥
सह दक्षिणया कुलत्थकानसितां गामसिते निवेदयेत् ॥ ८ ॥

वियोगिनी० ॥ महिषी (भैंसी) काला वस्त्र तिलोंका तेल उडद लोहा कुलत्थ (गहथ) कृष्णगौ शनिके रुष्ट हुएमें काले विप्रको दान देवे ॥ ८ ॥

तिलपूरितताम्रभाजनं किल गोमेदसुवर्णपन्नगौ ॥
रजतौर्णिकमाषमेषकान् किल दद्यात्तमसोऽतितुष्टये ॥ ९ ॥

वियोगिनी० ॥ तिलोंसे भरा हुआ तामेका पात्र गोमेद सोना पन्ना चांदी ऊन उडद मेंढा (भेड) राहुकी तुष्टिके वास्ते निश्चय दान देवे ॥ ९ ॥

वैडूर्यरत्नं तिलतैलकं च तिलैर्युतोर्णा मृगनाभिकापि ॥
गोधूममन्नं लवणेन युक्तं छागोऽपि केतोः प्रवदन्ति संतः ॥ १० ॥

उपजाति० ॥ वैडूर्यमणि तिलोंका तेल तिल ऊन कस्तूरी गेहूं लवण बकरा केतुकी तुष्टिके वास्ते दान देवे ऐसा आचार्य कहते हैं ॥ १० ॥

" रवेः सप्त सहस्राणि चन्द्रस्यैकादशैव तु ॥
भौमे दशसहस्राणि बुधे चाष्टसहस्रकम् ॥ १ ॥

एकोनविंशतिर्जीवे शुक्र एकादशैव तु ॥
त्रयोविंशति मन्दे च राहोरष्टादशैव तु ॥
केतौ सप्त सहस्राणि जपसंख्या प्रकीर्तिता ॥ २ ॥

इति श्रीजयदेवकृतायां जातकचन्द्रिकायां ग्रहदानाध्यायश्चतुर्दशः ॥ १४ ॥

अनुष्टुप्० ॥ सूर्यादि ग्रहोंकी जपसंख्या कहते हैं । सूर्यकी सात हजार, चन्द्रमाकी ग्यारह हजार, मंगलकी दश हजार, बुधकी आठ हजार, बृहस्पतिकी उन्नीस हजार, शुक्रकी ग्यारह हजार, शनिकी तेईस हजार, राहुकी अठारह हजार, केतुकी सात हजार जपसंख्या कही है ॥ १ ॥ २ ॥ "

इति श्रीकेशवानन्दविरचितायां जातकचन्द्रिकाभाषायां ग्रहदानाध्यायश्चतुर्दशः ॥ १४ ॥

आधानकालोऽप्यथ जन्मकालो न ज्ञायते यस्य नरस्य नूनम् ॥
प्रसूतिकालं प्रवदन्ति तस्य नष्टाभिधानादपि जातकाच्च ॥ १ ॥

उपजाति० ॥ नष्टजातकाध्याय कहते हैं। जिस पुरुषका आधानकाल अथवा जन्मकालभी न जाना जाय उसका नष्टनामके जातकसे प्रसूतिसमय कहते हैं ॥ १ ॥

तज्जातकं येन शुभाशुभाप्तिर्जातस्य जन्तोर्जननोपकालात् ॥
तस्मिन्प्रणष्टे सति जन्मकालो येनोच्यते नष्टकजातकं तत् ॥ २॥

इन्द्रवज्रा० ॥ जिसकरके जन्मसमयसे पैदा हुए प्राणीकी शुभाशुभ फलकी प्राप्ति होती है उसको जातक कहते हैं, उसके नष्ट होनेपर जिसकरके जन्मसमय कहा जाता है उसको नष्टजातक कहते हैं ॥ २ ॥

मेषादितः प्रश्नविलग्नलिप्ताः कार्याः क्रमात्ता मुनिभिः खचंद्रैः ॥
गजैश्च वेदैर्दशभिश्च बाणैः शैलैर्भुजङ्गैः खचरैः शरैश्च ॥ ३ ॥
शिवैः पतङ्गैर्निहताः पुनस्ता विलग्नगाश्चेद्भृगुभौमजीवाः ॥
तदा तुरङ्गैः करिभिः खचंद्रैर्गुण्याः शरैरन्यखगा यदि स्युः ॥४ ॥

उपजाति० ॥ प्रश्नसमयमें मेषादि जो लग्न हो उस लग्नकी राशिको तीससे गुणकर अंश जोडके साठसे गुणके कला जोडना, जोडके जो अंक हुआ उसको लिप्तापिंड कहते हैं उस लिप्तापिंडको अपने गुणकसे गुणना। गुणांक कहते हैं प्रश्नलग्न मेष हो तो सातसे गुणना, वृष हो तो दशसे, मिथुन हो तो आठसे, कर्क हो तो चारसे, सिंह हो तो दशसे, कन्या हो तो पांचसे, तुला हो तो सातसे, वृश्चिक हो तो आठसे, धनु हो तो नवसे, मकर हो तो पांचसे, कुंभ हो तो ग्यारहसे, मीन हो तो बारहसे गुणना गुणकर जो हो उसका नाम गुणनफल हुआ तब जो कोई ग्रह लग्नमें हो तो गुणनफलको फिर उस ग्रहके गुणकसे गुणना, ग्रहोंके गुणक यह हैं प्रश्नलग्नमें शुक्र हो तो इस गुणनफलको सातसे गुणना, मंगल हो तो आठसे, बृहस्पति हो तो दशसे, सूर्य चन्द्रमा बुध शनि इनमेंसे कोई लग्नमें हो तो पांचसे गुणना ॥ ३ ॥ ४ ॥

ग्रहद्वयं वा बहवो विलग्ने तदा तदीयैर्गुणकैश्च गुण्याः ॥
एवं कृते कर्म विधाय योग्यो राशिः पृथक्स्थः परिरक्षणीयः ॥५॥

उपजाति० ॥ दो ग्रह वा बहुत ग्रह लग्नमें हों तो अपने अपने गुणकोंसे एक एक वार गुणनफलको गुण देना तब जितना हो उस राशिको पृथक् रख देना इसका नाम कर्मविधानराशि हुआ ॥ ५ ॥

पृथक्स्थराशिर्मुनिभिर्विनिघ्नस्त्वाद्ये दृकाणे नवयुग् द्वितीये ॥
यथास्थितोऽयं नववर्जितोऽन्त्ये भसंज्ञयातो ह्यवशेषमृक्षम् ॥ ६ ॥

उपजाति० ॥ आगे जन्मनक्षत्र निकालनेकी परिपाटी कहते हैं । पृथक् राशिको अर्थात् कर्मविधान राशिको सातसे गुणना, गुणकर जो हो उसमें प्रश्नलग्नका प्रथम द्रेष्काण अर्थात् प्रश्नलग्न दश अंशके भीतर हो तो नव जोडना, दूसरा द्रेष्काण अर्थात् ग्यारह अंशके उपरान्त बीस अंशतक हो तो नव जोडनाभी नहीं घटानाभी नहीं, तीसरा द्रेष्काण अर्थात् प्रश्नलग्न इक्कीस अंश ऊपर तीस अंशतक हो तो नव घटाय देना, ऐसे कर्म करनेसे जो अंक हो उसमें सत्ताईसका भाग देकर जो बाकी रहे उस संख्याको अश्विन्यादिसे गुणकर जो नक्षत्र हो वह पृच्छकका जन्मनक्षत्र जानना ॥ ६ ॥

स्त्रीपुत्रमित्रादिनिमित्तकं चेत्पृच्छाविलग्नं त्वृतुभिश्च वेदैः ॥
त्रिभिः शरैर्युक्तमनुक्रमेण ततो विलग्नस्य कला विधेयाः ॥ ७ ॥

उपजाति० ॥ स्त्री पुत्रमित्रादियोंके जन्मसमय जाननेके निमित्त कहते हैं । स्त्रीके नष्ट जातकके निमित्त प्रश्न हो तो तात्कालिक लग्न स्पष्टकी राशिमें छः राशि जोडना, पुत्रप्रश्नमें चार राशि जोडना, मित्रप्रश्नमें तीन राशि जोडना, शत्रुके नष्टजातकके निमित्त प्रश्नमें पांच राशि जोडना, पिताके नष्टजातकके निमित्त प्रश्नमें नव राशि जोडना, भाईके प्रश्नमें दो राशि जोडना, अंश और कला तात्कालिक लग्नकेही रहे तब राशि अंश कला यह जितना हुआ इसका क्रमसे कला पर्यन्त पिण्ड करना ॥ ७ ॥

लग्नस्य राशेर्गुणकेन गुण्याश्चेत्संभवो लग्नगतग्रहस्य ॥
पुनस्तदीयेन गुणेन गुण्याः प्रागुक्तवद्रं परिवेदितव्यम् ॥ ८ ॥

उपजाति० ॥ तब पिण्डको लग्न राशिके पूर्वोक्त गुणकसे गुणना वह गुणनफल हुआ, लग्न राशिमें कोई ग्रह हो तो उस ग्रहके पूर्वोक्त गुणकसे गुणनफलको गुणे तब नक्षत्रानयनका जो कर्म कहा है उसको करके स्त्री प्रभृतियोंका जन्मनक्षत्र जानना, वर्ष प्रभृति निकालनेकाभी कर्म अग्रोक्त रीतिसे सभीका करना ॥ ८ ॥

दशाहते कर्मविधानराशौ प्राग्वन्नवोनेप्यथवाधिकेऽस्मिन् ॥
खार्केर्हते शेषमिताष्टसंख्यमायुर्गतं तत्खलु पृच्छकस्य ॥ ९ ॥

उपजाति० ॥ कर्मविधान राशिको दशसे गुणा करके उसमें पूर्वोक्त प्रकार द्रेष्काणका विचार कर अर्थात् नव जोड तोड वा न जोड तोड जैसा द्रेष्काण हो करके तीन जगह रखना, एक जगह एक सौ बीसका भाग देना जो बाकी रहे उतने वर्ष पृच्छकके जानने यह निश्चय है ॥ ९ ॥

षड्भिर्विभक्ते ऋतवो भवन्ति शेषाङ्कतुल्या शिशिरादयः स्युः ॥
द्विभाजिते शेषकमेकमग्रं पूर्वापरौ तावृतुजौ च मासौ ॥ १० ॥

उपजाति० ॥ दूसरी जगह छःका भाग देनेसे जो बाकी रहे वह शिशिरादि ऋतु जाननी, तीसरी जगह दोका भाग देनेसे एक बाकी रहे तो जो ऋतु पाई है उसका पहिला महीना जानना शून्य बाकी रहे तो दूसरा महीना जानना १०॥

अष्टाहते कर्मविधानराशौ प्राग्वन्नवोनेऽप्यथवाधिकेऽस्मिन् ॥
द्विभाजिते शेषकमेकमग्रतुल्येऽस्ति पूर्वापरपक्षकौ स्तः ॥ ११ ॥

उपजाति० ॥ कर्मविधानराशिको ८ से गुणकरके उसमें पूर्ववत् द्रकाणका विचार कर अर्थात् प्रश्न प्रथम लग्न द्रेष्काणका हो तो नव जोडना, द्वितीय द्रेष्काणका हो तो न जोडना न घटाना, तीसरे द्रकाणका हो तो नव घटायकरके जो अंक हो उसको दो जगह रखना एक जगह दोसे भाग लेकर एक शेष रहे तौ शुक्ल पक्ष, शून्य शेष रहे तो कृष्णपक्ष जानना ॥ ११ ॥

पञ्चेंदुभक्ते सति शेषतुल्या पक्षे च तस्मिंस्तिथयो भवन्ति ॥
नक्षत्रतिथ्यानयनाय योग्यादहर्गणाद्वारविचारणाऽत्र ॥ १२ ॥

उपजाति० ॥ दूसरी जगह जो रक्खा है उसमें पंदरहसे भाग देकर जो शेष रहे वह प्रतिपदादि तिथि जाननी, नक्षत्र तिथिको लायके इससे योग अहर्गणको बनायकर उससे वार विचारना ॥ १२ ॥

सप्ताहते कर्मविधानराशौ प्राग्वन्नवोनेऽप्यथवाधिकेऽस्मिन् ॥
द्विभाजिते शेषकमेकमात्रं दिवा च रात्रौ जननं तदानीम् ॥ १३

उपजाति० ॥ कर्मविधान राशिको सातसे गुणाकरके उसमें पूर्ववत् दृकाणका विचार कर अर्थात् प्रश्नलग्न प्रथम द्रेष्काणका हो तो नव जोडना, दूसरे द्रेष्काणका हो तो न जोडना, न घटाना, तीसरे दृकाणका हो तो नव घटाना तब जो अंक हो उसमें दोका भाग देकर एक शेष रहै तो दिनका जन्म, शून्य शेष रहै तो रात्रीका जन्म जानना। बृहज्जातकका मत है कि 'नक्षत्रानयनं तथा' उसी अंकमें सताईसका भाग देकर जो शेष रहै वह अश्विन्यादि नक्षत्र जानना १३

पञ्चाहते कर्मविधानराशौ प्राग्वन्नवोनेऽप्यथवाऽधिकेऽस्मिन् ॥
दिनस्य रात्रेरथवा प्रमित्या भक्तेऽवशिष्टं दिनरात्रिनाड्यः ॥ १४ ॥

इति श्रीजयदेवकृतायां जातकचन्द्रिकायां नष्टजातकाध्यायःपञ्चदशः ॥ १५ ॥

उपजाति० ॥ कर्मविधान राशिको पांचसे गुणकर पूर्ववत् द्रेष्काणका विचार करके अर्थात् प्रश्नलग्न प्रथम दृकाणका हो तो नव जोडना, द्वितीय द्रेष्काणका हो तो न जोडना न घटाना, तृतीय दृकाणका हो तो नव घटाकर जो हो उसमें दिनका जन्म हो तो दिनमानसे भाग देकर जो अंक शेष रहे उतना दिन व्यतीत हुएका पृच्छकका जन्म जानना अर्थात् वही जन्मेष्ट समझना रात्रिका जन्म हो तो उसमें रात्रिमान भाग देकर जो शेष रहे उतना व्यतीत हुई रात्रिका जन्म जानना रात्रिगत घटियोंमें दिनमान जोडकर जन्मेष्ट समझना १४

इति श्रीकेशवानंदविरचितायां जातकचन्द्रिकाभाषायां नष्टजातकाध्यायः पञ्चदशः ॥ १५ ॥

इति मया सुखबोधकरैः पदैर्विरचिता खलु जातकचन्द्रिका ॥
परपरिश्रमविद्बुधतोषिता शिशुगणाध्ययनात्प्रथिता भवेत् ॥ १ ॥

द्रुतविलम्बि० ॥ निश्चय है इस तरह मैंने दूसरेके परिश्रमको जाननेवाले पण्डितोंकी तुष्टता करनेवाली सुखसे राशिशीलादि ज्ञानको करनेवाले पदोंकरके रची हुई जातकचन्द्रिका बालकोंके पठनसे ख्यात होवे ॥ १ ॥

अंशायुराद्या विधृता न यन्मया भयादिह ग्रन्थनितांतविस्तृतेः ॥
तदत्र हेतुश्च पुराणदैवविद्वराहलल्लादिकृतेः स्थितिः परा ॥ २ ॥

उपेन्द्र० ॥ ग्रन्थकी अत्यन्त विस्तारताके भयसे मैंने इस जातकचन्द्रिकामें अंशायुः आदि दशोंको नहीं रक्खा है, यहां कारण यहभी है कि पूर्व दैवज्ञ वराह लल्लादियोंके बनाये हुए ग्रन्थोंकी अत्यन्त स्थिति (ख्याति) है ॥ २ ॥

विनिर्मिता बालसुखप्रबोधनप्रयोजनायात्र यदि च्युतिर्भवेत् ॥
विशोधनीयं कृपया मनीषिभिः परोपकारैकलसद्विभूतिभिः ॥ ३ ॥

उपेन्द्रवज्रा० ॥ यह जातकचन्द्रिका मैंने बालकोंको सुखसे राशि शीलादि ज्ञानके प्रयोजनके वास्ते बनाई है इसमें जो कुछ त्रुटी होवे सो पराये उपकारमें विराजमान ऐश्वर्यवाले पण्डितोंने कृपा करके शुद्ध करना ॥ ३ ॥

स्खलत्पदा बालकपोलकल्पिता गम्या न वाचः प्रभवन्ति वा क्वचित् ॥
इतीरिता जातकचंद्रिका मया पूर्वोक्तशास्त्राणि विलोक्य लीलया ॥४॥
श्रीवक्रतुण्डं परिचिन्त्य चेतसा ज्योतिर्विदेयं जयदेवशर्मणा ॥
श्रीमत्प्रदीपे धरणिं प्रशासति शाके द्विशैलाष्टियुते नभस्यके॥५ ॥

इति श्रीजयदेवकृतायां जातकचंद्रिकायां स्वाभिप्रायनिवेदनाध्यायःषोडशः १६॥

उप० उपेन्द्रवंशा युग्ममेतत् ॥ बाल अर्थात् अल्पबुद्धि पुरुषोंके गण्डस्थलोंसे रची हुई विशीर्ण पदोंवाली वाणी कदापि रमणीय नहीं होती है अत एव सोलहसौ बहत्तर १६७२ शाके भाद्रपद महीनेमें श्रीमान् जगद्रक्षक प्रदीपसाह महाराजके वक्त ज्योतिर्विद् मैं जयदेव कविने श्रीगणेशको हृदयमें

स्मरण करके हेलासे पूर्वाचार्योक्त ज्योतिःशास्त्रोंको देख यह जातकचन्द्रिका कथन की ॥ ४ ॥ ५ ॥

इति श्रीकेशवानन्दविरचितायां जातकचन्द्रिकाभाषायां स्वाभिप्रायनिवेदनाध्यायः षोडशः ॥ १६ ॥

इति श्रीकविजयदेवकृतजातकचन्द्रिकायाः सुबोधिनीनाम्नी गढवालाख्यविषयेन केदारखण्डान्तर्गतडवरालस्यूंमण्डलेन तिमलीग्रामवास्तव्येन महाराष्ट्रावतंसेन डवरालजातिश्रीयुतशिवरामात्मजभीमदत्ततनयेन पण्डितकेशवानन्दशर्मणा विरचिता भाषा श्रीनृपतिवीरविक्रमादित्यरचितगुणेष्वङ्काब्जसंवत्सरे इषमासि शुक्लविजयादशमीगुरुदिने समाप्तिमफाणीत् ।



पुस्तक मिलनेका ठिकाना-

गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास,
"लक्ष्मीवेंकटेश्वर" स्टीम् प्रेस,
कल्याण-मुंबई.

खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस,
खेतवाडी-मुंबई.